दलित रंगमंच

सम्पादक

डॉ. कमलाकर गंगावणे

प्रा. त्र्यम्बक महाजन

भूमिका

सूर्यनारायण रणसुभे

कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर

प्रकाशक :
जयकृष्ण अग्रवाल
कृष्णा ब्रदर्स,
महात्मा गाधी मार्ग
अजमेर-305001

मूल्य : चालीस रुपये मात्र

संस्करण :
प्रथम, 1986

मुद्रक :
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर

समर्पण

....उस मानसिकता को जो अज्ञान, दरिद्रता, अंधश्रद्धा, और वर्ण व्यवस्था के बंधनों से मुक्त होने के लिए संघर्षरत है।....

—संपादक द्वय

यह पन्ना

मराठी दलित एकांकियों को हिन्दी के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध कराने में जिन महानुभावों का आत्मीय सहयोग हमें मिला है हम उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की स्वतंत्रता ले रहे हैं।

मूल रचनाकार

१. किसन फागू बनसोडे
२. भीमराव करडक
३. प्राचार्य, म. भि. चिटणीस
४. डॉ. गंगाधर पानतावणे
५. प्रा. दत्ता भगत
६. प्रा. अविनाश डोलस
७. प्रेमानन्द गज्वी
८. प्रभाकर दुपारे

अनुवादक

१. प्रा. वामन जगताप
२. प्रा. घनश्याम डोंगरे
३. प्रा. बी. के. चौदन्ते
४. प्रा. नामदेव उतकर
५. डॉ. माधव सोनटक्के

☐ प्रकाशक, अस्मितादर्श, प्रागतिक विचार संसद [औरंगाबाद] अभिनव प्रकाशन, बम्बई; सुरेश एजेन्सी [पूना]; शारदा प्रकाशन [नांदेड़]; प्रभाकर प्रकाशन [नागपुर]

☐ प्राचार्य, श्री. ह. मोहगांवकर, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर

☐ प्रा. डॉ. कमलाकर गंगावणे, प्रा. त्र्यम्बक महाजन

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, औरंगाबाद [महाराष्ट्र] ४३१००२

प्रस्तुति

"दलित रंगमंच" को आपके सामने प्रस्तुत करना मैं अपना भाग्य समझता हूँ और इस उपक्रम के लिए सकलक द्वय को साधुवाद देता हूं। आधुनिक साहित्य में क्षेत्र-विशेष की (अंचल की) सांस्कृतिक परम्पराओं का अपना महत्व है। इस देश की बिखरी हुई प्रतिमाएँ सास्कृतिक परम्पराओं का अंकन कर रही हैं। समग्र रूप में इसका राष्ट्रीय स्तर पर उभर कर आना, एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी। भिन्न-भिन्न भाषाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होने वाला क्षेत्रीय साहित्य का स्पंदन अपनी भाषिक एवं क्षेत्रीय मर्यादाओं को लांघकर राष्ट्रभाषा के माध्यम से सहृदयों (पाठक एवं दर्शको) के साथ संवाद स्थापित करता है।

इस प्रकार के साहित्यिक-सांस्कृतिक उपक्रम से राष्ट्रीय चेतना को समन्वयात्मक आयाम प्राप्त होता है और राष्ट्रीय एकात्मता तथा प्राचीन काल से चली आयी हुई सभ्यता की झाकी उभरकर आती है। इस दृष्टि से किये जाने वाले प्रयत्न निश्चित ही महत्वपूर्ण है।

जहाँ तक महाराष्ट्र के साहित्य का प्रश्न है, मैं अभिमानपूर्वक कह सकता हूं कि मराठी साहित्य राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य को सराहनीय योगदान करता आया है। इस तथ्य को झुठलाना कतई संभव नही है। परिणामतः मराठी की कहानी, नाटक, समीक्षा तथा वैचारिक चिंतन हिन्दी जगत् में सम्पृक्त हो चुका है।

"दलित रंगमंच" संकलन मे आठ नाट्य रचनाएँ संकलित हैं। विगत दो दशको से "दलित साहित्य" की संज्ञा से प्रचलित साहित्यांदोलन का मराठी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कविता,

कहानी, आत्मनिवेदन तथा नाट्य आदि साहित्य की विधाओं ने न केवल नये शिल्प को जन्म दिया है वरन् आज तक मूक रहे, अनकहे दलित जीवन को मुखरित किया है। कथ्य और शिल्प इस साहित्य की विशेष उपलब्धि है, उपज है।

मराठी साहित्य में अपना स्थान, अपनी सामाजिक चेतना तथा दलितों के प्रति प्रतिबद्धता को निश्चित करते हुए, दलित साहित्य राष्ट्रभाषा—हिन्दी—के माध्यम से अन्य भाषा-भाषियों के लिए भी उपलब्ध हो रहा है। इसके पूर्व ही इस साहित्य की कहानी, कविता, आत्मनिवेदन आदि ने हिन्दी जगत् को अपना परिचय करा दिया है। पर आज इस संकलन के माध्यम से, आदरणीय डॉक्टर बाबासाहब आम्बेडकर की प्रेरणा से ओतप्रोत वेदना एव विद्रोह की प्रखर चेतना से उद्भूत स्वर, अभिनीत और मुखरित हो रहा है। समाज-प्रबोधन के हेतु से "तमाशा" तथा "जलसा" जैसे लोकनाट्य की विधाओं के रूप में लिखे गये साहित्य के साथ ही आज की समस्याओं का भी दिग्दर्शन कराने का प्रयास इस संकलन के द्वारा किया गया है, जो मेरी अपनी जानकारी के अनुसार पहिला प्रयास है।

किसन फागु बनसोडे से लेकर प्रभाकर दुपारे तक दलित नाट्य में कथ्य, शिल्प एवं उद्देश्य-साधना की दृष्टि से जो परिवर्तित रूप विकसित हुआ है, वह एक ऐतिहासिक आलेख प्रस्तुत करता है। आदरणीय डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की विशुद्ध मानवतावादी जीवन दृष्टि से प्रेरित होकर महाराष्ट्र में दलित साहित्य का सृजन हुआ है और हो रहा है। डॉ. आम्बेडकर एक ओर विशुद्ध मानवीय दृष्टि और दूसरी ओर प्रखर राष्ट्रनिष्ठा के धनी थे। पीढ़ियों से जो वर्ग दलित और शोषित रहा, उसके पुनरुत्थान के लिए सनातनियों की बूर्जुवा समाज संरचना के विरुद्ध डॉ. आम्बेडकर ने खम ठोक कर विद्रोह किया और समूचे वर्ग का कल्याण किया। परन्तु व्यक्ति और समाज की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए

राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा स्वतंत्रता बरकरार रहे, राष्ट्र बलशाली हो, इस प्रकार का आचरण डॉ. आम्बेडकर का रहा है। आज इस दृष्टि से डॉ. आम्बेडकर किसी एक वर्ग के या जाति-समुदाय के नेता नही रहते, वे राष्ट्रनेता सिद्ध होते हैं।

मैं यहाँ नम्रतापूर्वक कहना चाहूँगा कि डॉ. आम्बेडकर प्रणीत विद्रोह संरचनात्मक और विधायक था, न कि विघातक या मानवता और राष्ट्र के लिए विध्वंसक। इसलिए मैं आशा करूंगा कि दलित साहित्य की भूमिका डॉ आम्बेडकर की भूमिका से सम्पृक्त रहे। साथ ही वह राष्ट्र के निर्माण मे अपना योगदान दे। संक्षेप में और निर्णयतः यह संकलन दलित रंगमच एवं दलित नाट्य का ऐतिहासिक दस्तावेज सिद्ध होगा, ऐसी मेरी धारणा है।

डॉ. कमलाकर गंगावणे और प्रा. त्र्यंबक महाजन दोनो भी दलित साहित्य को भलीभाँति समझने और समझाने की क्षमता रखते हैं। यह सकलन उनकी क्षमता का परिचायक है।

सम्पादक द्वय के प्रयास को हिन्दी जगत् न केवल पाठकों तक सीमित रखेगा, अपितु जन-जागृति हेतु इसका मंचन कर, नाट्य की सार्थकता सिद्ध करेगा, ऐसी आशा करना अनुचित नही होगा।

डॉ. कमलाकर गंगावणे, प्रा. त्र्यंबक महाजन तथा अन्य अनुवादक के अनुवाद कार्य मे त्रुटियाँ हो सकती हैं। फिर भी इनके परिश्रम का अपना मूल्य है। इस प्रकार का कार्य वे करते रहें, और राष्ट्रीय एकात्मता के कार्य में अपना योगदान देते रहे, इसी शुभाशंसा के साथ....

[डॉ. भ. ह. राजूरकर]

कुलगुरु,
मराठवाड़ा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद—४३१००४.

एवं

सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति,
भारत सरकार,
नई दिल्ली.

मन्तव्य

"दलित रंगमंच का उद्देश्य है—दलित जीवन की विभीषिकाओं को राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से अन्य भाषा-भाषी रंगकर्मी तथा दर्शकों तक पहुंचना-पहुंचाना। साथ ही वे इस रंगमंच से अवगत एवं परिचित हो सकें तथा अन्याय, अत्याचार का सिलसिला और उसे सहनेवाले की सहनशीलता का रूप समझ सकें।

लोकतंत्र को यदि दृढ करना है तो समता, बंधुता, एकता तथा न्याय आदि तत्वों का स्वीकार करना अनिवार्य है। "दलित रंगमंच" इसी तत्व को समझने-समझाने की प्रेरणा के लिए अपनी सार्थकता प्रमाणित करता है।

इस संकलन का सारा श्रेय मराठी के दलित नाट्य लेखको को जाता है, जिन्होंने अनुवाद की अनुमति हमें दी। इसमे जो भी सराहनीय है, वह मूल लेखकों का है। रही बात त्रुटियों की, वह हमारी है।

"दलित रंगमंच" की सटीक भूमिका हमारे परममित्र डॉ. सूर्य-नारायण रणसुभेजी ने लिखी है। हम उनके आभारी हैं। हमारे चित्रकार मित्र श्री दीपक खन्ना ने मुखपृष्ठ का चित्रांकन किया है। हम उनके आभारी हैं। मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. भ. ह. राजूरकरजी के हम विशेष ऋणी हैं, जिन्होंने अपनी व्यस्तताओं में बावजूद संकलन को प्रस्तुति लिखकर दी और हमें प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया है। आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में....

विनीत,

डॉ. कमलाकर गंगावणे,
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
मराठवाड़ा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद, ४३१००४

प्रा. त्र्यंबक महाजन
अध्यक्ष, मराठी विभाग,
डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
औरंगाबाद ४३१००२

भूमिका

दलित रंगमंच

अपने अस्तित्व की सुरक्षा तथा पहचान के लिए संघर्षरत दलित युवक इस विषम समाज-व्यवस्था को नकारते हुए मूल्यवादी समताधिष्ठित समाज के लिए प्रयत्नशील रहा है। उसके इस प्रयत्न का इतिहास बहुत लम्बा नहीं है। उलटे वर्ण तथा जाति के नाम पर मनुष्य द्वारा मनुष्य पर किये गये अत्याचारों का, द्वेष, तिरस्कार तथा अस्पृश्यता द्वारा मनुष्य को ही नकारने का इतिहास प्रदीर्घ रहा है। इस कड़वे इतिहास को भूलकर नयी मानवतावादी भूमिका पर आसीन समतावादी व्यवस्था की निर्मिति के उसके प्रयत्न में बाधाएँ ही उपस्थित की जा रही हैं, क्योंकि ऐसी नयी व्यवस्था का विरोध सुविधाभोगी वर्ण के लोग करेंगे ही। इस कारण आज के दलितों को दुहरे स्तर पर लड़ना पड़ रहा है। एक ओर अपनी उदात्त ध्येयवादिता को प्राप्त करने के लिए अज्ञान, अशिक्षा, दरिद्रता से उसे लड़ना है तो दूसरी ओर तथाकथित श्रेष्ठ वर्णों के विरोध को झेलते हुए उन्हें अपने अनुकूल भी बना लेते जाना है। इस पूरी लड़ाई को सार्थक सिद्ध करने के लिए एक ओर वह इतिहास का पुनर्मूल्यांकन कर रहा है, धर्म, जाति-बिरादरी और पौराणिक कथाओं के मनुष्य विरोधी स्वर को समझाने का प्रयत्न भी कर रहा है और उसी समय इतिहास तथा परम्परा मे प्राप्त मनुज-समर्थक शक्तियों को भी उजागर करता जा रहा है।

दुर्भाग्य से इस आंदोलन पर 'विशिष्ट वर्ण' के आंदोलन का लेबल लगाकर नकारने का प्रयत्न हो रहा है। वास्तव में 'दलित' शब्द विशिष्ट

वर्ण या जाति तक सीमित न होकर देश के बृहत्तर शोषितों से जुड़ा हुआ शब्द है।

'दलित' शब्द का अर्थ ही है पीड़ित, शोषित, वंचित उपेक्षित मनुष्य। 24 से 27 फरवरी, 1984 को संपन्न प्रथम अखिल भारतीय दलित-नाट्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए प्रसिद्ध दलित नाटककार श्री भि. शि. शिन्दे ने दलित शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है—

> "दलित के अन्तर्गत—(1) भारतीय समाज जिन्हें अस्पृश्य या अछूत कहता है और जिन्हें आज भी गांवों में प्रवेश नहीं है, (2) बहुत ही कम वेतन में जो चौबीसों घंटे खेतों में श्रम करने के लिए मजबूर है और जो शोषित है, (3) दुर्गम पहाड़ों, वनों, जंगलों में जीने के लिए मजबूर जन-जातियाँ, आदिवासी समाज, (4) पूंजीवादी व्यवस्था के कारण आर्थिक दृष्टि से जो दुर्बल हैं वह बहुजन समाज, (5) अराष्ट्रीय कहकर जिन्हें हमने नकारा है, वह 'अल्पसंख्यक समाज (मुस्लिम)।'[2]

वास्तव में इतनी व्यापक दृष्टि को लेकर चलने वाले दलित रंगमंच पर संकुचितता के आरोप लगाये जाते हैं—हमारी वर्णाधिष्ठित दृष्टि का ही यह प्रमाण है।

1950 में पहली बार दलित, आदिवासी तथा विमुक्त जन-जातियों को स्वतंत्र नागरिकत्व की पहचान दी गई तथा उनकी शिक्षा-दीक्षा के लिए संवैधानिक सुविधाएं प्रदान की गईं। 1950 के आसपास से इस विराट् जनसमुदाय के कुछ प्रतिशत लड़के-लड़कियाँ स्कूल जाने लगे। 1950 से 1985 ई. के करीब 35 वर्ष में इस देश की 35% दलित

२. अखिल भारतीय दलित नाट्य सम्मेलन, अध्यक्षीय भाषण—भि. शि. शिन्दे, पृ. ११

जनता में से केवल 5 या 7% ही स्कूल-कॉलेज जा सके हैं। 1950 के आसपास जो शिक्षा-संस्थाओं में गये, उन्हें उपाधि प्राप्त करने में 18-20 वर्ष लगे, मतलब 1970 के करीब इस उपेक्षित समाज की पहली पीढ़ी के 2% लोग शिक्षित हो गये। अभी इस समाज का 98% समाज अशिक्षा, अज्ञान और अंधश्रद्धा के अंधेरे में फँसा हुआ है। आरक्षण विरोधी भूमिका लेनेवाले इस यथार्थ को ध्यान में रखें, यह आग्रह।

जिस प्रकार अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कर 1885 से हिंदी में द्विवेदी-कालीन बुद्धिवादिता का आगमन होता है, राजनीति, धर्म, दर्शन, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों की ओर नयी दृष्टि से देख कर मूल्यांकन की वृत्ति उभरने लगती है, ठीक उसी प्रकार 1965-70 से दलितों की नयी पीढ़ी शिक्षा ग्रहण कर रही है। (इस दृष्टि से दलित सवर्णों की तुलना में करीब सौ वर्ष पीछे हैं।) दलित मानसिकता के इस परिवर्तन के मूल में डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर का व्यक्तित्व तथा कार्य कारणीभूत है—इसे हम न भूलें। डॉ. आंबेडकर की संतुलित, तटस्थ और मानवीय भूमिका के तथा बौद्धधर्म के प्रति आस्था के कारण दलितों का विद्रोह रक्त-क्रांति के मार्ग पर नहीं जा सका, इसे हम ध्यान में रखें। बुद्ध की विराट् करुणा में डॉ. आम्बेडकर सबको समा लेना चाहते थे। दलित-विद्रोह को प्रबोधन तथा विवेक के साथ जोड़ने की उनकी इस क्रांतिदर्शिता को दुर्भाग्य से इस देश के सवर्ण अभी समझ नहीं पाये हैं।

1960-65 की पीढ़ी डॉ. आंबेडकर के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर जब अपने परिवेश को देखने लगी तब उसे पारम्परिक साहित्य अपना नहीं लगा। उसमें 85% समाज की अनुभूतियों का चित्रण नहीं था। वह साहित्य इन्हें एकांगी, कृत्रिम तथा जीवनानुभवों से रिक्त लगा। इसी कारण सन् 1960 से 'दलित साहित्य' का आंदोलन महाराष्ट्र में शुरू हो जाता है। यहाँ यह स्मरण रखें कि 1960 के पूर्व से ही इस साहित्य की अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि बन रही थी। महात्मा ज्योतिबा फुले

(1827-1890), राजर्षि शाहू महाराज (1872-1922) तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर (14-4-1891—6-12-1956) के व्यक्तित्व तथा कृतित्व ने इस साहित्य को दृढ़ वैचारिकता प्रदान की है। सन् 1965 के बाद बुद्ध की करुणा, मार्क्स की क्रांतिदृष्टि तथा नीग्रो साहित्य ने भी समय-समय पर वैचारिकता को मजबूत किया है। यहां हम यह कतई न भूलें कि महाराष्ट्र के सामाजिक आंदोलन की सृजनात्मक अभिव्यक्ति ही 'दलित साहित्य' है। संभवतः इस देश का यह पहला और एकमात्र साहित्यिक आंदोलन है जिसके सृजन के मूल में सामाजिक आंदोलन रहा है। या यूं कहें, सामाजिक आंदोलन की प्रतिक्रिया स्वरूप ही साहित्यिक आंदोलन शुरू हुआ है। विषमता के विरोध की लड़ाई को अधिक तीव्र बनाने के लिए साहित्य को हथियार के रूप में स्वीकारा गया। इसी कारण दलित साहित्य का प्रत्येक लेखक कलम का मजदूर ही नहीं, परिवर्तन और प्रबोधन का एक कार्यकर्त्ता भी हो सकता है—इसका एहसास इस आंदोलन ने करा दिया है।

इस आन्दोलन में जो महत्त्वाकांक्षी थे, वे सत्ता अथवा विरोध की राजनीति में उलझ गये। जो संगठन-कुशल थे, वे संस्था चालक बनकर शिक्षा के प्रचार-प्रसार में फंस गये और जो संवेदनशील थे, वे साहित्य द्वारा जन-जागरण के कार्य में जुट गये। अर्थात् कतिपय अपवाद भी गिनाये जा सकते हैं।

अन्य किसी भी भाषा की तरह इस आन्दोलन की प्रथम अभिव्यक्ति कविता में हुई, बाद में कहानी, आत्मकथा तथा उपन्यास में। इस सम्पूर्ण साहित्य प्रवाह को हिंदी में लाने के जो प्रयत्न हुए, उनमें समान्तर साहित्य के आन्दोलन के साथ इस साहित्य को लेकर कुछेक विशेषांक प्रकाशित हुए तथा स्वतंत्र रूप से कतिपय रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया गया।[1] जहां तक इस धारा में हम कुछेक मित्रों का योगदान रहा है,

1. (अ) सारिका (भारतीय दलित साहित्य) अप्रैल तथा मई 1975

उसके फलस्वरूप 'दलित कहानियाँ'[2] 'यादों के पंछी'[3] (प्र. ई. सोनकांबले कृत 'आठवणीचे पक्षी' आत्मकथा का अनुवाद) प्रकाशित हुए हैं जिसे हिंदी जगत ने बड़ी आत्मीयता से स्वीकृत किया है। उसी क्रम में प्रस्तुत नाट्य संकलन है।

दलित नाट्य का जन्म अन्य विधाओं की तुलना में काफी देर से हुआ है। इसका कारण केवल इतना ही है कि जहाँ अन्य विधाएं व्यक्ति-निष्ठ हैं, वहाँ नाटक सामूहिक विधा है। थियेटर, प्रेक्षक, अभिनेता, मंचीय साज-सज्जा, प्रकाश-व्यवस्था, महीने डेढ़ महीने की अवधि इसकी प्राथमिक आवश्यकताएं हैं। लेखक के अलावा इतनी विविध इकाइयों पर यह विधा आश्रित है। इसी कारण कविता, कहानी तथा आत्मकथाओं के करीब दस वर्ष बाद दलित नाटक लिखे तथा खेल जाने लगे। परन्तु 1970 के पूर्व से, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन काल से ही, दलित नाटक के बीज मिलने लगते है। डॉ. आंबेडकर के समाज-जागरण के संदेश को लेकर उनके अनुयायी जलसों[4] के माध्यम से देहातों-देहातों में भटकने लगे। इन जलसों का स्वरूप विशुद्ध प्रचारात्मक तथा सुधारवादी

(ब) संचेतना (मराठी दलित साहित्य विशेषांक) दिसम्बर, 1982

(क) दया पवार कृत 'बलुत' का अनुवाद 'अछूत'
अनुवादक—दामोधर खडसे—
राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

(ड) सूरज के वंशधर—अनु/सं. डॉ. चन्द्रकांत पाटील
शुभदा प्रकाशन: शाहादरा, दिल्ली-32

2. दलित कहानियाँ अनु/स. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे/डॉ. कमलाकर गंगावणे, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

3. यादों के पंछी—प्र. ई. सोनकांबळे, अनु. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

4. जलसा—लोकनाट्य का एक प्रकार

दृष्टिकोण से परिपूर्ण था। एक ओर वे अंधश्रद्धा, रूढ़ियों तथा कर्मकांडो पर प्रहार कर रहे थे, सवर्णों के असली स्वरूप को बतला रहे थे, तो दूसरी ओर दलित जनता को स्वाभिमान से खड़े होने का संदेश भी दे रहे थे। 'आम्बेडकरी जलसे'[1] कथ्य, अभिनय, प्रस्तुतीकरण आदि द्वारा अनजाने में एक नये रास्ते का ही निर्माण कर रहे थे। इन जलसो मे महाराष्ट्र के कई लोकनाट्यों और लोकसंगीतों का अद्भुत समन्वय हुआ है।

महाराष्ट्र के लोकनाट्य की अधिकतर परम्पराओं को दलित जातियो ने ही विकसित किया है। इनमे भी कलगी-तुर्रा तथा तमाशा के प्रकार सर्वाधिक लोकप्रिय रहे हैं। इस प्रकार परम्परा से प्राप्त लोकनाट्यो का (गोंधळ, जागरण, भारूड, एकतारी भजन) उपयोग आधुनिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए किया जाने लगा। आंबेडकरी जलसो तथा पोवाडो ने दलितो मे नयी अस्मिता तथा नये एहसास को समृद्ध करने का ऐतिहासिक कार्य किया है। इस ऐतिहासिक आंदोलन के प्रथम नाटककार किसन फागू बनसोडे हैं, जिन्होने 1932 मे 'हिंदुधर्माचा पचरंगी तमाशा' की रचना की है, जो अपने समय में बहुचर्चित रहो है। इसी परम्परा मे आगे चलकर सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं से जुड़े हुए नाट्य को अभिनीत करते हुए जनचेतना को एक बड़े जबरदस्त हथियार के रूप मे उपयोग में लाया गया। इसमें विशेषकर अण्णाभाऊ साठे तथा शाहीर अमरशेख का नाम सराहनीय है।[2]

इसमे कोई संदेह नही कि सुधारवादी आदोलनों से प्रेरित प्रभावित होकर तत्कालीन युग के (1930-1960 तक) सवर्ण नाटककारों—मामा

---

1. आम्बेडकरी जलसे—स्वरूप आणि कार्य—भीमराव करदक, अभिनव प्रकाशन, गुरुनानक मार्केट, डॉ. आंबेडकर रोड बंबई-4 [illegible]
2. आधार/दलित वाड्मय: प्रेरणा और प्रवृत्ति—शंकरराव खरात, पृ. 203।

वरेरकर, आचार्य प्र. के. अत्रे, साने गुरुजी, प्रबोधनकार ठाकरे, स्वातंत्र्य-वीर सावरकर—ने दलितों की समस्याओं को अपने नाटकों में उठाया है। परन्तु इन नाटकों में दलित समस्या को सहानुभूति अथवा दयाभाव से ही देखा गया है। 'दलित-अनुभूति' अथवा 'दलित एहसास' का उनमें अभाव है।

मराठी साहित्य की तरह मराठी रंगमंच भी मध्यवर्गीय अनुभवों तथा संस्कारों तक ही सीमित था। इसके प्रेक्षक, अभिनेता तथा दिग्दर्शक भी इस वर्ग तक समिति थे। नाट्य-विषय भी मर्यादित थे। इतिहास, यौन-समस्या, पारिवारिक विघटन तथा राजनीति के परे जाकर विषम सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था में घुटनभरी पशुवत् जिंदगी जीनेवाले व्यक्ति की यातना का, उसकी समस्याओं के चित्रण का, यहाँ अभाव था। इस स्थितिशीलता को दलित रंगमंच ने पहली बार तोड़ा है। सत्यशोधक जलसे तथा आंबेडकरी जलसों का आदर्श सामने रखकर दलित नाटक लिखे तथा खेले जाने लगे। परिणामतः दलित नाटक समस्या-प्रधान हो गये। उनकी समस्याएं सीधे इस जमीन और व्यवस्था से जुड़ी हुई हैं।

आचार्य म. भि. चिटणीस द्वारा लिखित 'युगयात्रा' (सृजनकाल 1954) नाटक का दलित नाट्य के विकास में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। पीपुल्स एज्युकेशन सोसायटी के संस्थापक एवं अध्यक्ष डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जन्मदिवस (14 अप्रेल) के अवसर पर 'संस्थापक-दिन' के उपलक्ष मे 'युगयात्रा' का पहला मंचन किया गया। 20 नवम्बर, 1955 में बौद्ध मंडल के तत्वावधान में दूसरी बार यह नाटक खेला गया। तीसरी बार 14 अक्तूबर 1956 मे 'दीक्षाभूमि' नागपुर में धर्मान्तर के ऐतिहासिक पर्व पर भी इसे खेला गया। 'युगयात्रा' के दूसरे और तीसरे मचन के अवसर पर स्वयं डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर उपस्थित थे। अतः

डॉ. आंबेडकर की उपस्थिति इस नाटक के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। मौलिक तथा 3 अंकों के प्रयोग, लाखों लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किये गये। इस कारण 'युगयात्रा' पहिला दलित नाटक आधुनिक संदर्भ में स्वीकृत हुआ है।

अपने जन्म से ही रंगमंच के साथ सीधे जुड़ने का श्रेय दलित-नाटक को जाता है। पहले नाटक लेखन और इसके कई वर्ष बाद उसका मंचीकरण—ऐसी स्थिति यहाँ नहीं है।

दलित साहित्य की तरह दलित रंगमंच का आंदोलन औरंगाबाद (द) (महाराष्ट्र) के 'नागसेन-वन' में स्थित 'मिलिंद महाविद्यालय' से ही शुरू होता है। 1976 के बौद्ध साहित्य/दलित साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षता पद से बोलते हुए डॉ. मनोहर वानखेडे जी ने दलित साहित्य/बौद्ध साहित्य की व्यापक भूमिका—जिसके साथ नीग्रो साहित्य एवं जीवन की भी वेदना जुड़ी हुई थी—की परिभाषा स्पष्ट करते हुए उसके विकास की दिशाओं की ओर संकेत दिया था। नागसेनवन में मिलिंद महाविद्यालय से शिक्षित नयी युवा पीढ़ी साहित्य की भिन्न-भिन्न विधाओं के द्वारा अपने-आपको अभिव्यक्त करने लगी, उसी का एक आविष्कार 'दलित थिएटर' के रूप में सामने आता है। प्रा. एस. के. गायकवाड़, प्रा. अविनाश डोलस, प्रा. विजयकुमार गवई, प्रा. त्र्यम्बक महाजन (इस नाट्य संकलन के संपादक) प्रा. तुषार मोरे, प्रा. ल. बा. रायमाने, प्रा. मनोहर शिन्दे, डॉ. एम. डी. पंडित, श्री प्रकाश त्रिभुवन, श्री मधु काळे ने इकट्ठे होकर 'दलित थिएटर' को जन्म दिया तथा इस आंदोलन को एक निश्चित दिशा देने का ऐतिहासिक कार्य किया है।[1] इसके कुछ ही वर्षों बाद पुणे में श्री भि. शि. शिन्दे तथा श्री टेकचंद गायकवाड ने 'दलित रंगभूमि'

1. अखिल भारतीय दलित नाट्य सम्मेलन, दूसरा अधिवेशन, अहमदनगर, अध्यक्षीय भाषण, मधुसूदन गायकवाड, पृ. 4

नामक संस्था की स्थापना की। 11-11-1979 को इस संस्था की ओर से 'कालोखाच्या गर्भात' नाटक का पहला प्रयोग सम्पन्न हुआ। तदनन्तर इस रंगमंच को प्रतिभासम्पन्न लेखक, दिग्दर्शक, अभिनेता मिलते गये। मौलिक लेखन तथा अनुवादों की परम्परा भी शुरू हुई। प्रा. त्र्यम्बक महाजन ने नीग्रो नाटककार लंग्स्टन ह्यूजेस के 'म्यूलंटो' का अनुवाद कर उसे अखिल भारतीय नाट्य परिषद के अधिवेशन के अवसर पर पुणे में मंचित किया। पुणे के श्री भि शि. शिन्दे तथा श्री टेक्सास गायकवाड पूरी निष्ठा के साथ दलित नाट्य आंदोलन चला रहे हैं। उसी प्रकार इन नाटकों की समीक्षा के लिए वे 'दलित रंगभूमि' नामक त्रैमासिक पत्रिका को भी प्रकाशित कर रहे हैं।

सर्वश्री टेक्सास गायकवाड (आम्ही देशाचे मारेकरी, जळवा) सूर्यकांत तावडे (पिसाळलेली भूते), भि. शि. शिन्दे (प्रायोग), कमलाकर डहाट (नरबळी), प्रेमानंद गज्वी (देवनगरी), प्रकाश त्रिभुवन (थांबा! रामराज्य येतय), हेमन्त खोब्रागडे (सूर्यास्त), प्रा. दत्ता भगत (खेळिया), प्रा. रुस्तम अचलखाम्ब (कैफियत), अरुणकुमार डंगळे, (कायर), संगत जाधव (पोतराज) आदि आज के उल्लेखनीय नाटककार हैं।

नाटकों के अलावा इन्हीं दिनों एकांकियाँ भी लिखी जाने लगीं। नाटकों की तुलना में एकांकियाँ अधिक खेली जाती रही है, और उनकी संख्या भी अत्यधिक है। उपर्युक्त नाटककारों ने एकांकियाँ भी लिखी हैं, अलावा इनके सर्वश्री दया पवार, डॉ. गंगाधर पानतावणे, ह. मो. नारनवरे, सुरेश मेश्राम, खुशाल कांबळे, प्रा.अविनाश डोळस, प्रभाकर दुपारे आदि उल्लेखनीय हैं।

उपरोक्त उल्लेखितो के अतिरिक्त वैचारिक तथा तार्किक दृष्टिकोण को लेकर भी नाट्यलेखन हुआ है। इस प्रकार के नाट्यलेखन में डॉ. प्रा. रामचंद्र क्षीरसागर द्वारा लिखित 'भगवान् पर मुकदमा' का अलग-सा महत्व है[1]।

इसके साथ और दो घटनाओं का उल्लेख करना मुझे आवश्यक लगता है, क्योंकि रंगमंच के विकास के लिए और दलित नाट्यलेखन तथा मंचन का सम्यक् स्वरूप समझने के हेतु यह घटनाए महत्त्वपूर्ण है—(1) अखिल भारतीय दलित नाट्य परिषद् की स्थापना, (2) अखिल भारतीय नाट्य सम्मेलन के अधिवेशन, जो पुणे और अहमदनगर में सपन्न हुए हैं। संगठन की दृष्टि से इन घटनाओं का महत्त्व नकारा नही जा सकता।

दलित रंगमंच सामाजिक प्रतिबद्धता को स्वीकार करके चलता है। दलित, शोषित, आदिवासी समाज को नयी दृष्टि देना उसके अनेक लक्ष्यों में से एक प्रमुख लक्ष्य है। मनुष्य पर मनुष्य द्वारा किये गये अत्याचारों का कलात्मक चित्रण कर सवर्णों के हृदय परिवर्तन की उसकी इच्छा है। विशुद्ध मानवी मूल्यों की स्थापना उसका अंतिम लक्ष्य है। सवर्ण तथा दलित के बीच रूढि तथा वर्ण-व्यवस्था द्वारा निर्मित दूरियों को पाटने की उसकी महत्त्वाकाक्षा है। 'अर्थ' 'वर्ण' 'जाति-बिरादरी' से उत्पन्न विषमता को दूर कर समता, बधुता तथा मैत्री की स्थापना उसका स्वप्न है।

अपनी इसी इच्छा, महत्त्वाकाक्षा, स्वप्न तथा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसने नाटक-रंगमच को माध्यम के रूप में स्वीकारा है। इस प्रयोजन तक पहुंचने के लिए उसने नाटक रंगमंच की पारम्परिक सकल्पना को नकारा है। नाटक विशुद्ध मनारजन या कलावादी माध्यम नहीं है। यह परिवर्तन तथा प्रबोधन की प्रक्रिया का माध्यम है—इस पर दलित रगमच की अटूट श्रद्धा है। सवर्ण, अमीर तथा मध्यवर्गीय लोगों की बाहों में छटपटाते नाटक-रंगमंच को इसने मुक्त किया है। उसे खुले मैदान में, सड़कों पर मुक्त सास लेने की स्वतत्रता इस आदोलन ने ला दी है। दलित नाटक महज नाट्यवस्तु के प्रति विद्रोह नही है, वह मच तथा मचीय तंत्र के प्रति भी विद्रोह है। इस अर्थ मे दलित रगमच अल्पसख्यकों के

प्रति बहुसख्यकों का विद्रोह है। जनतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना का यह प्रामाणिक प्रयत्न है।

नाटक रंगमंच के जनतांत्रिकरण की यह प्रक्रिया है। इसी कारण इस आंदोलन से प्रेरणा ग्रहण कर मराठी मे नुक्कड़ नाटको/एकांकियो (Street Play) का आरम्भ हो जाता है। प्रेक्षकों को थिएटर तक आने के लिए कहने के बजाए अभिनेता/रंगकर्मी ही प्रेक्षको तक जाएंगे—ऐसी यहां धारणा है। इन नुक्कड़ नाटकों के सभी विषय सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक ही है।

प्रस्तुत संकलन मे निहित एकांकियो का स्वरूप वैविध्यपूर्ण है। 'पचरंगी तमाशा' द्वारा श्री बनसोड पुरोहित वर्ग के दुहरे व्यक्तित्व का पर्दाफाश कर सामान्य जनता को यथार्थ से परिचित कराना चाहते हैं। 'धर्मान्तर' डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के धर्मान्तर सबंधित जलसा है। प्राचार्य म. भि. चिटणीस की एकांकी 'जाग उठीं छायाएं' में वर्ण-व्यवस्था पर वैचारिक मथन ही अधिक है। 'मृत्युशाला' मे विविध वर्णो की मनोवृत्ति का पर्दाफाश किया गया है। वास्तव में इन चारों एकांकियो मे 'विचार' तथा 'संदेश' की प्रमुखता है। अभिनय तथा 'मंच' का एहसास कम ही है। ये चारो रचनाए इस आन्दोलन की आरंभिक रही हैं। परंतु प्रा. दत्ता भगत (आवर्त), प्रा. अविनाश डोलस (बिन चेहरे का गांव) प्रेमानंद गज्वी (घूंट भर पानी) तथा प्रभाकर दुपारे (सात समंदर परे) की एकांकियां कथ्य, मंच, अभिनय आदि सभी दृष्टि से सफल रही हैं। 'आवर्त' का प्रयोग तो सत्यदेव दुबे के निर्देशन में हुआ है।

प्रस्तुत सकलन के संपादक-द्वय दलित साहित्य तथा रंगमंच से जुड़े हुए व्यक्ति है। प्रा. त्र्यम्बक महाजन नाट्य तथा रंगमच से प्रतिबद्ध व्यक्ति हैं। वे स्वयं एक सफल नाटककार हैं। लगमग तीन वर्षो से वे नाट्य-क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। वे नाट्य तंत्र-मंत्र के प्रशिक्षित जानकार अधिकारी है। उन्होंने ही दलित नाट्याविष्कार तथा दलित रंगमच के

संबंध में अखिल भारतीय नाट्य परिषद् के संमेलन (अकोला और कोल्हापुर) में भूमिका बांधने का कार्य 'आलेखों' द्वारा बड़ी सफलता के साथ किया है। नीग्रो नाटकों के हिंदी, मराठी अनुवादों (मुलंटो) तथा प्रस्तुती के माध्यम से दलित नाटक तथा मंच को समृद्ध करने का ऐतिहासिक कार्य आपने किया है। डॉ. कमलाकर गगावणे दलित साहित्य के अध्येता तथा समीक्षक हैं।

'दलित कहानियाँ' संकलन के एक संपादक के रूप में वे कार्य कर चुके हैं।

प्रस्तुत संकलन में संपादकों का एक निश्चित दृष्टिकोण रहा है। हिन्दी भाषी प्रदेशों के दलित, पीड़ित, शोषित, व्यथित तथा उपेक्षित जनसमूह तक पहुंचकर उनमें विशुद्ध मानवीय तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना, उन्हें उनकी अस्मिता और स्वाभिमान से परिचित कराना, सवर्णों की भीतरी मानवीयता को जगाना इस संकलन का उद्देश्य रहा है। इस उद्देश्य को साकार करने का, महत्वपूर्ण दायित्व कृष्णा प्रदर्श, अजमेर के संचालकों ने निभाया है, इसलिए उनके प्रति संपादक द्वय तथा भूमिका लेखक भी ऋणी हैं।

मराठी के इस मंचीय आंदोलन को हिंदी भाषी जनता तक पहुंचाने में हम लोग कितने सफल हुए हैं, इसे हिंदी के सुधि पाठक तथा रंगकर्मी ही सिद्ध करेंगे।

सहयोग, स्नेह तथा प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा में—

'शब्दधारा' लक्ष्मी कॉलोनी, लातूर-431 531 — डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

अनुक्रम

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	सनातनी धर्माचा पचरंगी तमाशा	: किसन फागू बनमोडे
हिंदी अनुवाद :	पचरंगी तमाशा : सनातनधर्म का	: प्रा. त्र्यम्बक महाजन

प्रकाशक : प्रागतिक विचार संसद,
"त्रैमासिक, अस्मितादर्श"
३७, लक्ष्मी कॉलोनी, छावनी,
औरंगाबाद–४३१००२

मंचन : ग्रामीण एवं नागरी रंगमंच पर दीर्घ काल तक खेला गया। सामाजिक प्रबोधन एवं दलित चेतना की दृष्टि से महाराष्ट्र में किया गया मंचन एक ऐतिहासिक महत्व रखता है।

संपर्क : डॉ. गंगाधर पानतावणे
संपादक, अस्मितादर्श
३७, लक्ष्मी कॉलोनी, छावनी,

पंचरंगी तमाशा : सनातन धर्म का !

☐ किसन फागू बनसोडे

दीन दयाला दीन पिता, हरो हमारी भव व्यथा ।। ध्रु ।।

विश्व धारक विश्व पालक
तुम बिन कौन त्राता जी ।। दीन दयाला ।। १ ।।

करे छल हिंदू कहीत हो
ब्राह्मण की यह शिक्षा जी ।। दीन दयाला ।। २ ।।

छुआछूत का कलंक लगावे
मुक्त करो इस सता से जी ।। दीन दयाला ।। ३ ।।

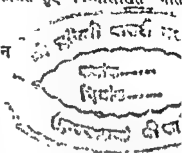
मानवता से वंचित हम सब
जीवन जियें पशुता का जी ।। दीन दयाला ।। ४ ।।

भक्त वत्सल परमेश्वर तुम
दूर करो यह विपदा जी ।। दीन दयाला ।। ५ ।।

निराश्रित हम मांग-महार
शुभ सम्मान दो जगत त्राता जी ।। दीन दयाला ।। ६ ।।

प्रतापराव : तमाशा देखने के लिए इकट्ठे सभी भाइयो तथा बहनो से हाथ जोडकर मेरी प्रार्थना है कि मेरी प्रार्थना स्वीकार करें। सनातन धर्म का पचरगी तमाशा देखने के लिए इकट्ठे हुए सज्जनो को ऐसा लगेगा कि तमाशा देखना साक्षात् पाप है। अछूत माने गये समाज से यह पाप निकाल कर फेंक देना और समाज मे सुधार लाना शायद समाज सुधारको का पहला उत्तरदायित्व है। पर उस उत्तरदायित्व को निभाने के बजाय तमाशारूपी इस अनीति के सांप के जहरीले पिल्ले को समाज मे खुले आम सचार की अनुमति देकर समाज की दुर्गति शायद हम कर रहे है। इस प्रकार की धारणा होने के प्रत्यक्ष कारण है और वे है हमारे बाह्य लक्षण और उसमे भी मुख्य कारण है हमारा नाचनेवाला यह लड़का। लेकिन सज्जनो! सोचिए, गाँव मे तमाशे का खेल है—यह सुनते ही कीर्तन, भजन और पुराण के लिए इकट्ठे न होनेवाला जन-समुदाय बिना निमत्रण के यहाँ इकट्ठा होता है। सभा, सगोष्ठी अथवा किसी सुधारक का व्याख्यान करवाना बहुत ही खर्चीला मेहनत और परेशानी का काम है। सभा आयोजन पर आसपास के अधिकाधिक दस बीस गाँव के लोग आते है, वे भी हरेक गाव से दो-चार ही। ध्येय साधन का प्रचार इने-गिने लोगो मे ही होता है। समाज सुधारको के भाषण पूरी तरह से समझ पाना अस्पृश्य समाज के लिए बहुत मुश्किल होता है। इसलिए प्रचार भी बहुत ही नगण्य होता है। लेकिन तमाशे का माध्यम छोटे-बड़े साधारण स्त्री-पुरुषो को सहज ही समझ मे आता है। इसलिए हिंदू भाइयो को और अछूत स्थिति मे रहनेवाले महार, माग आदि जातियो को इस तमाशे द्वारा समाज सुधार और धर्म सुधार की शिक्षा देना हम हमारा उद्देश्य

मानते है। आप इसे ही देखिए और सुनिए, इतना ही हाथ जोड़ कर कहता हूं। [नाचने वाला लड़का ताल पर नर्तन करता है और घूंघट निकालते हुए निम्नलिखित गीत गाता है]—



गीत : गायन

सितम इन किसे कहेंगे
कौन सुने हमरी प्रार्थना
नीच अधम हम कहलाएं
चोर लुटेरे हमें हिंदू बतलाएं
इस जुलम का क्या कहना ॥ कौन सुने हमरी प्रार्थना

तोता-मैना बोल सीखे है
पशुओं को भी शिक्षा मिले है
पर हमारी हो क्यों इतनी छलना ॥ कौन सुने हमरी प्रार्थना

परछायी पड़े तो छूत होवें
मंदिर में बहिष्कृत कहलाए
शास्त्राधिकार हमें मिले कभी ना ॥ कौन सुने हमरी प्रार्थना

पर धरम भी पावे ममता
पर हमें मिलत हैं लत्ता
किसे बतावें हम अपना अन्याय ॥ कौन सुने हमरी प्रार्थना

जिसे मिला जो भी अधिकार
वह करे हम पर अत्याचार
फरियाद यह कहां ले जाएं ॥ कौन सुने हमरी प्रार्थना

जुल्मी कानून भट्ट का मत्था
पटेल के हाथों में
अन्याय की गठरी कब तक ढोना ॥ कौन सुने हमरी प्रार्थना

न्यायप्रिय दयामयी सरकार
उसका भी न मिले पूरा आधार
फिर प्रजा की बात कौन सुनता ॥ कौन सुने हमरी प्रार्थना

अरी शांति तेरा कहना बिल्कुल ठीक है पर ऐसी निराशा का रोना, रोते बैठना, अस्पृश्य समाज के लिए ठीक नहीं है। छिपकर निशाना दागना अच्छा नहीं। चौहट्टे पर आने के बाद घूँघट की यह रूढ़ि किसलिए ? घूँघट फेंक दिये बिना किसी भी स्त्री समाज का उद्धार होने वाला नहीं है। शांति तुझे कहना क्या है ? तेरी व्यथा पर विचार करनेवाले सज्जन लोग यहाँ पधारने पर भी तू घूँघट हटा क्यों नहीं रही है ?

शांति : सनातन धर्म का तमाशा प्रस्तुत करनेवाले महारों का मुख नहीं देखना चाहिए, इस प्रकार का आदेश ब्राह्मणों ने दिया है और इसीलिए मैं मेरा चेहरा बता दूँ तो सभी उठकर चले जायेंगे। इसलिए मैं घूँघट नहीं हटाऊंगी।

प्रतापराव : महार, मांग आदि के संबंध में जो अपमानजनक, तिरस्कृत और भूठमूठ की बातें ब्राह्मणों ने लोगों के मन में फैलायी थी, वे सब शिक्षा के प्रचार-प्रसार से लोगों के दिलो-दिमाग से निकल रही हैं। इसलिए यह इतना बड़ा जनसमूह खेल देखने के लिए इकट्ठा हुआ है। शायद इनमें इक्का-दुक्का ही होगा जो ब्राह्मणों के चरणतीर्थ के संचार के कारण बड़प्पन के नशे में खर्राटे ले रहा हो। यहाँ इकट्ठा हुआ जनसमूह सुधारना के मार्ग को अपनानेवाला और अस्पृश्य माने गये समाज के उद्धार का पक्षधर है। तो अब इनके सामने संकोच न करते हुए घूँघट हटाकर अपनी बात इनके सामने रख और खेल का आरम्भ कर।

शांति : अगर ऐसी बात है तो फिर इस जनसमूह को मैं इतना ही कहती हूं कि,

अपढ़ न रखो लाल अपने, पढ़ने भिजवाओ
ओ मेरे प्रिय लाल को शाला भिजवाओ

बिन ज्ञान न कोई सहारा
अशिक्षा है वैरी हमारा
अज्ञान सागर चहुं ओर फैला, तर जाओ ॥ १ ॥

निरक्षर न कोई रह पावे
अज्ञान से बहु हानि होवे
विष वृक्ष है अज्ञान, इसका समूल नाश हो ॥ २ ॥

एम. ए., एल एल. बी. बिना किये पार
विद्या का न छुड़वाओ महाद्वार
ज्ञान की सीमा पार करवाओ ॥ ३ ॥

यह बात कहे अपने भाइयों से
अपढ़ अंध सब भाइयों से
शिक्षा की महत्ता सब को समझाओ ॥ ४ ॥

प्रतापराय : बहुत खूब ! इस अस्पृश्य समाज को ही नहीं वरन् सभी समाज के लिए तूने अच्छा सबक सिखाया है।

शांति : नहीं स्वामी ! मैं औरत-जात क्या सिखाऊंगी। इस प्रतापराय के चरणों का प्रताप ! भाइयों, शादी के बाद घर पर ही मुझे पढ़ाया-लिखाया गया इसलिए मैं आज आपसे चार शब्द बोल पा रही हूं। प्रत्येक शिक्षित पुरुष अगर अपनी अर्धांगिनी को शिक्षित करे तो वह स्त्री अपनी संतान को शिक्षा का पहला पाठ दिये बिना नहीं रहेगी।

प्रतापराव : इस गीत में कही गई बात के अनुसार अगर हम अपनी संतान को पढायेंगे नहीं तो हमारी अधोगति अटल है, सुधार की पहली सीढी शिक्षा है। भाइयो, अब हम अपने खेल का आरम्भ करते है। उसके पहले हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप शांतचित्त से यह खेल देखें और जो शंकाएँ आपके दिल में निर्माण होंगी वे और इस खेल के संबंध में जो कुछ पूछताछ करनी हो वह अथवा मत-प्रदर्शन करना हो तो हमारे ठेले पर आइए, हम सभी बातों का जवाब, स्पष्टीकरण देंगे। लेकिन खेल के बीच में यदि शंका पूछेंगे तो खेल का मजा किरकिरा होगा और रंगत नहीं बढेगी। इसलिए हमारी यह प्रार्थना स्वीकार कीजिए। अब खेल शुरू करते है—

मामाजी : अजी, लंबोदर भांजे महोदय, आपके इस ममेरे भाई बापूराव को आपके नान्या के साथ आज से पढना-लिखना सिखाइए इसे आपके हवाले करता हूँ, इसे सम्भालिए।
[नान्या और बापूराव पढने-लिखने बैठते है इतने में]

रंगू : अजी ओजी, करें भी तो क्या, कुछ भी उपाय नहीं है। उस मुई धोबन ने तो परेशान कर रखा है। कभी कपडे धोने के लिए वक्त पर नही आती। इन दिनों तो बहुत ही मरखढी है। कल के ग्रहण के और परसों के छुतहे का धोना अभी तक वैसा ही पडा है। कब आयेगी धोने को कौन जाने? करें भी तो क्या?

ब्राह्मण : वह रंडो इन दिनों ऐसा ही कर रही है। शूद्र जो ठहरी। वह नीच है जो है सो। बिगड गए है बहुत आजकल जो है सो। सभा संगोष्ठी आयोजित करते है जो है सो। भाषण भी देते हैं। अब रोटी माँगने जब वह आयेगी जो है सो तो

रंगू : शूद्र स्त्री का काम ब्राह्मणी करेगी ?

ब्राह्मण : क्या हर्ज है ? क्यों न करेगी ! शास्त्रों में ब्राह्मणी को भी शूद्र ही तो बताया है। जो है सो तेरा उपनयनसंस्कार भला कहाँ सम्पन्न हुआ ? महिलाएँ वेदपठन न करें, ऐसा शास्त्र का कहना है जो' है सो-जा जल्दी से कपड़े धोकर आ—। नारायणऽऽ नारायणऽऽ।

रंगू : हाँ, अच्छी याद आयी। क्यों जी आप हमेशा लोगों से कहते हो कि सत्यनारायण सब दु:ख दूर करता है तो फिर मेरा भी एक दु:ख दूर करने को कहिए ना जी उसे—।

बापूराव : भाईसाहब, कह दीजिए सत्यानारायण को भाभीजी के छुतहे के कपडे धो डाले। क्यों भाईसाहब, सत्यनारायण इतना भी काम नहीं करेगा ? झटसे कर देगा। हाँ।

ब्राह्मण : अरे पागल सत्यानारायण कहीं छुतहे के कपडे धोता है ? वह तो मन्नत माँगने पर मनोकामना पूरी करता है, मनोकामना।

बापूराव : भाभी, मांगो मन्नत सत्यानारायण से। क्या वक्त बर्बाद करती हो ? माँगों मन्नत, बोलो—।

रंगू : क्या कहूँ बापूराव ?

बापूराव : कहो, भगवान सत्यनारायण देवता, आज के बाद मुझे कभी भी छुतहा की झंझट मत रहने दे। इससे हर महीने की छुतहे की बीमारी से तुम मुक्त हो जाओगी। [हाथ जोड़कर] जय सत्यनारायण देवता, मेरी भाभी की मनोकामना पूरी करेगा तो पाँच सुहागनों की जोड़ियों से तुम्हारी पूजा करूँगा।

ब्राह्मण : ए गधे हट पीछे। बेमतलब क्या बकता है। छुतहा नहीं रहेगी तो जो है सो बाल-बच्चे कहाँ से पैदा होंगे।

बापूराव : तो क्या भैया, आप, मैं, और यह भाभी और सारे ब्राह्मण इसी छुतहे के कारण पैदा हुए हैं ?

ब्राह्मण : और क्या जो है सो ?

बापूराव : फिर भाभी छुतहे के कपड़े क्यों नहीं धोती हैं ?

रंगू : अरे नादान बापू, बहुत बदबू आती है रे उससे । अभी तेरी शादी नहीं हुई है इसलिए तुझे छुतहा भी नहीं समझेगा । बेटे, मेरा इतना काम कर दे ।

बापूराव : अंधेरे उजाले के कोई भी काम कहिए, करूंगा पर इतना काम अपने से नहीं होगा ।

रंगू : बेहया मुआ कहीं का । अंधेरे में करने जैसे कौनसे काम कहती हूँ रे मैं तुझे ? पाजी कहीं का । हट पीछे । मेरा काम क्या मुझे भारी है । भैंस के सींग भैंस को कभी बोझ नहीं लगते । जा, गधा कहीं का । हट पीछे मैं खुद धोकर लाती हूँ ।

[रंगू अनमनी सी कपड़े इकट्ठा करती है । नदी पर जाकर धोने लगती है—। इसी समय धोंडी भी कपड़े धोने के लिए निकलती है]

बगडया : [धोंडी से] निचने के लिए देरी हो जायेगी । धोंडी उधर से आने के बाद कपड़े धोने के लिए जाने में क्या हर्ज है ?

धोंडी : जल्दी ही धो कर लाती हूँ । कपड़े सूखेंगे । अगर बारिश आए तो पहनने के लिए काम आएँगे । इसलिए कहती हूँ अभी धोकर आयी । तुम घर चलो ।

बगडया : अच्छा जा जल्दी, लेकिन धोने के बहाने आज भी रोटी गँवाना ।

धोंडी : अभी गई और अभी आयी ।

[कपड़े लेकर जाती है । ब्राह्मणों के ... देखकर पानी में से जाते हुए उस ...

रंगू : ग्ररी, ग्ररी, ग्ररी, महारीन, कहाँ चली ? छींटा उड़ेगा सुनाई नहीं देता शायद ?

धोंडी : सुनाई देता है मुझे, बहरी नहीं हूँ मैं । तुम्हारे पास जो पत्थर है, वही ग्रा रही हूँ मैं । कपड़े धोकर, निबाने के लिए जल्दी जाना है मुझे । तुम्हारा क्या ? ना काम ना धंधा, खाट से थाली पर और थाली से खाट पर। वैसी फुर्सत मुझे कहाँ है ? मुझे तो काम पर जाना ही पडेगा ।
[पत्थर के पास कपडे डालकर धोने की तैयारी में। उसी वक्त .]

रंगू : [चिल्लाकर] ग्ररेररेरे, ग्ररी ओ महारीन जरा जाति-पाँति का तो ख्याल कर ? निकट कपडे धोती हो, छींटा उड़ेगा या नहीं ! लगता है हया-शर्म सब कुछ घोलकर पी गई है। बहुत ही सिर चढी हो गई हो ।

धोंडी : महारनी सिर चढी तो क्या ब्राह्मणी पैरों तले पड़ी ।

रंगू : मैं क्यों पैरों तले गिरूँगी ?

धोंडी : मेरे सामने ग्रगर गिर जाती तो.... ।

रंगू : देख-देख ग्रछूत होकर ग्रनाप-शनाप बोलती है ग्रौर पडोस में ग्राकर ढिठाई से कपड़े धोती है । छीः ! ग्राखिर छींटा उड़ा ही दिया ना ! छुताह हो ही गया ना ? ग्रब फिर से कपड़े बदलने पडेंगे ग्रौर धोये हुए दुबारा धोने होंगे । मुई कितनी परेशानी इस महारीन के कारण । मुझे छुताह कर बहुत भला किया री तूने ।

धोंडी : [लावणी तर्ज—
कैसा पड़ा छुताह तुझपर हो । बतारी । ऐ बामणी मुझसे भिग्रारी की रडी वाजदी । झगड़ा करे जोर शोर से ॥ ध्रु ॥

चमक दमकती साडी पहने कंचुकी जरतारी ॥ बामणी ॥
तंग अंगी, माँग तिरछी, कुंकुम दिखे कोर मे ॥ १ ॥
गुलाब, केवडा, चमेली, मोगरा, तेल सुगंधी लगाके ॥
ठुमकत-ठुमकत चली रास्ते, खेलत आँचल से ॥ २ ॥
रूप सजाने अंग अधूरा केश भी ना शेष ॥ बामनी के ॥
इतनी मलाई इकट्ठा करने व्यापार किया किससे ॥ ३ ॥
खेत निगाये, तन निकाले, बेची लकडियाँ चार ॥ बामनी ॥
ऐसा सिनगार करने बता दे गाहक कौन मिला तुझसे ॥ ४ ॥
न मिले औरों को रूखी-सूखी छैल छबीली तुम नित्य ही ॥
खीर-पूरी, दूध मक्खन, मिलता है तुम्हें कहाँ से ॥ ५ ॥
भिखारिन को आण-बाण री चाहिए क्यों कर ॥ कहती ॥
करेगी क्या ठाट-बाट तुझसा पूछे अन्य भिखारिन से ॥ ६ ॥
जूड़ा बांधे उस पर केवडा, अंग पर ओढ़े शाल पसमी ॥
कौन कहेगा बता री तुझको शीलवान मुझसे ॥ ७ ॥

रंगू : बहुत अच्छा री ! लेकिन ध्यान मे रख इसका पाप तुझे भुगतना ही पड़ेगा। कल ही देखना कैसा मजा चखाती हूँ।

धोंडी : चली जा री जा ! जो बन पड़े सो कर। जा। मैं भी देख लूँगी। तुझसे बातें करने बैठूंगी तो चूल्हा नही जलेगा मेरे घर मे। [जाती है]

रंगू : अच्छा ! इस महारीन को सबक सिखाऊँगी तभी मेरा नाम रंगू ! चाहे जिस मार्ग से किसी भी ढंग से बदला लूँगी। वर्ना मुझे रंगू न कहना। [कपड़े लेकर घर आती है] चलो जी मैं कहती हूँ अजी चो। दरवाजा खुला है पर फिर भी बोलते क्यों नही [भीतर देखती है] घर मे होते हुए भी जवाब नही देते।

ब्राह्मण : अरी जो है सो काम में था जरा। सत्यनारायण की पोथी के पन्ने ठीक से लगा रहा था। इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जो है सो। क्या कहना है ?

रंगू : अजी ओ, सत्यानारायण रखिए बाजू में। पहले इधर आइए, देखो तो छुताह हुआ है छुताह !

ब्राह्मण : फिर बैठी रह बाहर हो आंगन में। घर में मत आ। जो है सो। वैसे ही चार दिन बाहर रह। पर क्यों री परसों ही तू बाहर बैठी थी और आज फिर कह रही है कि छुताह हुआ। ऐ स्साला छुताह हाथ धोकर तेरे पीछे पड़ा है। जो है सो।

रंगू : कमाल है आपकी समझ की अब तो। अजी जरा बाहर तो आइए। मै रजस्वला नहीं हूँ। मैं भ्रष्ट हुई।

बापू : अजी, भाभी किन के साथ भ्रष्ट हुई। अब समझ लीजिए कि गई जाति के बाहर।

रंगू : अरे गधे क्या बकता है ? मुझे महारीन ने स्पर्श किया है। दो-चार पानी के घड़े उंडेलने के लिए कह दो उनसे।

बापू : अजी भाई साहब, घर मे क्या कर रहे हो ? भाभी को भ्रष्ट किया गया। सत्यानाश हुआ, घर बिगड़ गया, जल्दी आइए !

रंगू : ठीक है मैं घर में आती हूँ। पर पहिले काम ?

ब्राह्मण : क्या ? छि: छि: मैं पवित्र वस्त्र मे हूँ और फिर दिनदहाड़े काम की बात। वाहऽ जो है सो, इसे शास्त्राधार नहीं है।

बापू : निकालिये एकाध मनचाहा पुराण का श्लोक। जब चाहे तब शास्त्राधार निकल ही आता है अपने लिए।

रंगू : होश में हो या नहीं ? काम का मतलब विषय वासना नहीं है। मेरा काम अर्थात् वह धोंड़ी और उसका पति दगडूया महार, उनको अच्छा सबक सिखाना है। यह मेरा दिया

काम है। मार कुछ और ही समझ बैठे ? यह धर्म नहीं है री माँ।

ब्राह्मण : देखा ! जो है सो वह नीच अछूत, नष्ट, भ्रष्ट चांडाल मेरी अर्धांगिनी को छूता है, हरामी जो है सो।

बापू : और यह भगवान पुल्लिंग बैठे ही छोड़ दिया इस महार ने।

ब्राह्मण : चुप बैठ बुद्धू कहीं का ? मेरी इतनी सुन्दर धर्मपत्नी को महारनी छू बैठी। पापिष्ठे, चांडालिनी !

रंगू : अरे नारायन हम ब्राह्मनों को अगर महारीन छूने लगी तो महारीन और ब्राह्मनी में अंतर ही क्या रह जाएगा ?

मान्या : आसान सवाल है चाची। कम से कम एक बालिश्त अंतर तो रहेगा ही। एक दूसरे से भिड़ेंगी थोड़े ही ?

रंगू : ऐसी बात नहीं है रे ! ब्राह्मनी को महारीन छूने लगी तो लोगों को कैसा लगेगा ?

मान्या : महारीन छूने लगे तो ब्राह्मनी फटी-टूटी नहीं लगेगी।

रंगू : मुए ब्राह्मनी क्या फटी-पुरानी चिथड़ों की बनी हुई समझा है तूने कि उसे सीने चला। महारीन ब्राह्मनी को अगर छू ले तो क्या इसमें दोष नहीं है ?

मान्या : इसमें दोष काहेका भाभी ? औरतों को मर्दों ने छुआ तो दोष है लेकिन औरत ही औरत को छू लें तो इसमें कौनसी हानि है ? बोलिए भला बैठे और काहे का दोष है ?

ब्राह्मण : मूर्ख, धरम डूबता है जो है सो…।

मान्या : धरम मत डुबाइए यह तो बनाए रखना ही होगा। धर्म तो पहाड़ के समान है, यह तो कभी भी नहीं डूबेगा।

रंगू : धर्म के लिए ही तो इन अछूतों को सबक सिखाना होगा। जाइए ना जी पटेल के पास।

ब्राह्मण : अरी जो है सो काम में था जरा। सत्यनारायण की पोथी के पन्ने ठीक से लगा रहा था। इधर-उधर बिखरे पड़े थे, जो है सो। क्या कहना है ?

रंगू : अजी ओ, सत्यानारायण रखिए बाजू में। पहले इधर आइए, देखो तो छुताह हुआ है छुताह !

ब्राह्मण : फिर बैठी रह बाहर ही आंगन में। घर में मत आ। जो है सो। वैसे ही चार दिन बाहर रह। पर क्यों री परसों ही तू बाहर बैठी थी और आज फिर कह रही है कि छुताह हुआ। ऐ स्साला छुताह हाथ धोकर तेरे पीछे पड़ा है। जो है सो।

रंगू : कमाल है आपकी समझ को अब तो। अजी जरा बाहर तो आइए। मैं रजस्वला नहीं हूँ। मैं भ्रष्ट हुई।

बापू : अजी, भाभी किन के साथ भ्रष्ट हुई। अब समझ लीजिए कि गई जाति के बाहर।

रंगू : अरे गधे क्या बकता है ? मुझे महारीन ने स्पर्श किया है ! दो-चार पानी के घड़े उंडेलने के लिए कह दो उनसे।

बापू : अजी भाई साहब, घर मे क्या कर रहे हो ? भाभी को भ्रष्ट किया गया। सत्यानाश हुआ, घर बिगड़ गया, जल्दी आइए !

रंगू : ठीक है मैं घर मे आती हूँ। पर पहिले काम ?

ब्राह्मण : क्या ? छि: छि: मैं पवित्र वस्त्र मे हूँ और फिर दिनदहाड़े काम की बात। वाहऽ जो है सो, इसे शास्त्राधार नही है।

बापू : निकालिये एकाध मनचाहा पुराण का श्लोक। जब चाहे तब शास्त्राधार निकल ही आता है अपने लिए।

रंगू : होश में हो या नही ? काम का मतलब विषय वासना नहीं है। मेरा काम अर्थात् वह धोंडी और उसका पति दगड्या महार, उनको अच्छा सबक सिखाना है। यह मेरा दिया

काम है। आप कुछ और ही समझ बैठे? वह अर्थ नही है री माँ।

ब्राह्मण : ऐसा! जो है सो वह नीच अछूत, नष्ट, खष्ट चांडाला मेरी अर्धांगिनी को छूता है, हरामी जो है सो।

बापू : और यह अर्धांग पुल्लिंग वैसे ही छोड़ दिया उस महार ने।

ब्राह्मण : चुप बैठ बुद्धू कहीं का? मेरी इतनी सुन्दर धर्मपत्नी को महारनी छू बैठी। पापीष्ट, चांडालिनी!

रंगू : अरे नारायण हम ब्राह्मणी को अगर महारीन छूने लगी तो महारीन और ब्राह्मणी में अंतर ही क्या रह जाएगा?

नान्या : आसान सवाल है चाची। कम से कम एक बालिश्त अंतर तो रहेगा ही। एक दूसरे से भिड़ेंगी थोड़े ही?

रंगू : ऐसी बात नही है रे! ब्राह्मणी को महारीन छूने लगी तो लोगों को कैसा लगेगा?

नान्या : महारीन छूने लगे तो ब्राह्मणी फटी-फुटी नही लगेंगी।

रंगू : मुए ब्राह्मणी क्या फटी-पुरानी चिथड़ों की बनी हुई समझा है तूने कि उसे सीने चला। महारीन ब्राह्मणी को अगर छू ले तो क्या इसमें दोष नही है?

नान्या : इसमें दोष काहेका भाभी? औरतों को मर्दों ने छुआ तो दोष है लेकिन औरत ही औरत को छू लें तो इसमें कौनसी हानि है? बोलिए भला कैसे और काहे का दोष है?

ब्राह्मण : मूर्ख, धरम डूबता है जो है सो·····।

नान्या : धरम मत डुबाइए वह तो बनाए रखना ही होगा। धर्म तो कद्दू के समान है, वह तो कभी भी नही डूबेगा।

रंगू : धर्म के लिए ही तो उन अछूतो को सबक सिखाना होगा। जाइए ना जी पटेल के पास।

ब्राह्मण : देखो यह चला मैं। मेरे लौट आने के बीच यदि कहीं से निमंत्रण आए तो नारायण को भिजवा देना, नहीं, भूल जायगी और सारा मामला चौपट हो जायगा।

नान्या : रसोई घर पर ही बना लें या निमंत्रण की राह देखें।

ब्राह्मण : रसोई किसलिए ? जो है सो ढूंढ निकालता हूं किसी न किसी के नाम ग्रह की अवकृपा। अरे पचांग तो ले आ, अपना हथियार घर पर छोड़कर बाहर कैसे जाऊँ ? (नान्या पंचाग लाकर देता है, वह जेब में रखकर) अरी, मैं निकला, पर जाने से पहले प्रयाण का मुहूर्त एक बार देख लेता हूं। जो है सो पचांग देखे बिना—

रंगू : हो आइए ना जी पहले। नहीं तो पटेल निकल जायेंगे कहीं बाहर और मुहूर्त पचांग में ही धरा का धरा रहेगा।

ब्राह्मण : ठीक है, चलता हूं। पर निमंत्रण आ जाये तो भूलना नहीं जो है सो—। [ब्राह्मण चलने लगता है इतने में दगड्या महार रास्ते पर खड़ा दिखाई पड़ता है ब्राह्मण अपने ही से] अरे, यही तो है दगड्या महार। क्यों रे अछूत छूना चाहता है क्या ढिठाई से रास्ते में खड़े रहकर। जानता नहीं मैं कौन हूं जो है सो—।

दगड्या : जानता हूं मैं। भीखमंगा हाथ पसारने वाला, झोली फैलाने वाला बम्मन है तू।

ब्राह्मण : क्या ? क्या—? क्या ? फिर से बोल बोल भला फिर से जो है सो।

दगड्या : दुशाले की आड़ में उत्तरीय की गठड़ी में, राघु पोपट जैसी चोंच वाली पगड़ी में और धोती की चपटी लपट में पाप छिपानेवाला चोर तू—।

ब्राह्मण : अपनी जुबान है जो चाहे सो कहे ले तू जो है सो लेकिन हम महान और श्रेष्ठ अवतारी पुरुष है अवतारी पुरुष। आजकल तुम लोगों को उन दो महारों ने[3] पागल बना दिया है इसी से तो तुम लोग हम ब्राह्मण जो है सो—।

दगड्या : काहे के तुम ब्राह्मण ? कौन लक्षण है ब्राह्मण के ?

ब्राह्मण : अरे नीच, नष्ट, खाष्ट राह रोके खड़ा है। अपनी छाया से मुझ पवित्र की काया भ्रष्ट करे है।

दगड्या : छाया करे भ्रष्ट भ्रम हृदय काहे धरे है। छाया से जले अंग कहां छाले बता अंग पर परे है।

ब्राह्मण : अरे नीच, नष्ट पापिष्ट, मेरे मार्ग में खड़ा रहकर मुझे अपनी छाया से छुतहा किया, अब कर उसका प्रायश्चित ! पाजी, हरामी महार कहीं का जो है सो।

दगड्या : अजी वामनदेवता, आप और छुतहा ? क्या कहते हैं ?

ब्राह्मण : मुझे नहीं तो क्या तुझे छुतहा हुआ ? बोल रे जो है सो।

दगड्या : अजी महाशय, मर्द को कहीं छुतहा आया है ?

ब्राह्मण : तो क्या जानवर को आयेगा ? भैंसे को या गधे को आयेगा जो है सो।

दगड्या : वाह रे वाह ! आप तो विद्वान शिरोमणी निकले छुतहा.... अजी कहीं मर्द भी छुतहा होगा ? औरतें छुतहा होती है। चार दिन वे अलग बैठती है। उन्हें रजस्वला कहते हैं।

ब्राह्मण : उसका ही नाम हमने छुतहा रखा है। छुतहा जो है सो प्राकृत नाम है, संस्कृत भाषा का नहीं।

दगड्या : अच्छा ! छुतहा अर्थात् रजस्वला यह हुआ ... और रजस्वला जब छुतहा बनता है तो वह होता

छुतहा में रजस्वला मिलायी जाय तो बनती है अस्पृश्यता और अस्पृश्यता से छुतहा अलग करने पर बनती है रजस्वला और रजस्वला छुतहा और अस्पृश्यता इनका गुणाकार किया जाये तो निर्माण होता है बहिष्कार, और बहिष्कार को छुतहे से भाग दिया जाये तो शेष रहता है ब्राह्मण और भागाकर बन जाती है ब्राह्मणी। यही है ना आपका अभिमत ? वाह ! ब्राह्मण देवता यह भी खूब रही।

ब्राह्मण : अब तो यह महार मुझे गधे से भी बढ़ चढ़कर लग रहा है।

दगड्या : इसीलिए तो मुझे छुतहा आता है और मैं छुतहा बन जाता हूं। और, मुझे अब यह बताइए ब्राह्मण देवता, मेरी छाया पड़ने पर आपको जो छुतहा हुआ, वह संस्कृत या प्राकृत ? अगर सच में हुआ हो तो आपका शरीर तो कहीं भी मुझे लाल बना दिखाई नहीं देता या कहीं कपड़े पर उस रंग का धब्बा तक नजर नहीं आता। इसीलिए तो कहता हूं कि आपको छुतहा हुआ है, यह झूठ कहते हो।

गजल

कहें मुझसे यह छुआछूत
इस जगत में है कहां ? नहीं कहां ॥ ध्रु ॥

है कहीं इस भूमि पर
ढूंढ सको वन पर्वत शिखर
है छिप कर बैठी कहां ? यहां कि वहां ॥ १ ॥

है यह क्या आप तत्त्व में
बैठी है या जलाशयों में
होगी तो कोई बतावे वह समां ॥ २ ॥

तेज तत्व मे है नही हे
ना हो तो प्रमाण कहाँ है ?
भाव अथवा अभाव एव क्या उसका रहा ॥ ३ ॥

वायु तत्व मे यदि मिलेगी
स्पर्श मात्र से जान पड़ेगी
जाने-माने कहो मुझसे ना या हाँ ॥ ४ ॥

आकाशस्त कभी यह चमकी हो
देख तुम कभी इस पाये हो
मुझे बतलाओ सो हो जहाँ ॥ ५ ।

ब्राह्मण : यो बुद्धि तुम्हारी शास्त्र वचन समझो तुम कैसे ? हम ब्राह्मण जानकार उसके नही कोई और वैसे। शास्त्रो और वेदो में से एक अक्षर तक कही तुम समझ सकोगे ?
[नान्या भागते दौड़ते आता है]

नान्या : चाचाजी, मुझे एक दगडा चाहिए, कलम खरीदनी है....

ब्राह्मण : जरा रुक जा नारायण। मुझे इस महार से बात करने दे। सुन रे अछूत ! शास्त्रो और वेदो का एक अक्षर तक तेरी समझ में क्या कभी आ सकता है ? इतने महान राज्य करने वाले शिवाजी महाराज के वंशज, उन्हें तक वेदों का अधिकार नही है जो है सो सब तुम जैसे महार अछूतों को कहाँ से रहेगा।

नान्या : सच है। तुझे हमारे वेद कहाँ से समझ में आयेंगे ? वह देववाणी, देवभाषा, जिसे संस्कृत कहते हैं वह भाषा अछूतों को कहाँ से समझ में आने वाली ? आँ .
से समझेंगे यह देववाणी ?

बगड्या : संस्कृत भाषा देवताओं ने बनाई तो क्या प्राकृत चोरों से आयी ?

ब्राह्मण : बिल्कुल। जो है सो संस्कृत भाषा महारों को कभी नही समझ में आनेवाली। वह तो केवल ब्राह्मणों को ही प्राप्त होगी जो है सो''''।

तान्या : बिल्कुल। क्या समझेंगे ये ? इनको वेद पठन का बिल्कुल अधिकार ही नही है।

बगड्या : अजी महोदय।

॥ पद ॥

वेदों पर अधिकार सभी का
शास्त्रों पर अधिकार ॥ धृ ॥
ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य होवे
या हों माग चमार ॥ सभी का ॥ १ ॥
जाति सब एक मनुज की
नर हो या नार ॥ सभी का ॥ २ ॥
पशु मुख से जो कहलावे
ज्ञानेश वेद हमारे चार ॥ सभी का ॥ ३ ॥
क्या भैंसा से भी है
हमारे निबुंद्ध महार ॥ सभी का ॥ ४ ॥

यजुर्वेद अध्याय ३६ के दूसरे मंत्र में स्पष्ट लिखा हुआ है कि

यथा मा वाचं कल्याणी मावदानी जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्या शूद्राय चार्यायच स्वाय चरणाय ॥

वेदों का ही वचन है यह फिर अधिकार का प्रश्न ही कहाँ पैदा होता है ?

नान्या : अरे अरे महार वेदमंत्र कहता है। इसकी जीभ काट डालो-
देखते क्या हो ? लाओ छुरी लाओ चलकर काट दो जीभ।
दो टुकड़े कर डालो। लाओ फिर से पेशवा का राज्य-छुरी
लाओ छुरी।

ब्राह्मण : करे शूद्र वेद उच्चार
पावे नरक मृत्यूपरान्त ना उपचार
कीड़ों से सड़े रहना कोढ़-छोड़ से काया भरना
यही मिले उपहार।

दगड्या : राई का भाव रात गयो डरे है शाप से तुमरे कौन देखो
परीक्षा अब शाप की न मरत अब अधमरा भी श्वान।

नान्या : इस अछूत की छाया से तुम्हारी पवित्रता भ्रष्ट हो गयी। उसका
भुगतान कर लो। फरियाद करो, डिक्री बजाओ, जेल में
डाल दो।

ब्राह्मण : क्यों रे, तुझे हमारी पवित्रता का कुछ भी लिहाज नहीं है
क्या ?

दगड्या : अजी महाशय, तुम्हारी इसी पवित्रता ने ही तो सर्वनाश
किया है।
लावणी। तर्ज....
जल गए तुम्हारे धरम पवित्रता के स्वांग
जो लगाये हम अछूतों की जिंदगी में आग॥ ध्रु ॥
ब्राह्मण श्रेष्ठ ठन गयी बात सच भी झुठलाया हा
अज्ञानी रहकर, अंधे होकर, अंधे बनकर
हीन समझे हम अपने को न आयी जाग॥ १ ॥
धरम बहाने हमें निगल गये अज्ञान कालिख पोत गये
अंग्रेज आये, विद्या लाये कालिख धोये
ब्राह्मण आये भाड़े फिर भी हमारे जाग उठे भाग॥ २

स्पर्श ने हमारे भ्रष्ट किया बानी ब्राह्मण की
कोई न जाने युगत निराली जाति विभाजन की
वानखेडे कहे जिस उसकी आंखें देख लेगी
ब्राह्मण घेरा जहां पडेगा देकर धरम की बांग ॥ ३ ॥

ब्राह्मण : धर्म के हम अधिकारी जाने महत्ता सब ससार ब्रह्म-पुत्र हम अविनाशी क्या जानो तुम महार ।

बगड्या : ब्रह्मदेव हैं पिता तुम्हारे देखो शास्त्र पुराण करे स्वपुत्री संग रति वाह री महत्ता की पहचान ।

गाम्या : अजी, देखते क्या हो ? यह महार तो हमारी लड़की का नाम ले रहा है । आज बहन का नाम ले रहा है कल मां का नाम लेगा और परसों किसका ? अकल से खुदा पहचानना । अरी चाची, जल्दी आ ऊपर क्या कर रही हो ? जल्दी चली आ, यह महार हमारी बेटियों का नाम ले रहा है भरी सड़क पर ।

रंगू : क्यों रे मुएऽ हमारी बहू-बेटियों का नाम लेता है ।

बगड्या : कौन कहता है सड़क पर पड़ी है, ऐसे रत्न अगर रास्ते पर पड़े हों तो चलता चोर उन्हें उठाकर ले जाएगा । मुझ जैसे की बात अलग है । वह रत्न रास्ते पर नहीं पड़ेगा । वह अंधेरे में ही चमकेगा और पंढरपुर के अनाथ-बालकाश्रम में अपने को प्रकाशमान करेगा ।

रंगू : नारायण, इस अछूत की बात मेरी समझ में ही नही आयी रे ? पंढरपुर के अनाथ बालकाश्रम का मतलब क्या है रे ?

ब्राह्मण : अरी, अपनी विधवा बहू बिटियां चातुर्मास में पंढरपुर जाकर रहती है और क्या ? वहां धर्म क्षेत्र में रहती है और पोथी पुराण पढ़ती है ।

दगड्या : अजी, सुनिए। सुन रहे हैं आप सब लोग। यह ब्राह्मण देवता अपनी ब्राह्मणी से ही झूठ बात करते हैं और लोगों से क्या सच बोलते होंगे? [ब्राह्मणी से] अजी ब्राह्मणीजी आपकी यहाँ की विधवा वहाँ सुहागन बन जाती हैं। काहे की पोथी बोथी पढ़ती है। वहाँ तो पेट बढ़ता है। यह ब्राह्मण देवता तो आपसे झूठ बोलते हैं।

मान्या : वाहवाह ! वाहवाह ! बहुत खूब। कितनी अच्छी बात है। विधवा से सुहागन एक कदम आगे ही। पंढरपुर में हमारी विधवाओं का विकास सुवाई-डेढी से होता है। क्यों रे अछूत, तुम्हारी विधवाएँ चातुर्मास में क्या करती है ?

रंगू : बता रे मुए। पाजी, मुझे बता महारीन क्या करती है पंढरपुर में चातुर्मास में ?

दगड्या : यह चातुर्मासी तुम्हारी ही बहू-बेटियों को रास आए। गाँव मे पाँच मास पूरे हुए कि शेष चातुर्मास पंढरपुर में। गाँव के ललचाये शास्त्रियों की वाचाल पुराण कथा का प्रसाद हजम करने के लिए चातुर्मास बहाना है, केवल बहाना। नव मास का प्रमाद पंढरपुर के अनाथ बालकाश्रम में फेंककर फिर से जवान घोडी के समान मुक्त संचार के लिए आजादी प्राप्त करना और मनःपूतं स्वाचरेत आचरण करना, इसे ही कहते हैं पंढरपुर क्षेत्र की चातुर्मासी।

रंगू : ओ माँ ! यह कैसी चातुर्मासी ? यह तो है पेट से।

मान्या : और क्या ? फिर इसमें अचरज की कौनसी बात है ? चाचो, मैं भी पेट से, तुम भी पेट से, हम सब पेट से ही तो आए हैं। पंढरपुर में ब्राह्मण विधवाओं के यदि पेट के बजाय पीठ से संतान उत्पन्न होती तो कहीं जाकर अधर्म की बात होती।

बोल रे अछूत, कैसी बात है मेरी। दे जवाब दे। कैसी बोलती बंद हो गई है अब ! मेरी दृष्टि से पंढरपुर में जाकर विधवा गर्भवती होती तो भी सिर ऊँचा ही है ना उनका।

ब्राह्मण : इन महारों की बोलती ऐसी ही बंद करनी चाहिए। नहीं तो सिरचंद हो जाएंगे ये और हमें अपमानित करते रहेंगे।

नाग्या : बेचारे अब बोलना ?

रंगू : अरे, इन महारों को है कहाँ इतनी अकल ! मांस मच्छ खाने वालों को भला कहीं अकल होती है ? निर्दय है यह लोग, ना इनके मन मे दया और ना ही करुणा।

ब्राह्मण : सच है महार जो है गो—

अति निष्ठुर जाति अछूत की
दयाभाव ना किसी का
मृत गोमांस भक्षण करे
ज्ञान इन्हें तीन टके का

दगड्या : ऐऽ ब्राह्मण देवता—

बात बढ़ा चढ़ा कर ना कहो ब्राह्मण। तुम भी तो मांसाहारी हो ॥ धृ ॥

चढा बली में बैल, अश्व को कर हलाल
प्रसाद भक्षण करे और फिर भी अहिंसक कहलायें ॥ १ ॥

ठोस-ठोंस दे यज्ञ में हो वध बकरे का
ब्राह्मण-ब्राह्मणी मिलकर सबही
दया, धर्म कह उसे खाते हैं ॥ २ ॥

नेपाल में तुमरे ब्राह्मण करें मृत गोमांस भक्षण
और मछलियों का सामिष भोजन जो बंगाली हो ॥ ३ ॥

गुरु वसिष्ठ महाब्राह्मण कहलाये, गोमांस घृत में तलकर
खाये । रामायण देखे हो ।

मान्या : एऽ हम गोमांस भक्षक हैं क्या ? नहीं । बिल्कुल नहीं । हम तो मृत गोमाता के पेट में का खाते हैं । गोरोजन कहते हैं उसे समझा ?

ब्राह्मण : क्या कहते हो नारायण ?

मान्या : मुझे एक बात सूझी ?

रंगू : कैसी बात ? जल्दी बता ना ।

मान्या : गाय के दूध में, दूध से बने दही में और दही से बने घी में इतनी लज्जत है तो गाय में कितनी होगी ?

ब्राह्मण : वाह ! यह क्या कहने की बात है ? लज्जत तो होगी ही । इसीलिए तो हमारे पूर्वज मधुपर्क तैयार करते थे ।

मान्या : मधुपर्क क्या चीज है ?

ब्राह्मण : [उसके कान में बात कहते हुए] बुद्धू कहीं का ? इतना भी नहीं जानता । घी में तले हुए गोमांस को मधुपर्क कहते हैं ।

मान्या : चाची, आज तक तू दूध और घी से पकवान बनाती थी पर अब घी के पेड़ के और दूध के पेड़ के पकवान बनाना, बहुत स्वादिष्ट बनेंगे हो ।

रंगू : अरे, पगले, मैंने यह नये पेड़ देखे तक नहीं हैं बाप
उनका पकवान कैसे बनाऊँ ?

नान्या : मैं बताता हूं चाची, सुन। उस पेड के पत्ते नहीं होते, हाथ होते हैं। उसकी ऊपरी छाल फेंक देते हैं, बीच का मगज बड़ा ही मजेदार रहता है। सभी तरकारियों में इस तरकारी का रंग अलग सा होता है गहरा केशरी बिल्कुल लाल—।

रंगू : अरे पागल यह तो मांस है।

नान्या : उसके दो निवाले खाकर देखना, बड़ा स्वादिष्ट होता है। चाचाजी, उस दिन कानडे शास्त्री के यहाँ बिना डंठल के फलों का आपने फलाहार लिया था। कानडे शास्त्री भी भरपेट खा रहे थे।

रंगू : तू तो पागल है नारायण, बिना डंठल के भी भला कहीं फल होता है।

नान्या : चाची बिना डंठल के फूल जैसे रुक्मिणी के मंदिर से गिरते थे वैसे ही शास्त्री ब्राह्मणों की थालियों में ये फल आकर गिरते हैं।

रंगू : लेकिन वह फल होता है किस आकार का। कुछ तो बताएगा? क्या पहचान है उसकी?

नान्या : चाची, उसका आवरण सफेद होता है। वह उबालना पड़ता है। फिर ऊपर का सफेद आवरण निकाल फेंकना होता है। फिर अंदर का माल सफेद ही सफेद बरफ जैसा। उसके अंदर पीले रंग का गोलाकार सुनहरे रंगवाला—। अगले सावित्री के उपवास के दिन तुम उसी का फलाहार करना?

रंगू : पर इस फल का पेड़ कहाँ होता है रे?

नान्या : उसका पेड़ कूड़े करकट में घूमता रहता है। वह पेड़ ही उसकी माँ है। और सुबह बाँग देता है, वह होता है उसका बाप।

रंगू : अरे, मूए, यह तो मुर्गी का अंडा है।

नान्या : उबालो तो बरतन रहे साफ और खाओ तो आदमी पहलवान का बने बाप। लड़ाई पर जायगा तो गाड़ आयेगा झंडा। बोलेगा तो फोड़ेगा भंडा ऐसा है महान यह अंडा। समझी ना अंडे की महानता चाची ? तुम नहीं समझोगी। उसकी महत्ता जानते हैं पिपळगांव पुराण-कथाकार शास्त्री। क्यों रे अछूत है तुम लोगों में कानाडे शास्त्री, नाकाडे पुराण कथा गायक और दाताडे कीर्तनकार। मदन मातंड चतुर्वेदी ? अंडा, ब्रांडी और रंडी इस त्रिमूर्ति दत्तात्रय का ध्यान कर तन्मय होने वाले आचार्य है यहाँ तुम लोगो में ? बोल, जवाब दे।

ब्राह्मण : अरे, कहाँ होंगे इनमें ? जो है सो। महारों ने छोड़ दी अपनी पहली रीत। पकडली नयी कुरीत। छोड़ अपने आचार ग्रंथ पढ लिखकर बडे बन रहे है, झगडा करने लगे हैं।

दगड्या : और तुम लोगों ने आचरण वैसे ही रखा है क्या ? ब्राह्मणों ने त्यागा है वेद प्रणीत आचार। ब्राह्मण होकर काटने लगे हैं ढोर। छोड आते हैं गाय बछड़े कमाई के द्वार।

नान्या : चाचाजी, कल इन महारों को देख लेंगे। अब बहुत देर हो गई है। सूर्य आ चुका है मध्याह्न फिर भी नहीं है खान-पान। समय हो चुका है भोजन का। अब जाने दो इसे।

ब्राह्मण : ठीक है अरे, अछूत समझ ले कल तेरी है मौत।

नान्या : चाचाजी की वाणी झूठ नहीं हो सकेगी, चाचाजी पंचांग देखकर दीजिए भला उन्हें एक शाप या कल तक रुके दीजिए। इसका और इसके परिवार का पूरा सत्यानाश फिर देंगे शाप इनको, घर चलिए। और अछूत जा, तू जाकर एकबार मिलकर आ अपने परिवार

दगडया : ठीक है कल तो कल। कल भी आपको आज की तरह ही नौ दो ग्यारह होना पड़ेगा समझे ?

नान्या : चाचाजी, मामला कुछ टेढा दिखता है। लेकिन पीछे मत हटना। कोई न कोई जुगत कर इन्हें हराना होगा। अगर यह महार मंत्र तंत्र से मरेगा तो दीजिए मंत्राक्ष अभिमंत्रित करके। मैं जाता हूं इनकी बस्ती में और फेंक आता हूं इन लोगो पर ताकि फट से मर जायेंगे यह। कुछ न कुछ उपाय तो करना ही होगा।

ब्राह्मण : चल घर। निकालता हूं कोई न कोई रास्ता।
[नान्या, रंगू और भट चले जाते है और पटाक्षेप]

अनुवाद : प्रा. त्र्यम्बक महाजन
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
औरंगाबाद

---

१. दो अंकों के मुक्त नाटक का एक अंक।
२. गीत रचना श्री वानखेडे।
३. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर और पतितपावनदास कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति शाहू।

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	धर्मान्तर [पूर्वार्द्ध]	: भीमराव करडक
हिन्दी अनुवाद :	धर्मान्तर [पूर्वार्द्ध]	: प्रा. वामन जगताप

प्रकाशक : आंबेडकरी जलसे
स्वरूप आणि कार्य
—ले. भीमराव करडक
अभिनव प्रकाशक
५३, गुरुनानकर मार्केट,
डॉ. आंबेडकर रोड, बम्बई, १४

मंचन : डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के जीवन कार्य के प्रचार एवं प्रसार हेतु लिखे गये 'जलसों' में से एक एकांक। हिन्दू धर्म की विषमता, अंधश्रद्धा, परम्परागत दासता और नयी सामाजिक चेतना का भान इस लेखन का कथ्य और मंचन का उद्देश्य रहा है। ग्रामीण और नागरी रंगमंच पर अनेक प्रयोग हुए है।

संपर्क : भीमराव करडक
बी. डी. डी. चाल नं. ४ ए, खोली क्रमांक ४१,
एम. एम वाघ मार्ग, नाय गांव,
दादर, बम्बई, १४

सुधारक : तो फिर बहुत ही अच्छी बात है। अब तो आपको इस सम्बन्ध मे विस्तार से कहने-सुनने की जरूरत नही। फिर तो धर्मान्तर की घोषणा को आपकी सम्मति होगी ही, है ना ?

भीमराव : न, न, न धर्मान्तर के सिलसिले मे बाबासाहब की यह घोषणा मुझे तनिक भी पसन्द नही, बिल्कुल पसन्द नही। दादासाहब, मैं बाबासाहब का एक सच्चा अनुयायी रहा हूं, तो भी उनकी इस घोषणा से मैं तनिक भी सहमत नहीं हूं। अजी, जिस धर्म मे हमारे पुरखों पूर्वजो ने जन्म लिया, उसी मे गति प्राप्त की, धर्म नहीं त्यागा। अपने पूर्वजों से इस प्रकार विरासत मे प्राप्त हिन्दू धर्म को छोड़कर पराये धर्म का स्वीकार करना कौनसी बुद्धिमानी है ? कौनसा फायदा है ? अजी, मैं तो कहता हू कि वर्तमान हिन्दू धर्म में ही रहकर मनुष्यता के अधिकार प्राप्ति का आन्दोलन जारी रखने में कौनसी आपत्ति है ? आज न सही, पर कल तो हम उन अधिकारो को प्राप्त कर ही लेंगे। बल्कि मैं कहता हूं कि हिन्दू धर्म में रहकर ही मनुष्यता के अधिकार प्राप्त करना मर्दानगी है। अच्छा, ठीक है साहब, पर मैं आपसे जानना चाहूगा कि धर्मान्तर कर कौनसी नयी चीज हम प्राप्त कर सकेंगे ?

सुधारक : देखिए भीमराव धर्मान्तर से निःसशय हमें लाभ होनेवाला है। वहां हमें समानता, सत्सग और अन्य भी बहुत कुछ सामाजिक और धार्मिक अधिकार प्राप्त होंगे, हिन्दू धर्म से अधिक अपनेपन का व्यवहार मिलेगा।

भीमराव : अर्थात् आपके कहने का मूल उद्देश्य और हेतु इतना ही है कि वहा हमें समानता, समता प्राप्त होगी, यही न ?

सुधारक : हां ! बिल्कुल यही, वहां हमें समता मिलेगी।

भीमराव : फिर क्या आप यह बता सकोगे कि किस धर्म में तो हमे समता मिलेगी ? देखिए, दादासाहब हम कोई भी धर्म स्वीकार करें, उसमें सम्पूर्ण समता मिलना असभव है। इसलिए कहता हूं कि धर्मान्तर से क्यों समता ! बोलो कहाँ मिलेगी समता ॥

अगर इन धर्मों का करें निरीक्षण—
मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन ॥
लेकिन इनमें भी पाएंगे विषमता
फिर धर्मान्तर से क्यो नाता ॥

मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध एवं जैन —यदि हम देखेंगे तो इन में से सभी धर्म में हमे विषमता मिलेगी फिर अपने इस जन्मजात प्रिय हिन्दू धर्म को क्यों त्याग दे ?

सुधारक : अब मैं आपसे पूछता हूं कि जिस धर्म को लेकर तुम प्रेम की और अच्छाई की दुहाई दे रहे हो, उस हिन्दू धर्म में रहते पूर्वजों से लेकर आज तक दलितों—अस्पृश्यों को कौन-कौन से सामाजिक तथा धार्मिक अधिकार प्राप्त हुए है ? और भविष्य में प्राप्त होंगे—इस बात का विश्वास, आश्वासन क्या तुम दे सकोगे ?

भीमराव : वे अधिकार हमे आज प्राप्त नही हो सके है, तो भी उनकी प्राप्ति के लिए हमे प्रयत्नशील रहकर अपना सामाजिक आन्दोलन चलाते हुए हिन्दुओं के साथ मानवी अधिकारों के लिए सतत संघर्षरत रहना चाहिए। आज हम लोग सत्याग्रह आदि अभियान चला रहे हैं, इसी से कुछ-कुछ सुधार तथा विकास दिखाई पड़ रहा है।

सुधारक : आप विस्तार से बताइए कि कहाँ-कहाँ कौन-कौन र-विकास हुआ है।

भीमराव : अजी, उदाहरण स्वरूप बताता हू कि आज पाठशालाओ में अस्पृश्य बच्चो को स्पृश्य सवर्ण बच्चों के साथ कक्षा में इकट्ठा विठाया जा रहा है। अब उच्चवर्गीय स्पृश्य हिन्दू छुआछूत की अपवित्रता को बिल्कुल नही मानते है। अपने विद्यार्थी जीवन काल मे ऐसे सुधार थे क्या ? इसी प्रकार आजकल सार्वजनिक कुए, हौज, पनघट जो लोकल बोर्ड के अधीन है—अस्पृश्यो को खुलेआम पानी भरने के अधिकार प्राप्त हो चुके है। और भी कई उदाहरण है।

सुधारक : पर यह सब किसने किया ? सरकार ने ! अस्पृश्यो के लिए जो भी सार्वजनिक स्थान उपलब्ध और खुले कर दिये गये हैं, उन सभी सार्वजनिक स्थानों पर सवर्ण हिन्दुओं ने बहिष्कार डाल दिया है। इसका एक ताजा उदाहरण बताता हू—परसो की घटना है—जिला नासिक, खाडकजांब गाँव-मे लोकल बोर्ड का एक कुंआ है, उस पर अस्पृश्यो को पानी भरने की मनाई स्पृश्यो ने की थी। सार्वजनिक कुआ और वह भी लोकल बोर्ड का अर्थात् सरकार के ही अधिकार में आने वाला, वहाँ औरो की तरह टैक्स भरने वाले अस्पृश्यो को पानी भरने की मनाई क्यो ? इसलिए इस ग्रामवासी अस्पृश्यो ने उस सार्वजनिक कुंए पर सत्याग्रह आरम्भ किया और अंत मे पानी प्राप्ति का अपना सामाजिक अधिकार सिद्ध किया ?

भीमराव : पर, आखिर अधिकार प्राप्त हुआ ही न ? धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा।

सुधारक : पर, आगे की बात तो सुनिए।

भीमराव : अच्छा, ठीक है, कहो, आगे क्या हुआ ?

सुधारक : आगे ऐसा हुआ कि जिस कुए पर अस्पृश्यो ने पानी भरना आरम्भ किया, सवर्ण हिन्दुओं ने उस से पानी भरना बद कर दिया, यह समझकर कि कुआ अपवित्र हो गया। जिसे हम महत्प्रयास से प्राप्त करेंगे, उसी को सवर्ण हिन्दु वर्ज्य करेंगे। ऐसी प्राप्ति मे क्या अर्थ ? और यही स्थिति अधिकांश स्कूलों की है—अस्पृश्यो के बच्चों को स्पृश्यों के बच्चों के साथ इकट्ठा बिठाते है, इसलिए अपने बच्चों को स्कूल में ही ना भेजो—इस स्थिति मे आप ही बताइये कि स्पृश्य-अस्पृश्यो की पटरी कैसे बैठ पायेगी ? हम एक-एक अधिकार अविरत सघर्ष से प्राप्त करें और उस प्रत्येक पर यदि सवर्ण हिन्दू बहिष्कार का ऐलान कर दे तो फिर वे अधिकार कुछ भी अर्थ नही रखते। इसीलिए सोचकर डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने धर्मान्तर की जालिम औषधि खोज निकाली है। हिन्दू धर्म के जाति-पाति के असाध्य रोग पर यही एकमात्र रामबाण उपाय है।

भीमराव : दादासाहब, आप जो कह रहे है, उसमे मैं सहमत हू। मेरी शंकाओ का समाधान हुआ। यह कितना कटु सत्य है कि सचमुच ही हम लोग अधिकार प्राप्त कर रहे है और सवर्ण उसे बहिष्कृत करते रहे है। हनुमान की पूंछ बढ़ती ही जाएगी, वह कभी समाप्त नही होगी। इन पाषाण-हृदयी सवर्ण हिन्दुओं को यत्किंचित भी खेद नही होने वाला है। आज ही मैंने पढ़ा कि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर अपनी घोषणा के अनुसार धर्मान्तर कर भी दे तो कोई बात नहीं। वे करें, कर सकते है, परन्तु हम हमारा सनातन वैदिक हिन्दू धर्म कदापि अपवित्र होने नही देंगे। लगता है कि उन्होने अपने अहम् की चरम सीमा लाघ दी है। एक ने भी नही कहा कि

डॉक्टर साहब इतनी जल्दी आप धर्मान्तर की भाषा न कीजिए। हम सनातनी लोगों की चित्तशुद्धि का प्रयास करेंगे। दादासाहब, सच ही, सवर्ण हिन्दुओं की ऐसी दर्पोक्ति का एक एक नमूना सुनने पर शरीर मे जैसे आग लग जाती है और लगता है कि एकबारगी—अतिशीघ्र धर्मान्तर सम्पन्न हो ही जाय। मेरा भ्रम दूर हो चुका है। पूर्वदूषित विचारों की धूल साफ हो चुकी है। अब तो आप जब कहें, मैं धर्मान्तर करने को तैयार हू।

सुधारक : शाबाश, भीमराव ! शाबाश ! सच कहू तुम्हें नेता न सही, पर एक कट्टर आम्बेडकर अनुयायी, एक सच्चे कार्यकर्ता के रूप मे सम्बोधित करने मे मुझे कोई आपत्ति नही होगी। भीमराव यह धर्मान्तर आप, मैं अथवा बाबासाहब तक ही सीमित होने वाला है इसलिए अस्पृश्य जनता को, अज्ञानी अनपढ़ भाइयो को जानकारी देनी चाहिए। यह जानकारी देने के लिए गाव की ओर चलें।

भीमराव : गाव के लोगों को डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के विचारों से प्रभावित कर, उन्हें स्वीकार करने के लिए हम तैयार कर सकते है। मगर सवाल है, पुराने ढर्रे के बूढ़े लोगों का। चलिए।

[स्थान चौपाल, एक छोटी-सी सभा, दादासाहब और भीमराव सभा स्थान पर पहुचते है, वक्ता हैं भीमराव]

"जयभीम भाइयो जयभीम। आ गये सब लोग ?"

एक व्यक्ति : हां ! लगभग सभी आ गये हैं।

भीमराव : और हमारी माँ-बहनें।

एक व्यक्ति : वे भी आयी हैं। पर केवल एक बुढ़िया नहीं आयी है।

भीमराव : क्यों नहीं आ पायी ? उसे बुलाओ।

एक व्यक्ति : न न, हम नहीं बुलायेंगे। वह बड़ी मुँहफट है। आप ही आवाज दीजिए और बुला लीजिए।

भीमराव : ठीक है। मौसी, अजी ओ मौसी ऽ ऽ।

मौसी : [प्रवेशोपरान्त] किसने आवाज दी ? किसने पुकारा मुझे ?

भीमराव : मौसी, मैंने बुलाया है तुम्हें।

मौसी : कौन सेना रुकी है मेरे बिना, बाबा ?

भीमराव : अजी मौसी, तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि आज इस स्थान पर अस्पृश्य बन्धुओं की सभा होनेवाली है।

मौसी : अरे बाबा, मुझे क्या लेना-देना है इस सम्भा से।

भीमराव : अजी मौसी, सम्भा नहीं, सभा कहो सभा।

मौसी : हाँ, हाँ, इसे मैं सम्भा ही कहती हूँ। मेरी जीभ तुम्हारी जैसी लचीली नहीं कि चाहे जैसी मोड़ सकूँ। पर क्यों रे बाबा, इतने सारे लोग होने के बावजूद भी मुझ अकेली से ऐसे क्या रुका हुआ है ?

बाबासाहब : सुनो माँ, अपने पूज्य नेता डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने धर्मान्तर की घोषणा की है।

मौसी : की होगी। उसमें क्या बिगड़ा ?

बाबासाहब : वैसी बात नहीं मौसी। आज की यह सभा बाबासाहब की धर्मान्तर की घोषणा को सम्मति देने के लिए ही है। यहाँ इकट्ठे हम सब अस्पृश्य डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की घोषणा के अनुसार धर्मान्तर करने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार की सम्मति इस सभा द्वारा बाबासाहब की उस घोषणा

को देना है और एक प्रस्ताव पारितकर उसको ओर भेजना है। इसलिए पूछ रहा हू कि धर्मान्तर के लिए तुम्हारी सम्मति है न ?

मौसी : अरे पर, कितने दिनो से चिल्ला रहे हो धर्मान्तर-धर्मान्तर। आखिर यह धर्मान्तर है क्या चीज। यही मेरी समझ मे नहीं आया।

भीमराव : दादासाहब, चार शब्द मुझे कहने की अनुमति दीजिए यह बुढ़िया तुम्हारी प्रमाण-भाषा नहीं समझ पाएगी। उसकी अपनी सीधी सरल भाषा में मैं उसे समझाने की कोशिश करता हू।

दादासाहब : ठीक है। मै तुम्हे इजाजत देता हू, कहो।

भीमराव : यह देखो मौसी, बात यह है कि धर्मान्तर माने आज हम जिस हिन्दू धर्म मे है, वह छोड़ना है और दूसरा धर्म अपनाना है। दूसरा कौन-सा धर्म अपनाना है, यह बाबासाहब निश्चित करेंगे। इसलिए आज केवल उनकी धर्मान्तर की घोषणा को सम्मति देनी है।

पद्य २ : तर्ज—सुनो-सुनो बनके

करो तैयारी धर्मान्तर की। बेड़ी तोड़ो गुलामी की ।। धृ ॥
सात करोड़ हिन्दू है, माना।
तो भी हम जीते क्यो मनुष्यता विना।
धर्म करो इस बात की, करो तैयारी धर्मान्तर की ॥

ऐ दलितो विचार करो
मनुष्यता का मार्ग धरो।
धर्म है अपमान की। करो तैयारी धर्मान्तर की ॥

स्वाभिमानी तुम प्रथम बनो।
उन्नति का यह मंत्र मानो
यह सीख भीमबाबा की। करो तैयारी धर्मान्तर की।।

दादासाहब : भाइयो और बहनो, आज हम सभी के लिए परीक्षा का वक्त आ गया है, हमेशा ही हम कहते आये हैं कि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर हमारे एकमात्र नेता है और उनके शब्दों के लिए हम प्राण भी न्यौछावर करेंगे, हमारा यह कथन कहा तक सही है, आज हमें यही आजमाना है।

मौसी : धर्मान्तर की घोषणा को केवल सम्मति ही देनी है न ? प्रत्यक्ष धर्म तो नहीं बदलना पड़ेगा न ?

दादासाहब : अजी मौसी, सम्मति का अर्थ है समर्थन। हम सभी लोग इस घोषणा का समर्थन करते हैं। इस प्रकार हमें वाकूली जवाब देना है।

मौसी : अच्छा, तो, तुम सब लीडरों की तैयारी है क्या ?

दादासाहब : हाँ, हम सब नेतागण धर्मान्तर के लिए तैयार हैं।

मौसी : झूठ, बिल्कुल झूठ। झूठ मत बोलो। क्या यह सच नहीं है कि आप में से बहुत से नेता इस धर्मान्तर के विरुद्ध है ?

दादासाहब : कुछ हद तक आपका कहना सत्य भी है। पर माँ, ऐसे ऐरे-गैरे नत्थू खैरे को पूछता ही कौन है। और उन्हें नेता भी तो कौन कहता है ? "विविधवृत्त" नामक एक साप्ताहिक पत्र ने लोगों की बहुत अच्छी पोल खोल दी है। अतः यह खयाल आप त्याग दें। अपने मोहल्ले की हद तक जो भी हो, वह कहें।

मौसी : अच्छा, ठीक है। छोड़ो इन बातों को [भीमराव की ओर अंगुली निर्देश कर] अपने इस नेता का क्या कहना है।

दादासाहब : अजी मौसी, पहले पहले वे भी कुछ डिग गये थे। धर्मान्तर से हिचक-भिझक रहे थे, पर उनकी शंकाओं का समाधान हो चुका है। अब कहीं वे ठिकाने आये है और वे धर्मान्तर प्रचारार्थ तयार हो गये हैं।

मौसी : क्यों जी लीडर साहब ?

भीमराव : [हास्य के साथ] हां मौसी, अब मैं अपना इरादा कदापि नही बदलूंगा। धर्मान्तर के लिए एक पैर पर तैयार हूं।

मौसी : न, न, न, ऐसा कुछ न कहो रे बाबा, तू निश्चिन्त हो अपने दोनों पैरो पर खड़ा रह। अगर एक पैर पर खड़ा रहा तो तेरा पैर अकड़ जाएगा।

भीमराव : मौसी, यह समय मजाक का नहीं है, सच ही हमें लज्जित होना चाहिए, गुलामी की यह बेड़ी तोड़ने के लिए हमें सदैव तैयार रहना चाहिए।

मौसी : अजी, पर मेहरबान साहब, हमारी कुछ शंका कुशंकाओं का समाधान होना चाहिए। जिस तरह दादासाहब की ओर से तुम्हारी शंकाओं का समाधान हुआ। ठीक उसी तरह जब तक हमारे कुछ प्रश्नों का समाधान हमें नहीं मिलेगा तब तक इस धर्मान्तर को हमारी सम्मति नहीं मिलेगी, समझे ?

भीमराव : हां, शंका समाधान करने के लिए मैं तैयार हूं। बोलो तुम्हारी क्या शंका है ? मैं उनका समाधान करने का प्रयत्न करूंगा।

मौसी : अरे बाबा, पूछें क्या ? इसमें पूर्व तू जोर-शोर से कह रहा था न कि "करो तैयारी धर्मान्तर की" और दूसरा क्या हां, बेड़ी तोड़ो, बेड़ी तोड़ो" किसने तुम्हें बेड़ी लगवाई है ? कहां है वह बेड़ी ? मुझे तो तुम्हारे हाथ बिल्कुल खुले ही दिखाई

दे रहे हैं, तो फिर खामखाह बेड़ी और हथकड़ी के नाम से क्यों चीख रहा है। और क्यों रे, मेरी लाज-लज्जा का ढिंढोरा, पीटकर तू कौन-कौन दौलत का अधिकारी होने वाला है ?

दादासाहब : मौसी, उसने व्यक्तिशः तुम्हारी लाज की बात नहीं की है। समाज की रग-रग में बसी लाचार प्रवृत्ति की लाज के अर्थ में उसने उस शब्द का प्रयोग किया है, इसलिए तुम बुरा मत मानो। बात दिल पर न लो। हाँ, यदि तुम्हारी कुछ शंकाएँ हों तो पूछ लेना।

मौसी : पर, मैं पूछती हूं, धर्मान्तर की बेकार की दौड़धूप करके तुम आखिर क्या प्राप्त करोगे, कम से कम यह तो मैं जानूं।

भीमराव : कहता हूं, सुनो।

पद ३ : धर्मान्तर सम अधिकार कारण ॥ ध्रु ॥

कह हिन्दू माना धर्मबंधन अब तक
तो फिर क्यों ऊँच-नीच का अन्तर ॥ धर्मान्तर ॥

न प्राप्त पूर्ण समता, अन्य धर्म शोधान्त
न समता, पर ममता, सो यह रूपान्तर ॥ धर्मान्तर ॥

इसलिए, जिस धर्म में हमें समानता-ममता मिलेगी समानता से व्यवहार होगा ऐसे ही धर्म में हम सब को जाना है।

मौसी : अरे, यह सब क्या तमाशा है ? कहते हैं "धर्मान्तर रूपान्तर और मतान्तर"—सब तर, तर, तर-चट मंगनी पट ब्याह। पर मैं डंके की चोट पर कहती हूं कि अगर यहाँ सभी लोग धर्मान्तर की इस घोषणा को सम्मति दें, पुरातन हिन्दू धर्म छोड़ अन्य किसी भी पराये धर्म में प्रवेश करने का [

किये हों तो करें, पर जता देती हूं कि मैं कदापि अपना यह हिन्दूधर्म नहीं छोड़ूंगी ।

पद ४ : न न छोड़ेंगे पल्लू धर्म का,
मम प्रिय हिन्दू धर्म का ॥ ध्रु ॥

इसी से हुआ जीवनयापन पूर्वजों का ।
आपस में रहे प्रेम से हम, जैसे रिश्ता अनुजों का ॥

लेंगे अधिकार, स्पृश्यों से कर, संघर्ष,
हम हिन्दूधर्मीय अन्त यही हमारा परामर्श ॥

न ऽ न ऽ ॥ १ ॥

अरे मेरे प्राण भी चले जाएं तो कोई हर्ज नहीं, पर इस हिन्दूधर्म से मैं अन्य किसी पराये धर्म में कदापि नहीं जाऊंगी । हमारे पूर्वज-दादा, परदादा, जो आज तक इस धर्म से चिपके रहे, क्या वे मूर्ख थे ? उन्होंने क्यों नहीं धर्म बदल दिया ? और अब तुम पैदा हुए हो, उनसे बुद्धिमान, पंडित, महापंडित । कहते हो—धर्मान्तर करो । क्यों ? किसलिए ? अरे, आजकल तुम लोग जगह-जगह पर सत्याग्रह आदि आन्दोलन कर ही रहे हो । यही आन्दोलन सत्याग्रह आगे के लिए जारी रखकर सवर्ण हिन्दुओं की ओर से अपने एक एक अधिकार, एक-एक मांग प्राप्त कर सकते हो । इसके लिए इतनी जल्दबाजी किसलिए ? भगोड़े कहीं के । हाथों में चूड़ियां पहनो चूड़ियां, हम औरतों जैसी । अरे, जिस धर्म में हमने जन्म लिया है, उस धर्म का तुम्हें कुछ भी अभिमान नहीं है । कुछ तो इन्सानियत से काम लो ? अपना परम सौभाग्य समझ लो कि हिन्दूधर्म में हमारा जन्म हुआ है । चातुर्वर्ण्य हिन्दूधर्म का कितना बड़ा भूषण है ।

भीमराव : मौसी, "जो धर्म इंसान को इंसान के रूप में मान्यता नहीं देता, वह धर्म, धर्म नही अपितु नरक है।" इस प्रकार स्वयं डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा है। जिस हिन्दूधर्म में अस्पृश्यों को नगण्य, निम्न एव तुच्छ मान सवर्ण हिन्दू उनको स्पर्श नही करते, अस्पृश्यो के केवल स्पर्श से उनका शरीर अपवित्र हो जाता है—ऐसे इस धर्म का गुणगान हम भला क्यों कर करें ? कहता हूं सुनो—

पद ५ : क्योंकर मानें हम भूषण धर्म का।
रंच न अधिकार हमें ।। ध्रु ।।

अगर पूर्वज हमारे हिन्दू धर्माभिमुख।
पर न लाभ हमें, सो दूषण हम विमुख ।। १ ।।

मौसी, इस धर्म में हम पैदा हुए इसलिए या इस धर्म में हमारे पूर्वज थे इसलिए तुम्हें इस धर्म का इतना अभिमान है। इस धर्म में अस्पृश्यों के लिए कौन सम्मानित स्थान है, जिससे कि तुम उसका गुणगान करने लग गई हो। इसलिए मेरा कहना है कि जिस धर्म में हमें कौड़ी की भी कीमत नही है, उसमें रहें किसलिए ?

मौसी : मैं मानती हूं कि इस हिन्दूधर्म में समानता नही है, परन्तु जिन अधिकारों के लिए आज हम संघर्षरत हैं, उन अधिकारो के लिए आज अथवा कल अगली पीढी स्वयं संघर्ष कर अधिकार प्राप्त करेगी। परन्तु धर्मान्तर और वह भी इस तरह के नगण्य, मामूली और किंचित अधिकार प्राप्ति के लिए ? न, ऐसा करना मुझे तो उचित नही दिख रहा है। किसी भी अन्य धर्म को स्वीकार करने की अपेक्षा, इसी धर्म में रहना कौन बुरा

है ? हिन्दूधर्म जैसा सर्वश्रेष्ठ और उत्तम धर्म इस पृथ्वी पर दूजा कोई नही है। इसलिए कहती हूं—

पद ६ : सर्वश्रेष्ठ हिन्दूधर्म अवनितल, दूजा न कोई।
अवनितल दूजा न कोई ॥ ध्रु ॥
महान् ऋषिमुनि पण्डित, प्रभु धरिजो अवतारइयों ॥
दहन तत्वावृत इही धर्म निर्मित योगी ॥ सर्वश्रेष्ठ । १ ॥
अरे पागलो, इस हिन्दूधर्म की पवित्रता श्रेष्ठता....कहाँ तक इसके गुण गिनावें, कोई पार नहीं। कहाँ तक गुण गायें। अरे, भक्तों को दर्शन देकर उनके उद्धार हेतु, इस धर्म में स्वयं परमेश्वर ने समय-समय पर अवतार धारण किया है। साधु, संत, महन्त, मुनि, योगी-वैरागी आदि सत्पुरुषों ने इस पवित्र हिन्दूधर्म में जन्म लिया है।

भीमराव : अच्छा, ठीक है, थोड़ी देर के लिए तुम्हारा कहना हम सही मानते हैं, पर यह बताओ कि इन सन्त, महन्तों में कोई अस्पृश्य सन्त, महन्त, साधु था ?

जोशी : क्यों नहीं ? थे, कथा-कीर्तन में मैंने सुना है कि चोखामेला, रैदास आदि पिछड़े वर्ग के ही थे। बहिष्कृत होते हुए भी उन्हें पांडुरंग का साक्षात्कार हुआ है। साक्षात्कार को तुमने क्या समझा है ? तुम हो किस ख्याल में ?

भीमराव : यह सत्य है न ! तो फिर परमेश्वर के मन्दिर में उन्हें मनाई क्यों की गई ? वे भी तो अन्य सवर्ण हिन्दू साधु, संतों की तरह पांडुरंग के एकनिष्ठ भक्त ही थे न ? माना कि उन जैसी भक्ति अथवा निष्ठा, श्रद्धा हम में नहीं है, इसलिए ये हमें मन्दिर प्रवेश नकारते हैं—नकारें। किन्तु जिस चोखा-मेला और रैदास की भक्ति, निष्ठा, श्रद्धा पांडुरंग की कसौटी

पर शतप्रतिशत खरी उतरी है, उन्हें मन्दिर-प्रवेश क्यों नहीं दिया गया ? उन्हें समता का अधिकार क्यों नहीं दिया गया ? अगर वह अधिकार नहीं दिया गया तो पांडुरंग का काम था कि अपने सवर्ण हिन्दू भक्तों का हृदय परिवर्तन खुद करते। अजी मौसी, कहने में कोई आपत्ति नहीं कि अस्पृश्यता के इस घृणित भाव से केवल सवर्ण हिन्दू ही नहीं, वरन् उनके तैंतीस करोड़ देवता भी सराबोर हैं। इन देवताओं के ये वंशज हिन्दू सनातनी क्या हमें समानता का अधिकार देने को तैयार होंगे ? इस प्रकार की आकांक्षा रखना भी मूर्खता का लक्षण है। इसलिए कहता हूं कि अब तक जो भी, और जितना भी हुआ सो हुआ, इसके आगे तो हिन्दूधर्म का फिजूल गुणगान करने का कुछ मतलब नहीं। इसलिए कहता हूं—

पद ७ : क्यों गुणगान फिजूल में, श्रेष्ठता का हिन्दूधर्म का ?
गर्दन झुके, कलंक अस्पृश्यता का ॥ धृ ॥

बहुत किया धार्मिक व्रत, उपोषण।
पर न धर्म-अधिकार उपभोग का। क्यों गुणगान ऽ ऽ
माना बहुपर्व तीर्थाटन। त्योहार ऽ ऽ ॥ १ ॥

तो भी वह भेद स्पृश्यता का ॥ क्यों गुणगानऽऽ
मौसी, अब तुम ही बता दो कि तुम उपवास,
व्रत वगैरह रखती हो ?

मौसी : प्रति सप्ताह दो उपवास करती हूं मैं। उसके अलावा प्रतिमाह की दो एकादशियां, आषाढ़ी व कार्तिकी एकादशी, शिवरात्रि, साप्ताहिक सोमवार व मंगलवार, इसी प्रकार श्रावण माह के चार-पांच सोमवार व शनिवार उपवास रखती हूं।

भीमराव : मौसी, सोमवार का उपवास श्रीशंकरजी का है न ?

मौसी : हाँ, श्रीशंकरजी का ही।

भीमराव : फिर रविवार को खंडोबा को तुमने क्यों त्याग दिया ?

मौसी : वह भी उपवास हमारे घर में है। मेरा भतीजा किसन नियमित रूप से प्रत्येक रविवार को खंडोबा का उपवास रखता है।

भीमराव : तो फिर बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार इन तीन दिनों ही ने ऐसा कौन भारी पाप किया है, जिसके लिए उन्हें तुमने इन उपवासों से अलग-थलग किया है।

मौसी : कैसा पाप ? मेरी बहू शुक्रवार का व्रत रखती है। हमारे घर में मेसुबाई का वास है और घर के लोग गुरुवार रखते हैं, वे सायखेडा के संभजीराव।

भीमराव : ठीक है, तुम श्रावणमाही शनिवार करती हो, भला क्यों ?

मौसी : अरे बाबा, एक साधू ने कहा है, मेरी कुंडली में साढ़े सात वर्ष का शनि आया है और उनके कहने के अनुसार मैं शनिवार करती हूं। शनिवार को हनुमानजी को मीठे तेल का दीया जलाती हूं।

भीमराव : इतनी निष्ठा, भक्ति से तुम देवताओं का भजन पूजन करती हो, धर्म के आदेश का पालन करती हो, तुम कभी तीर्थयात्रा के लिए जाती हो ?

मौसी : फिर ! जाती हूं। मैं पंढरपुर के विठोबा के दर्शनार्थ दो बार गयी। नासिक, त्र्यम्बकेश्वर, देहू, आलंदी आदि स्थानों के देवताओं का दर्शन भी कर आयी हूं।

भीमराव : तुमने इतने उपवास किये। तीर्थस्नान, गंगास्नान किया, परन्तु सवर्ण हिंदुओं ने कभी तुम्हारे साथ समानता का बर्ताव किया है ? तुम जिन तीर्थस्थलों पर गई थीं, वहाँ के मंदिरों में देवता के दर्शन का तुम्हें लाभ हुआ है ?

मौसी : हाँ, बिना दर्शन हम थोड़े ही वापस आएंगे ?

भीमराव : वहाँ के मंदिरों में तुम्हें प्रवेश मिला था ?

मौसी : मंदिरों में ? हम मंदिरों में कैसे जाएँ। अपनी जाति नीच है न ? इस कारण हमें चाहिए कि मर्यादा का उल्लंघन न करें।

भीमराव : यही। यही तो हिंदूधर्म की सीख है। उनके धर्मग्रन्थों में ही इस तरह के भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ, कनिष्ठ, ऊँच-नीच भेदाभेद पाये जाते हैं। इसलिए उस हिंदूधर्म का हम क्यों गुणगान करें, जो हमें कनिष्ठ व हीन, तुच्छ मानकर वैसा ही व्यवहार करता है।

मौसी : पर मैं पूछती हूँ कि धर्म की क्या आवश्यकता है ? धर्म किसलिए ? बल्कि मैं कहती हूँ कि धर्म मोक्ष का एक साधन है और किस धर्म की संस्कृति श्रेष्ठ है, यह अपनी-अपनी इच्छा व श्रद्धा का प्रश्न है। श्रद्धा के अनुसार मोक्ष प्राप्ति हेतु कोई हिंदू, कोई क्रिश्चियन, कोई मुसलमान, कोई पारसी आदि माध्यमों से परमेश्वर की आराधना करते हैं, और इन धर्मों में अलग-अलग तरीके से मोक्ष प्राप्ति के साधन बताये गये हैं। इन सब का निचोड़ एक ही है कि मन पूर्वक एकनिष्ठ श्रद्धा से परमात्मा की आराधना करो। इसलिए मैं कहती हूँ—

पद. ८ : प्रभु की भक्ति मुक्ति साधन।
अन्य अधिकारों से काज क्यों ? ॥ धृ ॥
निष्ठापूर्वक भक्ति कर।
भजन पूजन रत हो चरण कमलों पर ॥
पाओ मुक्ति, कर अतिभक्ति, प्रभु की ॥
प्रभु की भक्ति, मुक्ति ॥ १ ॥

बाबासाहब : लोगो, हालांकि धर्म का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है—और वह मोक्ष कदाचित हमारे उन अस्पृश्य संत, महन्त, साधुओं को प्राप्त भी हुआ हो, परन्तु उन पर लगे हुए अस्पृश्यता के कलंक को किसी ने दूर नहीं किया। इन संत, महन्तों की भक्ति पर अनेक विद्वान खुश तो हुए, पर उनके मंदिर प्रवेश के प्रश्न को किसी ने ललकारा नहीं, आह्वान नहीं किया अथवा पावन समझकर मंदिर के द्वार खोल नहीं सके। इन संत-महन्तों ने अस्पृश्य समाज में जन्म लेकर यद्यपि परमेश्वर-साक्षात्कार किया हो अथवा मोक्ष प्राप्ति को पहुँचे हों, परन्तु मरते दम तक वे अस्पृश्य, शूद्र के रूप में ही सम्बोधित हुए और अन्त तक अस्पृश्य ही बनकर रहे, इसलिए कहता हूँ—

पद ९ : बहिष्कृत सन्त चोखा, मातंग, रैदास
पतित थे, पर पावन प्रभु को ॥

पर क्यों न मंदिर प्रवेश इन प्रभु भक्तों को ॥ ध्रु ॥
गर हुआ प्रभु साक्षात्कार

तो भी सनातनियों से बहिष्कार ॥
फिर क्यों न "परधर्म" स्वीकार ? बहिष्कृत ॥ १ ॥

संत चोखा, संत रैदास, ऋषि मातंग इत्यादि संतों ने अस्पृश्य समाज में जन्म लिया, इस बात की गवाही स्वयं हिंदू धर्म-ग्रंथ देते हैं। इन संतों ने अपने भक्ति बल पर परमात्मा को वश किया और इस कारण वे परमात्मा के लिए पुनीत-पावन हो गये। परन्तु इन सनातनी सवर्ण हिंदुओं ने उन्हें पावन-पुनीत के रूप में मान्यता नहीं दी। यदि ऐसा होता तो इन संतों को हिन्दुओं के मंदिरों में प्रवेश मिल गया होता। परन्तु अचरज तो यह है कि उनके इस साक्षात्कार के प्रति

इनके मन में तनिक भी औत्सुक्य-निर्माण नहीं हुआ। इसी कारण डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के कथनानुसार अस्पृश्यों का मोक्ष है—"मानवता।" इसके अलावा दूजे मोक्ष से हमारा क्या परिचय ? सवर्ण हिन्दुओं की ओर से अस्पृश्यो की नित प्रताड़ना, अपमान ही इस इहलोक का प्रत्यक्ष नरक है। इस प्रताड़ना व अपमान की बुनियाद में यदि कोई कारण हो तो वह है सात करोड़ अस्पृश्यो की ओर स्पृश्यों द्वारा हीन दृष्टि से देखना और खुद को ऊँचे तबके के समझना। उनके मन का यह उच्च, श्रेष्ठ भाव वंश परम्परागत उनकी अगली संतान की नस-नस में दाय के रूप में संचित है। इसलिए कम से कम इस जन्म में तो उनके मन से यह उच्च, श्रेष्ठ का भाव निकलना दुष्कर है इसीलिए कहता हूँ—

पद १० : दिया दान हीनत्व का, हमें।
सात करोड़ अस्पृश्यों को ॥ दिया दान ॥ धृ ॥

धर्म जान बड़े ज्ञान। दे सिन्दूर अर्चना पत्थर को ॥
पर सत्वहीन, वेईमानी दलितो को ॥

इसलिए मैं कहता हूँ माँ, कि हम अस्पृश्यो द्वारा कितने भी अन्तःकरणपूर्वक भक्तिभाव, एकनिष्ठता से इन हिंदू देवी देवताओं की पूजा, अर्चना, व्रत, उपवास करने के बावजूद भी वे इन बातों को महत्व नहीं देंगे। सिंदूर, दीये, दिली आराधना, प्रार्थना से भी उन पत्थरों को हम पर दया नहीं आएगी और न ही वे पत्थर देवमूर्तियाँ पसीजेंगी। और फिर ये पत्थर भंग भी कैसे होंगे, मूलतः वे पत्थर ही हैं। मौसी पत्थरों को कभी पसीजते देखा है।

मौसी : दादासाहब, तुम्हारी बात की सचाई अब मैं समझ गई। तुम्हारी प्रत्येक बात मुझे भायी। अब मैं सब समझ चुकी हूँ। मेरी आँखें खुल गईं, तुम्हारी प्रत्येक बात मेरे मन में उतर गयी है। सारी सत्यता उजागर हुई है। इस संबंध की एक घटना—कहानी मैं तुम्हें बताती हूँ—एक दिन हुआ यह कि मैं सौदा-मसाला लाने के लिए नलबाजार गई थी।

भीमराव : अरे बाप रे ! इतनी दूर ? एकदम नलबाजार ? यहाँ आस-पास की किराने की दुकानें क्या बंद थी या तुम इसलिए गई थी कि यहाँ हड़ताल थी ?

मौसी : बंद भी नहीं था और न ही हड़ताल, इतनी दूर जाने का कारण यही था कि वहाँ मसाला शुद्ध व सस्ता मिलता है और हम देशस्तों की घाटी मसाला मनपसन्द देते हैं।

भीमराव : अच्छा, ठीक, आगे कहो—

मौसी : मैं सौदा, मसाला ले ही रही थी कि वहाँ मेरी बहन की लड़की और उसका पति दोनों आए।

भीमराव . [रोष और तुच्छता से चेहरा घुमाते हैं]

मौसी : क्यों रे बाबा, तेरी गर्दन इतनी टेढ़ी ?

भीमराव : अच्छा, पहले यह तो बता दो कि उसकी जाति कौन थी ?

मौसी : मैं क्यों छिपाऊँ, तुमसे ? वह मुसलमान था।

भीमराव : कौन ? मुसलमान ?

मौसी : हाँ, मुसलमान, मैं उसकी जाति क्यों छिपाऊँ।

भीमराव : तो क्या अपने इस अस्पृश्य समाज में मनुष्यों की कमी थी ?

मौसी : अरे बच्चो, अपनी ही जाति के एक युवक से उसका विवाह हो चुका था, पर वह ससुराल जाने के लिए हमेशा टालमटोल

करती रही। और यदि जोर-जबरदस्ती भेज भी दे तो वह फिर से मायके भाग आती। इस कारण पति तंग आकर उसको त्याग देता है व दूसरी शादी कर लेता है, अब वह उसके दो-तीन बच्चों की माँ बन चुकी है।

भीमराव : अच्छा, ठीक है, छोड़ो इन बातों को। उसकी मुलाकात के बारे में क्या हुआ, वह बता दो।

मौसी : तब मैंने कहा, अरी, धुरपद [द्रौपदी]? तब वह बोली, "क्यों री मौसी? तुम इधर कहाँ?" मैंने कहा, "मैं बाजार आयी हूँ।" इस तरह हम दोनों बातचीत कर रही थीं कि बीच में ही उसका मरद बोला, "कौन है यह बुढ़िया?" धुरपद ने कहा, "मेरी माँ की बड़ी बहन है।" फिर वह मुसलमान कुछ नहीं बोला। फिर मैंने कहा, "धुरपद, तुम कितने दिनों बाद मिल रही हो? कहाँ रहती हो? घर तो बता दो, जिससे कि कभी मुलाकात कर सकूँ।"

भीमराव : ऐसी बदफैल, माँ-बाप को कलंकित करने वाली लड़कियों का मुँह भी नहीं देखना चाहिए।

मौसी : अरे बाबा, ममता जो पागल है। इसी कारण मैं उन दोनों के पीछे-पीछे चली आयी। हम तीनों नागपाड़ा आये। वहाँ बहुतांश मुसलमानों की बस्ती। उसने अपना कमरा खोला, हम अन्दर दाखिल हुए। पहले मुझे संकोच हुआ कि अन्दर जाऊँ या नहीं? फिर ख्याल आया कि जहाँ मेरी धुरपद को मनाई नहीं है, वहाँ मुझे क्यों हो सकती है? मैं तो उसकी जन्मदात्री की बहन हूँ। मुझे लगा कि हिंदुओं की तरह मुसलमान भी छुआछूत मानते होंगे, पर यहाँ यह कुछ दिखाई नहीं दिया। बल्कि यहाँ मुझे बड़े ही

से पलंग पर बिठाया गया। मुझे भी समाधान हुआ कि मुसलमान कोई भी पराये धरम-जाति का क्यों न हो, पर मेरी बेटी ध्रुपद वहाँ सुखी व संतुष्ट जी रही है।

भीमराव : अच्छा, आगे ?

मौसी : आगे क्या ? रीति-रिवाज के अनुसार उसका पति उसे कहने लगा—"ए-फातम, तुम्हारी बुढ्ढी को टिनपॉट में चाय दे।" फातम-यह नाम सुन मुझे लगा कि ध्रुपद का यह बदला हुआ मुसलमानी नाम है। परन्तु उस मुसलमान आदमी पर मुझे बहुत गुस्सा आया, उसने मेरा अपमान किया।

भीमराव : इस बात पर कैसा क्रोध कि उसने अपने धर्मानुसार उसका नाम बदला ?

मौसी : नाम के लिए मुझे गुस्सा नहीं आया।

भीमराव . तो फिर, किस बात पर ?

मौसी . मैंने दिल में सोचा कि इनके घर में इतनी अच्छी-अच्छी कप बसियाँ होते हुए भी वह अपनी औरत से कहता है—"बुढ़िया को टिनपॉट में चाय दे।" इस टिनपॉट शब्द पर मुझे गुस्सा आया, मुझे अपमान-सा लगा। इसलिए मैं कहती हूँ कि धर्मान्तर अपने सभी प्रश्नों का हल नहीं। अगर ऐसा होता तो वह मुसलमान हमारे साथ समता से व्यवहार करता, पर तुम कहते हो कि पर-धर्म स्वीकार करने से हमें समता प्राप्त होगी।

भीमराव : मौसी, अपने सभी प्रश्नों के उत्तर अपने-आप मिलेंगे।

मौसी : वह कैसे ?

भीमराव : वह ऐसे, वह तुम्हारी बहन की बेटी और इसलिए तुम्हारी भी। उसने हिंदू धर्म त्याग दिया, धर्म भी बदल लिया। इसलिए धर्म के अनुसार उसका नाम भी बदल गया। जैसे उसने धर्म बदला वैसे तुमने हिंदू धर्म छोड़ दूसरा धर्म स्वीकारा क्या ?

मौसी : नही तो !

भीमराव : इसीलिए मैं कहता हूं, जब तक हम हिंदू धर्म से चिपके है, इस धर्म के तत्व माने जाते रहेंगे, तब तक सवर्ण हिंदू की तरह अन्य धर्मों के लोग भी हमें हीन, नीच दृष्टि से देखेंगे। मौसी, कल्पना करो, एक भोज पंक्ति लगी है—इस पंक्ति में मुझे बर्फी, दादासाहब को पेड़ा, माधवराव को लड्डू, कृष्णराव को जलेबी और उसी पंक्ति में बैठे तुम्हें अगर बेसन-भात दे दें तो तुम्हें कैसा लगेगा, तुम क्या कहोगी ?

मौसी : इस तरह का दूजाभाव बरतने वाले उस आदमी के नाक पर मैं घूंसे से चोट करूंगी, समझे। कौन ऐसा परसने वाला है, उसकी मैं बोलती बंद कर दूं।

भीमराव : मौसी, इस तरह का पंक्ति भेद तुम्हें मंजूर नही है न ! तब स्पृश्य हिंदू और हम उस एक ही हिंदू धर्म के अटूट अंग होते हुए भी कोई उच्च कोई नीच, कोई वरिष्ठ, कोई कनिष्ठ, यह भेदाभेद, दूजाभाव क्यों ?

मौसी : अब मैं समझ चुकी रे बाबा ! मेरी सभी शंकाओं का समाधान हुआ। धर्मान्तर के लिए अब मैं जब चाहो तैयार हूं। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर को जाकर कह दो कि अब धर्मान्तर के लिए विलम्ब न करें। मैंने आज से निश्चय किया है कि इसके बाद हिंदू देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना, उपवास आदि कुछ नही करूंगी।

एक श्रोता : [बीच में ही खड़ा होकर] मौसी के कथन से हम भी सहमत हैं, इसका हम समर्थन करते हैं। ये सब बातें हमारे मन में प्रतिबिम्बित हुई हैं। आज से हम भी प्रतिज्ञा करते हैं कि आज के बाद हिंदू धर्म, देवी-देवताओं और सिन्दूर पुते पत्थरों की पूजा नहीं करेंगे। उनके नाम व्रत, उपवास नहीं रखेंगे। घर-घर में बसी हुई मरीआई, मेमूआई, जोखाई, खंडोबा बहिरोबा, म्हसोबा इन सिन्दूरी पत्थरों का अब हमारे घरों में कोई स्थान नहीं होगा। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की धर्मान्तर की घोषणा अत्यंत महत्वपूर्ण और अस्पृश्यों के लिए उपयुक्त-फायदेमन्द है। उनकी आज्ञा-आदेश के साथ ही हम सब इस हिंदू धर्म को छोड़कर वे जो धर्म कहेंगे उसको स्वीकार करेंगे। दादासाहब यहाँ इकट्ठे हम सब लोगों की सहमति डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की धर्मान्तर घोषणा को है। पर क्योंजी, दादासाहब! धर्मान्तर कब सम्पन्न होगा?

दादासाहब : बहनो और भाइयो! आप सभी लोगों से समर्थन और सहमति सुनकर हमें अतीव आनंद हो रहा है। आज इतने दिनों से हम धर्मान्तर संबंधी जनमत/लोकमत तैयार करने हेतु प्रचार कार्य कर रहे हैं। हम महसूस कर रहे हैं कि इस अथक परिश्रम का फल हमें आज मिला। यद्यपि आप सभी लोगों की इच्छा है कि यह धर्मान्तर शीघ्र हो, पर यह नियोजित धर्मान्तर इक्के-दुक्के तक ही सीमित नहीं है, यह अभाप है। यह इक्के-दुक्के का काम नहीं है, बल्कि अखिल अस्पृश्य समाज संगठित हो, एक मत से तैयारी करे। १९३६ ई. में बम्बई-शहर में दि. ३१ मई और १ जून, इन दो दिनों सम्पूर्ण अस्पृश्यों की परिषद हुई। इस परिषद का मुख्य उद्देश्य यह था कि सात करोड़ पददलितों के नेता परम

पूज्य डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने अक्टूबर १९३५ में येवला में धर्मान्तर की घोषणा की—उसे सहमति प्रदान करना है। परिषद की ओर से हम परमपूज्य डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर को आश्वासन देते हैं कि आपकी घोषणा से यह सभा पूर्णतः सहमत है। आपकी आज्ञा से आप जो भी धर्म स्वीकार करेंगे, जिस वक्त भी कहेंगे, इस हिंदूधर्म को त्याग कर उस धर्म को स्वीकार करने के लिए हम तैयार हैं। इस परिषद में एक प्रस्ताव पारित कर डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर को भेज दिया गया है कि कौन धर्म में किस समय और किस तरह जाएँ—इस बात के लिए सभी अधिकार परिषद आपको प्रदान करती है। इसलिए मैं आपसे कहता हूँ कि इस संबंध में जल्दबाजी न करें। मित्रो, मेरे इस संदेश से कुछ शिक्षा ग्रहण कीजिए। यही मेरा अन्तिम संदेश है।

पद ११ : दृढ़ निश्चय यह हमारा। सहमति धर्मान्तर को।
त्याग हिंदू संस्कृति का। निश्चय यह सबका ॥ ध्रु ॥

कर तैयारी सामुदायिक।
खोज निकालेंगे धर्म लायक ॥

प्राप्त होंगे जहाँ समान हक।
देंगे मान्यता उसी धर्म को ॥ निश्चय यह सारा ॥

अनुवाद : प्रा. वामन जगताप
मिलिंद विज्ञान महाविद्यालय
[illegible]

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	जीवंत झाल्या सावल्या :	प्राचार्य म. भि चिटणीस
हिंदी अनुवाद :	जीवित हो उठी छायाएँ :	प्रा. घनश्याम डोंगरे

प्रकाशन : दलित रंगभूमि : सं. डॉ. भालचंद्र फड़के
भुरेश एजेन्सी,
२०५ शुक्रवार पेठ, पुणे, ४११००२

[१] आकाशवाणी केन्द्र, औरंगाबाद द्वारा प्रक्षेपण,
[२] दलित थिएटर, औरंगाबाद द्वारा मंचन

संपर्क : दीपक मनोहर चिटणीस,
द्वारा श्रीमती इंदुमती चिटणीस
'बोधी' ८, लक्ष्मी कॉलोनी, छावनी, औरंगाबाद-४३१००२

जीवित हो उठीं छायाएँ

☐ आचार्य, म. भि. चिटणीस

[गौतम काम्बले का आम्बेडकर कॉलोनी में स्थित ब्लॉक, कमरे में गौतम पताका, तोरण बनाने में मशगूल, सामने का द्वार खुला ही है। दूर से शहनाई की धुन—मित्र अनिल का अचानक प्रवेश]

अनिल : कमाल है गौतम, परीक्षा खत्म होकर चार दिन बीत गये, लेकिन तुम एक दिन भी अपने अड्डे पर आये नहीं! किस काम में बिजी हो?

गौतम : बैठो भी अनिल। हाँ, कुर्सी पर।

अनिल : [आश्चर्य से] अरे! यह कौनसा धंधा शुरू किया है तुमने? यह पताका, तोरण किसलिए बनाये जा रहे हैं? तुम्हारी कॉलोनी में यह शहनाई की धुन भी सुनाई दे रही है, कोई शुभकार्य है क्या?

गौतम : हाँ, महान् शुभकार्य है, हमारे ही घर में नहीं वरन् हमारी कॉलोनी के हर घर में।

अनिल : ऐसा लगता है कॉलोनी में कोई व्ही. आय. पी. का प्रोग्राम है। लेकिन हां, व्ही. आय. पी. और यह कॉलोनी के हर मकान में ? अब तो चुनाव का मौसम नहीं, कुछ अलग ही लग रहा है। यह व्ही आय. पी...

गौतम : हाँ, बिल्कुल अलग। तुम्हारे घर में आने वाले श्री गणेशजी के समान। हमारे लिए वह ईश्वर ही नहीं, ईश्वर से भी महान् है।

अनिल : क्या कहते हो, ईश्वर से भी महान। निराली ?
याने "मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्"

गौतम : असंख्य मूक छायाओं को उसने वाणी दी। गांव में पैर रखना भी जिन्हें कठिन था, उन्हें दुनिया भर घूमने की ताकत दी है।

अनिल : बड़ा महान् पुरुष लगता है यह। इतने चमत्कार करता है ऐसा कह रहे हो तो फिर हमने उसका नाम-धाम कैसे नहीं सुना ?

गौतम : सुना है, निश्चित रूप से सुना है। किंतु उसका स्मरण करने की कृतज्ञता तुम्हें महसूस नहीं हुई।

अनिल : ऐसे चिढ़कर नहीं बोलो गौतम। उसका नाम-धाम मालूम हो जाये तो, भाई हम भी तैयार हैं उसके दर्शन के लिए।
[पिछले कमरे से सिद्धनाग और विद्या का प्रवेश]

सिद्धनाग : गौतम, ऐसे पहेली क्यों बूझ रहा है ? स्पष्ट बता दे न उस महान् पुरुष का नाम। वह महापुरुष है—डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर और कल उनका जयंति-उत्सव है।

अनिल : हाँ, अब ध्यान में आया। कल डॉ. आम्बेडकर का जन्म दिन मनाने के लिए यह पताका, तोरण की तैयारी हो रही है।

गौतम : हाँ, और उसी त्योहार के लिए आये हैं मेरे दादा शितोजी काम्बले। अपना नाम बदलकर वे अब सिद्धनाग कहलाते हैं। हम उनको अण्णा कहते है। और यह उनकी बहन विठा। अण्णा यह मेरा मित्र अनिल कुलकर्णी।

अनिल : नमस्कार अण्णा।

सिद्धनाग :
विठा : [एक साथ] जयभीम।

अनिल : गौतम, तुमसे एक प्रश्न पूछना है ? पूछूँ........

गौतम : हाँ, पूछो।

अनिल : तुम बौद्ध ईश्वर को नहीं मानते ? फिर एक व्यक्ति को, डॉ. आम्बेडकर को ईश्वर-सा क्यों मानते हो ?

गौतम : यह प्रश्न है हर किसी की कृतज्ञता का, उत्कंठता का, एक बार हम हमारे जन्मदाताओं को भूल जाएँगे किंतु डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर को नहीं भूलेंगे। स्थितिशील हिंदू समाज में रहते हुए अगर हम डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर को भूल गये तो हमारी अधोगति फिर से शुरू होगी। तुम उच्चवर्णीय मेरे घर आते हो, मित्रता निभाते हो, मैं तुम्हारे साथ उच्च शिक्षा पा रहा हूँ, तुम्हारे जैसे सफेदपोश कपड़े पहनता हूँ, तुम्हारी जैसी भाषा बोलता हूँ, घर और समाज में मेरा व्यवहार सभ्यतापूर्ण है। इन सबका श्रेय बाबासाहब को है। बाबासाहब द्वारा किये हुए दलितों के मुक्तिसंग्राम को है। उस संग्राम में लड़े हुए और आज भी लड़नेवाले मेरे दादाजी को है।

सिद्धनाग : और हमारे जैसे ही किसी समय गांव में रहने वाले असंख्य लोगों को है। बाबासाहब के ने और प्रबल नेतृत्व ने ही हमें मुक्तिसंग्राम का बनाया है।

गौतम : अनिल इन छायायों के सैनिकों के रूप में हुए परिवर्तन को समझने के लिए अण्णा और विठा का एक-एक अनुभव तुम्हें सुनना होगा ।

अनिल : अण्णा, अपने अनुभव के कुछ किस्से आप बतायेंगे ?

सिद्धनाग : मेरे ही अनुभव लोक विलक्षण नहीं हैं, सभी दलितों को वैसे ही अनुभव हुए हैं और दुर्भाग्य से आज भी पग-पग पर हो रहे हैं ।

गौतम : अण्णा, आपकी युगयात्रा सुना ही डालो, बिल्कुल पहले से ।
[दो तीन सेकंड शांत, स्तब्ध वातावरण]

सिद्धनाग : शुरू से बिल्कुल शुरू से, किन्तु इतिहास ने हमारी दखल कहाँ ली है ? किसी एक तिथि को प्रारम्भ समझकर आगे बढ़ा जाए । हमारे इतिहास में उल्लेखनीय पहली तिथि है—महाड के सत्याग्रह की । इसके पूर्व लगभग ७०-७५ पीढ़ियाँ सड़ रही थी, गाँव के बाहर, मनु और उनके शिष्यों के शासन में....

[काल बीतने का सूचक स्वर]

[मनुस्मृति के निम्नलिखित अनुष्टुप का गंभीर एवं आखिरी शब्द तक अस्पष्ट स्वर में पठन—चौथे चरण से गम्भीर और आगे अस्पष्ट सुनाई पड़नेवाले स्वर में पठन । इस अस्पष्ट पठन के साथ धीरे-धीरे "हा माईबाप" पर सिद्धनाग और विठा के उद्‌गार जो नींद में से उद्‌गार होंगे]

"चाण्डाल श्वपचानां तू, बहिर्ग्रामात् प्रतिश्रय—
अपपात्राश्च कर्तव्या, धनमेषाम्न गर्दभम्"
"अछूतों तुम गाँव के बाहर अपनी बस्ती बसाओगे ।"
"हां माई-बाप"

"कुत्ते, गधे—यही तुम्हारा धन है।"
"हाँ माई-बाप।"
"लोहे के ही आभूषण पहनोगे"
"हाँ माई-बाप।"
"अछूत की पहचान कराने वाला चिह्न धारण करने पर ही तुम गांव में प्रवेश करोगे।"
"हाँ माई-बाप।"
"तुम्हारा स्पर्श अपवित्र, तुम्हारी छाया अपवित्र, तुम्हारा शब्द अपवित्र, तुम्हारा दर्शन अपवित्र।"
"हाँ-माई-बापऽऽहाँ माई-बाप"
हाँ-ऽ ऽ माईऽ ऽ बापऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ

सिद्धनाथ : हमारी इन्सानियत पैरों तले कुचलने वाले ये और इनके जैसे कई बंधनों ने केवल शरीर को ही नहीं, वरन् मन के इर्द-गिर्द भी घेरा डाल रखा था। बिना प्रतिकार के मालिक जैसा कहेगा वैसा काम करनेवाले, पैर की जूती के समान हम गांव की सीमा के पार अचेतन पड़े रहे पीढ़ी दर पीढ़ी से।

पिता : हमारी इस तरह की पीड़ितावस्था देखकर तेंतीस करोड़ देवताओं में से एक भी दयाघन ईश्वर को हमारे संकट निवारण हेतु अवतार धारण करने की इच्छा नहीं हुई। साधु-संतों ने भी सीमा में से ही झाँककर बड़ी भूत दया से हमें उपदेश दिया—
रखे जैसा साँई, रहिए तैसा भाई
और कोई नाँई उसके बिना।

सिद्धनाथ : इस असहाय अवस्था में आसभरी दृष्टि से [illegible] की ओर आँखें लगाकर बैठे थे। अचानक प्रकट

रहता, गांव की सीमा के पार की झोपड़ी में, गांव में नहीं। सदियों की दास्यवृत्ति से दबा हुआ हमारे अंतःकरण का मूकक्षोभ सुलगते ज्वालामुखी के समान उसमें प्रस्फुटित हुआ। वैरन रिक्तता में क्षयभूत हो जानेवाले हमारे उद्गार उसकी वाणी में गर्जना करने लगे। उस भीम गर्जना के प्रतिनाद से सह्याद्रि की खाई घुमडने लगी और २० मार्च १९२७ के शुभ दिन डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की प्रेरणा से स्वर्णाक्षरों में लिखे हुए हमारे इतिहास में एक नया पर्व शुरू हुआ। सनातनी हिन्दू के विरोध से न डरते हुए डंके की चोट पर "महाड" गांव में "चवदार" तालाब के पानी को सीना तानकर हमने स्पर्श किया।

पिता : यहीं से शुरू हुआ हमारा स्वतंत्रता तथा समानता का संग्राम। नौ महीने के बाद पुनः हम "चवदार" तालाब के सत्याग्रह के लिए 'महाड' गये। इस समय हमारे पुराने वैरी मनु की शासन-मनुस्मृति की होली होते हुए हमने देखी। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर को दलितों की क्रांति की खुलेआम घोषणा करते हुए सुना। उस अपूर्व अनुभव से हमारी युग-युग की मायूसी गल गई और नयी शक्ति तथा चेतना से हम गर्जना करते हुए, घोषणा देते हुए गाव लौटे। लौटते ही गांव के महाजनों द्वारा हमें चौपाल पर बुलाया गया। पहले गांव में गूंगे जानवरों समान रहनेवाले हम महाड की सभा में सुनी हुई घोषणाओं का उद्घोष करते हुए चौपाल पर पहुंचे।

[दो-चार सेकंड स्तब्धता]
फिर चौपाल के नजदीक आनेवाली आवाज।
"महाड़ सत्याग्रह की जय।"

"गांधीजी की जय।"
"लोकहितवादी की जय।"
"एकनाथ महाराज की जय"
"महात्मा फुले की जय।"
"डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की जय।"
इन घोषणाओं में स्त्रियों की आवाज शामिल है]
[चौपाल पर हरिपन्त, रामराव, तानाजी गावस्त इत्यादि ग्राम प्रमुख बैठे हुए हैं।]

हरिपंत : शायद ढेड़वाड़ा चिल्लाते हुए आया है। गाव के काम छोड़कर बेफिकर हो सभा में गये थे। एक-एक को देख लेंगे।

रामराव : पन्त, जरा सब्र से काम लो। चाल-ढाल जरा अलग दिख रही है। गाव के पुराने वट और पीपल के पेड़ों की बात छोड़ दीजिए पर घर के चबूतरे पर लगे पत्थरों ने भी सुना था कभी ऐसा अस्पृश्यों द्वारा किया गया—जयजयकार!
[बैठो-बैठो, नही खड़े ही रहेंगे।—जोहारऽऽजोहार समूह में से आवाज आती है।]

रामराव : आओ, आओ बैसकर! कहाँ हो आये चार दिन?

बूढ़ा दलित : महाड़ को सरकार, हमारी सभा थी।

हरिपन्त : तुम्हारी सभा थी? ऐसी कौनसी सभा थी तुम्हारी?

सिद्धनाग : समता की नीव डालने के लिए बाबासाहब ने यह सभा बुलाई थी।

रामराव : अरे भाई, नीव डालने तुम लोग तो गये ही थे, लेकिन औरतों को भी साथ लेकर गये थे। हमारी औरतों को हम कभी लेकर जाते है क्या सभा के लिए? ओ विठाबाई गाव की तू दाई। सभा में तेरा क्या काम था? अपने जाधव की बहू दो दिनों से अड़ी हुई थी उसका छुटकारा कौन करेगा?

बिठाबाई : जाधव की बहू का छुटकारा ? कर सकती थी तुम्हारी माँ-बहनें। तानाजीराव, बच्चे को उसकी माँ की कोख से निकालूगी मैं, और वह बोलना सीखते ही रास्ते मे खड़े रहकर मुझे कहेगा, 'ओ ढेड़नी दूर हो, छाया गिरेगी तेरी तो छूत होगी मुझे।'

तानाजी : फिर क्या स्पृश्य नारी की कोख से जन्म लेने वाले बच्चे तुझे प्रणाम करेंगे ? यह क्या न्याय है ?

बिठाबाई : न्याय नहीं तो और क्या ? तुम्हारी औरतों की कोख के बच्चे उतने ही पवित्र और हमारी कोख के सारे अपवित्र ? हमारी कोख से जन्म लेना पातक समझा जाता है। इसलिए बाबासाहब ने हमें बताया है कि पुरुषों के पहले तुम औरतों को ही सत्याग्रह करना चाहिए। अपनी कोख की सन्तान का यह कलंक धोना होगा, पाटना होगा।

हरिपन्त : औरतें और सत्याग्रह ? हाऽ हाऽ हा [हंसता है] और क्या कहा तुम्हारे बाबासाहब ने तुम्हें ?

बिठा : पता, उन्होंने कहा कि दलितों की पहचान की यह निशानी हाथों की यह कथील और चांदी की मोठ की चूड़ियाँ जो कोहनी तक चढ़ी रहती है—ये सब उतार देना चाहिए। देखो न सब निकाल फेंक दी है, और उन्होंने कहा है कि घर में अनिष्ट बात नहीं होने देना। मरे हुए जानवरों का मांस [गोश्त] नहीं पकाना चाहिए। लड़कों की तरह लड़कियों को भी शिक्षा दो।

हरिपन्त : और यह सब तुम करोगी ! जरा बोल रही हो [हंसता है] हाऽ हाऽ हा ! हजारों वर्षों से जो स्वाद जिस जबान को लगा है, वह कैसे छूटेगा ?

विठा : महाराज, हमारी कोख की सन्तानों को लगे हुए कलंक को नष्ट करने के लिए यह स्वाद ही क्या, हम अपने प्राण भी देने मे पीछे नहीं हटेंगी ।

रामराव : औरतों और बूढ़ों की बात छोड़ दो, लेकिन तुम जवानों ने क्या तय किया है शिल्या मास्टर ?

सिद्धनाग : हमने भी हमारी माँ-बहनों की तरह यही निश्चय किया है । सबसे पहले निश्चय किया है कि हम सब जन्म में समान है । इसलिए ब्राह्मण उच्च और ढेड़ माग नीच ये भेदाभेद हमें स्वीकार्य नही हैं । इसलिए जो ग्रंथ, जो रूढ़ियाँ यह भेदाभेद निर्माण करती है, वे हम नहीं मानेंगे ।

हरिपन्त : तुम्हारे मानने न मानने से होता क्या है ?

रामराव : अस्पृश्यता क्या दलितों की भावनाओं का प्रश्न है ? सवर्णों की मनोवृत्ति का भी विचार करना चाहिए ।

सिद्धनाग : रावसाहब, अस्पृश्यता निवारण के लिए सवर्णों की मनोवृत्ति अभी तक बदली नही है । क्या इसलिए सात करोड़ बंधुओं को अस्पृश्यता के नरक में सड़ते रहना होगा ?

रामराव : इस प्रकार के सामाजिक कार्य मे जल्दबाजी किस काम की ?

सिद्धनाग : अगर इस क्षेत्र मे जल्दबाजी नही होनी चाहिए तो अन्य किसी भी क्षेत्र में जल्दबाजी न करें । राजनीतिक मामले में तुम्हें चुनौती की दौड़-धूप चाहिए और सामाजिक तथा धार्मिक मामले में धीमे-धीमे रेंगना । शिष्टाचार का मुखौटा लिए बता रहे है कि इसी में सही प्रगति है । यह निरा आडम्बर है, निरा आडम्बर । हम इस आडम्बर को ठीक-ठीक समझ गये है ।

हरिपन्त : प्राचीन धार्मिकता को तोड़कर हिन्दू समाज को दुर्बल करने का विचार दिखता है तुम्हारा ।

सिद्धनाग : पंत, नहीं । हिन्दू समाज को दुर्बल नहीं करना है हमें । हमारे नेता कहते हैं कि अस्पृश्यता का निवारण हिन्दू समाज को समर्थ बनाने का मार्ग है । चातुर्वर्ण्य और असमानता का उच्छेदन कर के समाज की रचना एकवर्णत्व पर आ गयी तो हिन्दू समाज में नवचेतना आयेगी । अस्पृश्यता निवारण का यह कार्य जितना हमारे हित में है, उतना ही यह राष्ट्र के लिए भी हितकर है ।

हरिपन्त : यह किसके हित में है, यह निश्चित करनेवाले शिरोबा तुम कौन हो ? हिन्दू समाज को समर्थ बनाने का दायित्व हम सवर्णों का है । वर्ण-बाह्य लोगों का नहीं । चातुर्वर्ण्य नष्ट करो, अस्पृश्यता नष्ट करो, एकवर्णत्व निर्माण करो—इस सब का मतलब है संकरत्व [हायब्रीड] करो, फिर क्या रहा हिन्दू समाज में । चातुर्वर्ण्य तो हमारे हिन्दू समाज का मेरुदंड है । मिथ्या सभा से लाए हुए भूठे शब्द खतम करो । कल तक तुम्हीं लोग बोलते थे "मालिक जूते में रहने दो किन्तु टुकड़ा दो ।" तुम्हें आखिर चाहिए क्या ?

सिद्धनाग : हमें चाहिए स्वतन्त्रता, समता, बंधुत्व और न्याय ।

हरिपन्त : निरा मास्टर तू बीच में मत बोल । मेरा प्रश्न बापुओं दलितों से है ।

१ ला बंधुआ मजदूर : हमें भी यही चाहिए ।

हरिपन्त : यही का मतलब ?

२ रा बंधुआ मजदूर : मतलब, यहाँ बैठो, वहाँ रहो छाया पड़ेगी, दूर हटो जो दिखे उसे कमर तक झुक कर प्रणाम करो, ये नहीं चाहिए हमें ।
[एक बूढ़े बंधुआ की आवाज 'अरे अपनी औकात ध्यान में रखकर बोला]

१ ला बंधुआ मजदूर : चुप भी बैठो ना बाबा । मुर्दा उठाओ, चमड़ा निकालो, मृत मांस खाओ, जहाँ जो काम मिले, वह करो और भीख में रोटी मिले, उसे खाओ, यह नहीं चाहिए ।
[फिर से बूढ़े की आवाज "अरे सबूरी से काम लो ।]

२रा बंधुआ मजदूर : पनघट, मदरसा, मन्दिर खुले चाहिए हमें ।

बिठा : हाँ पनघट खुला चाहिए हमें, जिसे करने के लिए तुम्हें कानून से रोक नहीं, उसे करने के लिए हमें भी अधिकार है ।

१ला बंधुआ मजदूर : मनचाहे व्यवसाय करने का खुला रास्ता चाहिए हमें ।

२रा बंधुआ मजदूर : मानव-मानव में अलगाव नहीं चाहिए । भेद नहीं चाहिए । सब ईश्वर की सन्तान हैं, भाई-भाई हैं । एक स्पृश्य और दूसरा अस्पृश्य-ऐसा नहीं चाहिए ।

बिठा : नहीं चाहिए ऐसा । किसी पर भी कलंक नहीं चाहिए ।

रामराव : बहुत जबरदस्त मांगें हैं तुम्हारी ।

सिद्धनाग : मांगें कैसी ? जन्मसिद्ध अधिकार है वह हमारा ।

हरिपन्त : किन्तु वह दें या न दें, यह हमारे ही हाथ में है न आखिर ।

सिद्धनाग : तुम कौन हो देने न देनेवाले ? हमारे अधिकार हम ही प्राप्त कर लेंगे ।

हरिपन्त : यह तो लड़ाई की चाल दिखती है। किन्तु ध्यान में रखो, पचास झुग्गी-झोपड़ियों का तीन सौ कवेलू घरों से संग्राम है। महाजनों, यह लोग गाव से सम्बन्ध तोड़ना चाहते हैं। क्या उत्तर है तुम्हारा।

सावन्त : करो उनका नमक-पानी बन्द।

रामराव : रोटी भी बन्द।

४था महाजन : दुकान भी बन्द।

हरिपन्त : आज से गाव ने बहिष्कार किया है तुम्हारा, सम्पूर्ण बहिष्कार।

[दलितों में हड़बड़ी मच जाती है, बूढ़े की आवाज—"अरे क्या किया यह, अरे जीवित रहना है न इस गांव में?" एक-दो जवानों की आवाज—"चुप बैठो, चुप बैठो बूढ़े बाबा।"

सिद्धनाग : अरे डर क्यों रहे हो बहिष्कार से ? हजारों वर्ष निकल गये हैं बहिष्कार में। बाबासाहब ने हमारी आंखों की पलकें खोलकर देखना सिखाया है, तो चारों तरफ बहिष्कार ही नजर आ रहा है हमें। यह बहिष्कार आज का नहीं, बिल्कुल पुरातन काल से रहा है। फिर क्यों डरना इस बहिष्कार से। गाववालों से जिन्हें मिलकर रहना है, जिन्हें गुलामी में जीना है, जूठे-बासी टुकड़े तोड़ना है, वे पीछे रहें, गले में गुलामी के पट्टे का आभूषण पहनें। हम चले—

बोलो—"डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की जय।"

"समानता की जय।"

[कुछ नौजवान और कुछ स्त्रियाँ यही नारे लगाती हैं।]

सिद्धनाथ : बहिष्कार की इस लड़ाई में हम चार-पांच को गांव छोड़ना पड़ेगा, किन्तु नौजवानों का खून खौल रहा था। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की तेजस्वी प्रेरणा थी, उनका मन प्रज्वलित हुआ था। गांव-गांव के बहिष्कृत भारत में मानव के जन्मसिद्ध अधिकार की चेतना, स्वाभिमान, स्वावलंबन को जगाना था उन्हें। शासनकर्ता समाज बनाने की उनकी मंशा थी। बाबासाहब की सौगन्ध देकर कह रहे थे हम हमारे लोगों से।

विठा : मरे हुए जानवर की खाल मत उतारो, मृत मांस मत खाओ, ईश्वर, भूत-प्रेत पर विश्वास मत रखो, खंडोबा को अपनी संतान अर्पण मत करो, शादी-ब्याह, श्राद्ध के लिए कर्ज मत लो, बाल-विवाह मत करो, भूखे रहो मगर बच्चों को शिक्षा दो, समान नागरिक के अधिकार प्राप्त करते वक्त सवर्णों से मत डरो।"

सिद्धनाथ : और आश्चर्य यह कि जो सुधार के बीज स्पृश्य समाज में बोने के लिए सुधारकों को सौ साल लगे, वह हमारे अस्पृश्य समाज में एक ही पीढ़ी में जड़ धारण करने लगे। हमारे समाज में इस प्रकार परिवर्तन की गति का निर्माण करते हुए जो विरोध हो रहा था, वह हमारे अज्ञानी समाज से नहीं, बल्कि स्पृश्यों के पुराने मतानुयायियों से ही हो रहा था वह विरोध। [आगे के संवाद क्रम १ और २ के मायन्त की आवाज में तथा क्रम ३ और ४ के हरिपत की आवाज में]

पवार : [१] कौन है रे यह मेहमान? वामन की तरह स्वच्छ वस्त्र धारण किये शान में जा रहा है? गोधा ढेढ़ का लड़का है क्या? ढेढ़ और यह शान? अरे बच्चों, करो इसका धर्मा-मंदन। [सनई की धुन]

रावन्त : [२] किसकी है रे यह बारात ? ढेढ़ों की हो ना ? और भैंसे की बजाय घोड़े पर, अरे रीति-रिवाज भी कुछ हैं या नहीं ? खदेड़ो इस बारात को।
[सनई की धुन]

नारायण : [३] मकान पर कवेलू और वह भी अस्पृश्यों के। मत चलने दो, मत रहने दो यह सब अपने गांव में। पथराव करो इस कवेलू के मकान पर।

सिद्धनाग : साधारण से अधिकार और सुधार के लिए कदम-कदम पर और व्यक्तिशः लड़ना पड़ रहा था अस्पृश्यों को। परंतु इस लड़ाई में गति आ रही थी। मंदिर प्रवेश के लिए किये गये पर्वती के सत्याग्रह को, नासिक के कालाराम मंदिर प्रवेश के सत्याग्रहों को पैसों का साथ नहीं था। प्रचार के लिए समाचार पत्र नहीं थे, तब भी हिम्मत से चार साल तक चलाया हमने नासिक का सत्याग्रह। हम सब सनातनियों के पथराव का प्रसाद ले रहे थे और खटखटा रहे थे भगवान् के मंदिर के दरवाजे।

[दरवाजे पर दस्तक की आवाज, दूर से आती हुई घंटानाद, ध्वनि, दरवाजे के पास सिद्धनाग और विठा दो सत्याग्रही बैठे हैं।]

सिद्धनाग : अब कितने दिन खटखटाना है यह दरवाजा ? इन्सानों के ही नहीं, वरन् अखिल जीव-जाति के दयावान प्रभु, बड़प्पन धारण करने वाले प्रभु राम की अब तक नींद क्यों नहीं खुलती ?

विठा : और खुलने से फायदा भी क्या ? पुजारी पंडों का बंदी है यह भगवान् !

हरिपन्त : ओ शिरपाजी, पुजारी को दोष क्यों देते हो ? वे तो धर्म का पालन कर रहे हैं। श्री रामचंद्र ने क्या शम्बूक को तपश्चर्या करने दी ?

रावसाहब : पंत, अब वह समय नहीं रहा। समय बदल गया।

हरिपन्त : समय बदल गया इसलिए ? बदलने के लिए धर्म क्या फैशन है ? सनातन धर्म अपरिवर्तनीय है। शितोबा विठाबाई जाओ, चार नहीं दस वर्ष मंदिर के द्वार पर धरना दिये बैठे रहो, अस्पृश्यों के लिए नहीं खुलेंगे ये द्वार।

रावसाहब : शितोबा, सुनते हो इन सनातनियों का निश्चय ? इसलिए हमारा यह कहना है कि सत्याग्रह जैसे उतावलेपन की हरकतों से समाज में क्षोभ निर्माण करने के बजाय तुम अपने अलग मंदिर क्यों नहीं बनवाते ? हम चंदा देने के लिए तैयार हैं।

सिद्धनाथ : रावसाहब, हमारा उद्देश्य है समान नागरिकत्व। समान अधिकारों की स्थापना। मंदिर जितने स्पृश्यों के हैं, उतने ही हमारे भी हैं। हिंदू समाज में रहकर इन्सानियत प्राप्त करने का हमारा यह अंतिम प्रयत्न है। यहाँ से हमें निराश होकर लौटना पड़ा तो वह पराजय होगी तुम स्पृश्यों की। राव-साहब, आप कहते हैं कि अलग से मंदिर बांधकर देंगे हमें। वहीं करो दर्शन भगवान् का। इस पर मैं पूछता हूँ, सरकार ने पहले काले गोरों के लिए अलग-अलग डिब्बे रखे थे, उसके लिए आपने क्यों आवाज उठाई ? कारण केवल प्रवास पाना का नहीं था, प्रश्न था समानता का।
की कसौटी हमारे लिए मंदिर प्रवेश है

रावसाहब : समानता चाहिए न शिवोजी तुमको, फिर राजकारण के क्षेत्र में मतदान संघ अलग क्यों चाहिए तुमको ? वह यदि चलते हैं तो धर्म के क्षेत्र में अलग से मंदिर रहने से क्या हर्ज है ?

सिद्धनाथ : रावसाहब, शायद उसका भी हमें विचार करना होगा।

हरिपन्त : याने क्या करोगे तुम ?

सिद्धनाथ : मनन्व पंत, ईश्वर के मंदिर में गाय, बैलों को प्रवेश मिलता है और हमें रोक दिया जाता है। ऊँच-नीच, स्पृश्य-अस्पृश्य यह भेद मानते रहो तो हमें भी दूसरे मंदिर ढूंढने पड़ेंगे। वहाँ फिर भले ही ईश्वर न हो। पूज्य केवल इन्सानियत है।

हरिपन्त : जाओ ढूंढो वैसे मंदिर। क्यों राममंदिर का दरवाजा खटखटा रहे हो चार साल से ?

रावसाहब : बेटा, पंत उजलत में कह रहे होंगे, फिर भी धर्म के बारे में ऐसी निराशा ठीक नहीं। अजी प्राचीन काल में दुनिया में किसी भी दार्शनिक के मन को समानता का स्पर्श तक नहीं हुआ। हमारे उपनिषदकारों ने "सर्वं खलु इदं ब्रह्म" इस विश्वव्यापक समानता का और बंधुता का उद्घोष किया था।

सिद्धनाथ : इसलिए तो हमारे नेताओं को, बाबासाहब को लगता है कि यह प्राचीन विरासत ही समानता को जन्म देगी। किन्तु अनुभव दूसरा ही रहा है। विषमतावादी परंपरा ही शक्तिशाली हो रही है। इसका कारण "सर्वं खलु इदं ब्रह्म" यह तुम्हारा विज्ञान है, धर्म नहीं।

रावसाहब : फिर हमारा धर्म कौनसा है ?

सिद्धनाथ : तुम्हारा धर्म है, मंदिरों के दरवाजे बंद करने वाला, जाति-भेद, वर्णभेद और छुआछूत मानने वाला। यह खाओ, वह मत खाओ, यह करो, वह मत करो, ऐसे बंधनों की गठरी है यह। सात करोड़ आदिवासियों को जंगलों में खदेड़ा है इन बंधनों ने।

हरिभक्त : लेकिन जीने दिया न आखिर उनको। रेड इंडियन जैसा निष्कासन तो नहीं किया ना?

सिद्धनाथ : इन्सानियत को छोड़कर जिंदा रखने के बजाय हमारा निष्कासन किया होता तो वह ठीक होता।
[एक सत्याग्रही का दौड़ते हुए प्रवेश]

सत्याग्रही : अजी, सिद्धाजी, बाबासाहब का आदेश आया है कि सत्याग्रह वापस लो।

हरिभक्त : वाह, आनंद है, सिद्धोबा करो यहाँ से प्रस्थान।

रावसाहब : मैं यह नहीं कह रहा था क्या? यह सनातनी तुमको शरण आने वाले नहीं। तुम अपने धन से मंदिर बनाओ और लो दर्शन, फिर इन सनातनियों से लड़ने का कारण ही नहीं रहेगा।

हरिभक्त : हमसे लड़ने आओ या न आओ, लेकिन याद रखो, कलियुग में भी श्री रामचंद्र हमारे ही पक्ष में हैं, सनातनी की विजय निश्चित है।

सिद्धनाथ : इसका उत्तर तो समय ही देगा। विजय अधर्म की होगी या धर्म की। अभी बात थी तुम्हारा या तुम्हारी इन्सानियत की। तुमने जवाब नहीं दिया। अब हमारा मार्ग अलग हो गया है। रोटी मांगी थी, तुमने मारा पत्थर।

[गंभीर वातावरण-पूर्ण शांत]

मंदिर प्रवेश कर मूर्ति की पूजा करना हमारे सत्याग्रहियों का उद्देश्य नहीं था। यह सत्याग्रह सामाजिक समानता के लिए एक आंदोलन मात्र था। भारत में पहला और वह भी दलितों द्वारा किया हुआ। जातिभेद, वर्णभेद, स्पृश्य-अस्पृश्य भेद नष्ट कर प्रजातंत्र के अनुरूप ऐसी समाज-रचना करना ही इस सत्याग्रह के पीछे बाबासाहब का उद्देश्य था। उद्देश्य सफल नहीं हुआ। लेकिन उस दीर्घकाल के सत्याग्रह के कारण समाज में अधिकारों के लिए निरन्तर जूझते रहने की चेतना निर्माण हुई है। जब तक हम अज्ञानी थे, स्वाभिमान से प्रज्वलित नहीं थे तब तक परंपरा से प्राप्त सामाजिक स्तर को हमने खामोशी से स्वीकार किया था। लेकिन अब सामाजिक विषमता की वेदना हमें असह्य हो रही है। हमारी व्यक्तिगत कुशलता और पात्रता का नकार, केवल अस्पृश्य वर्ण में जन्म लेने के कारण हमें हीन समझना फिर धर्म में, क्यों और कितने दिनों तक सहते रहें, यह प्रश्न हमें लगातार झकझोरता रहा। आखिर हमारे नेता ने धर्मान्तर की घोषणा की। फिर भी धर्मान्तर के लिए उत्सुक हम जैसे असंख्य अनुयायियों को उन्होंने २० साल रोक रखा। केवल इसी हेतु कि राजनीतिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र की स्थापना से प्रभावित हिंदू समाज सामाजिक लोकतंत्र के मार्ग में द्रुत गति से कदम उठायेगा और हम बहिष्कृतों को आखिर अपने में शामिल कर लेगा। पिछले ३८ वर्षों से देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और न्याय मूल्यों की सामाजिक जीवन में स्थापना हो, इसीलिए महाड में बाबासाहब ने समर निशान लगाया था, उन्हीं चार महान् मानवी मूल्यों पर भारतीय संविधान के मंदिर का निर्माण करने का

गौतम : अर्थात् इन्सानियत छोड़कर घृणात्मक व्यवसाय कराने के लिये बाध्य करने वाला वह धर्म हमारे पुरखों ने अपनी इच्छा से थोड़े ही स्वीकारा होगा ? वह थोपा हुआ ही होगा ।

सिद्धनाथ : दूसरा फल, बौद्धधर्म स्वीकारते हुए बाबासाहब की भाँति मुझे भी अपना पुनर्जन्म हुआ-सा लगा । जिस धर्म में हम समान स्थान के लिए ३० वर्ष तक जूझते रहे, उस धर्म ने मन में जो हीनग्रन्थी और अबोध भय का भाव निर्माण किया था, नष्ट हुआ । हम स्वतंत्र हुए । हमारे जीवन में विकास होगा, ऐसा महसूस होने लगा । वह आनन्द मुझे शब्दों में नहीं बता सकता ।

अनिल : और क्या प्राप्त हुआ धर्मान्तर से ?

सिद्धनाथ : समाज में रहते हुए स्वतंत्र लोकतंत्र प्रधान भारतीय नागरिक कहलाने में पहले मुझे शर्म लगती थी । अपना व्यवहार ही बेईमानीपूर्ण लगता था, आशंका होती थी । वह आशंका और लज्जा समाप्त हो गई ।

अण्णा : माने क्या अण्णा ?

सिद्धनाथ : मतलब, लोकतन्त्र में हर व्यक्ति का समान मूल्य रहता है न ? फिर मैं खुद को लोकतन्त्र का नागरिक कहूं और समाज की दृष्टि में नीच रहूं—क्या यह स्थिति लज्जास्पद नहीं थी ? लोकतंत्र की परिभाषा में मनुष्य-मनुष्य में समानता मानी है । समानता का उद्घोष करना और प्रत्यक्ष व्यवहार में समाज के भीतर ऊँच-नीच इस प्रकार से जातिभेद स्वीकार करना ! क्या यह अप्रामाणिकता नहीं थी ?

अनिल : मैं इसे ठीक ढंग से पहले समझ नहीं सका था । लेकिन अण्णा, दलितों द्वारा धर्मान्तर करने पर भी उनके मार्ग पर लगा

हुआ अस्पृश्यता का कलंक कहाँ नष्ट हुआ है ? अब बौद्धों को अस्पृश्य समझ कर पहले जैसे ही झगड़े-बखेड़े होते हैं न ?

गौतम : लेकिन उसका कारण बौद्ध धर्म नहीं है, वरन् झगड़ा करने वाले स्पृश्यों की यह मनोवृत्ति ही जिम्मेदार है। इसलिए मैं कहता हूँ कि जब तक हमारे इर्द-गिर्द स्थितिशील हिन्दू समाज है, तब तक बाबासाहब को हमें भूलना नहीं चाहिए। बाबासाहब को भूलना हमारे लिए आत्मघातक होगा।

अनिल : हाँ, गौतम सच है यह और स्पृश्य समाज की दृष्टि से भी। क्या मैं फव्वारे बनाने में मदद करूँ ?

गौतम : बड़े शौक से।

[गौतम गुनगुनाता है....

दी चुनौती जगत को भीम ने, दी चुनौती जगत को
महाड के चवदार तालाब पर गाड़ अमर निशान को
पड़ी थी जो बस्ती सहस्र वर्षों से गांव के बाहर
वीरान उसके उद्धार हेतु दी हमारे भीम ने चुनौती।

अनुवाद : प्रा. घनश्याम डोंगरे
मिलिंद कला महाविद्यालय,
औरंगाबाद

---

१. "चवदार" तालाब का नाम है। इस तालाब का पानी सवर्ण लोग ही लेते थे। दलितों को इस तालाब से पानी लेने की मनाही थी। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने इस तालाब से पानी लेने का अधिकार दलितों को भी प्राप्त हो इसलिए सत्याग्रह किया था। प्रस्तुत तालाब 'महाड' में स्थित है।

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	मृत्युशाला	: डॉ. गंगाधर पानतावणे
हिन्दी अनुवाद :	मृत्युशाला	: डॉ. कमलाकर गंगावणे

प्रकाशक : प्रागतिक विचार संसद,
त्रैमासिक 'अस्मितादर्श'
३७, लक्ष्मी कॉलोनी, छावनी, औरंगाबाद
४३१००२

मंचन : आकाशवाणी केन्द्र औरंगाबाद
नाट्यशास्त्र विभाग,
मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

संपर्क : डॉ. गंगाधर पानतावने,
सम्पादक, अस्मितादर्श
३७, लक्ष्मी कॉलोनी, छावनी, औरंगाबाद-४३१००२

मृत्युशाला

□ डॉ. गंगाधर पानतावणे

[परदे के पीछे घंटानाद। घंटा बजते समय परदा खुलता है। घंटा बजाने वाला काला-कलूटा पुरुष रंगमंच पर दिखाई देता है। केवल उसके चेहरे पर प्रकाश है। घंटा बजने पर....]

कमंडलु : सज्जनो, मेरा नाम है कमंडलु। यह है मृत्युशाला। इसे हम मृत्युदेवता का दरबार कहते हैं। मैं हूं इस शाला का एक अंग, असंख्य लोगों की जानकारी मुझे रखनी पड़ती है, अर्थात् पृथ्वीलोक से आये हुए लोगों की जानकारी। यहां किसी को भी तुच्छता से नहीं देखा जाता। किसी का अहंकार, किसी की अमीरी, किसी की विद्वत्ता, किसी का अधिकार, यहां कुछ भी काम नहीं आता। पाप और पुण्य का विचार हम यहां गौण मानते हैं। यहां की आत्माओं की अपनी एक अलग ही दुनिया है। उसमें सभी आत्माएं रम जाती हैं। स्वयं को भूल जाती हैं। लेकिन एक मजे की बात बताऊं आपको—यहां आत्माएं कभी-कभी पृथ्वीलोक के जीवन पर विचार करने लगती हैं। गतकालीन कुछ याद करने लगती हैं। और फिर चिढ़ती हैं, गुस्सा

रोती हैं, हँसती है, लेकिन यह सब कुछ होता है एक क्षण के लिए। जीवन के बारे में विचार करना कितनी अजीब बात होती है। देखिए न, मृत्यु के बाद भी उसका स्मरण हो आता है। इस मृत्युशाला में कितनी घटनाएँ, कितने प्रसंग। अपने-आप में विचित्र। यहाँ अमीर हैं। गरीब है, डॉक्टर हैं, वकील हैं, प्राध्यापक है, अधिकारी हैं और न जाने कितने प्रकार के लोग हैं, किन्तु सबके सब अतृप्त। मैंने कहा न, उनकी अपनी एक दुनिया होती है। बिल्कुल सही है यह बात। [एक पक्षी आवाज करते हुए ऊपर से निकल जाता है] हाँ, अब मध्य रात्रि हो गई। मृत्युदेवता के पधारने का समय हो चुका है। [कमंडलु घंटा बजाता है और हथौड़ी कंधे पर रखकर खड़ा हो जाता है। इतने में घोड़े पर बैठने का अभिनय करते हुए एक काला-कलूटा व्यक्ति—मृत्युदेवता—प्रवेश करता है।

प्रविष्ट काला व्यक्ति—"मृत्युदेवता"—कोने में खड़ा हो जाता है। दूसरा काले रंग का व्यक्ति आकर घोड़े को अश्वशाला में ले जाने का अभिनय करते हुए वहाँ से निकल जाता है]

मृत्युदेवता : कमंडलु !

कमंडलु : आज्ञा, महाराज !

मृत्युदेवता : दरबार का कोई नया समाचार ?

कमंडलु : सब कुछ शांत है, महाराज ! यह कोई धरती पर के मदोन्मत्त राजा का दरबार थोड़े ही है, यह तो मृत्युदेवता का दरबार है।

मृत्युदेवता : बस...बस, यह तुम्हारी स्तुति हमें अक्सर मोह में खींचती है। हम पूछते हैं अतृप्त आत्माएं शांत हो गयीं न ?

कमंडलु : महाराज, पृथ्वी पर जिन्दगी बिताकर आनेवालों की आदतें एकदम थोड़े ही समाप्त होने वाली हैं। मृत्युशाला की आदतें लगने में कुछ समय तो लगेगा ही।

मृत्युदेवता : हां, हां, तुम्हारे कथन में निश्चय ही सचाई है। लेकिन कमंडलु, उन सबके मानस तो ठीक हैं न ? किसी के मन का संतुलन तो नहीं गया...?

कमंडलु : वैसे तकलीफ तो होती है कुछ को।

मृत्युदेवता : क्या कहते हैं वे ?

कमंडलु : महाराज, धरती उनके पैरों तले थी, ऐसी भावना है हरेक की। कुछ नमूने देखिए, महाराज ! उनमें से यह जो भूरी आंखों की ऊंची-सी दुबली-पतली औरत है ना, कहती है, मैं झांसी की रानी हूं। यह मुच्छड़ हृष्ट-पुष्ट आदमी कहता है, मैं बाजीराव पेशवा हूं और दिनभर ब्राह्मण भोज के बारे में बोलता रहता है। उनमें से एक कहता है, मैं गो-ब्राह्मण प्रतिपालक छत्रपति शिवाजी हूं। एक आग्रह करता है कि मुझे लोकमान्य तिलक कहो....[हंसते हुए] मजे की बात तो यह है कि यह सुधारवाला पोलिया कहता है, मैं कोंडाणा किल्ला हूं। किस किसको समझाया जाय ?

मृत्युदेवता : अच्छा, तो यह मृत्युशाला फिलहाल ऐसों का अजायबघर ही बन गयी है। इन सबकी विवरण-पत्रिका तो तैयार है न ?

कमंडलु : हां, महाराज [थोड़ा-सा परेशान होकर]

मृत्युदेवता : अन्दर से यह कैसी आवाज आ रही है ?

कमंडलु : पृथ्वीलोक का ईर्ष्या-द्वेष यहां फिर शुरू हो गया होगा।

मृत्युदेवता : लगता है, पृथ्वीलोक वाले अपने घमंड को अभी तक भूले नहीं है। शोर मचानेवालों को अभी दरबार मे हाजिर करो।

कमंडलु : जैसी आज्ञा, महाराज। [रंगमंच पर अंधेरा हो जाता है] फिर धीरे-धीरे प्रकाश। एक आसन पर मृत्युदेवता बैठे हैं। कमंडलु घंटा बजाता है। मयुरा तेजी से रंगमंच पर प्रवेश करती है।]

मृत्युदेवता : आइए, आपका स्वागत है।

मयुरा : पुरुषों द्वारा किया गया स्त्री का स्वागत मुझे पसन्द नहीं है।

मृत्युदेवता : आप किससे बात कर रही है....जानती है न ?

मयुरा : आप भी शायद जानते होंगे कि आप किससे बात कर रहे है। इस आत्मा को मयुरा के नाम से जानते है, ब्राह्मण-कुलोत्पन्ना। देवता के गोठण की, जिला रत्नागिरी की रहनेवाली....

मृत्युदेवता : आप अत्यंत सुखी परिवार की है न ?

मयुरा : जी हां, पिता शास्त्री। बाल्यावस्था तथा युवावस्था सुख में बीती। पिता धर्मपरायण थे, इसलिए सब कुछ ठीक रहा। हम छुआछूत मानते थे। दक्षिणा लेते थे। पोथीनिष्ठा हमने जिंदगीभर बनाये रखी। पूजापाठ आदि भी। कितने प्रवाह, कितने चढ़ाव-उतार। मैं बड़ी हो गयी तो मुझे माता-पिता ने एक कसाई के गले मे बांध दिया।

मृत्युदेवता : कसाई के गले मे ?

मथुरा : कसाई नहीं तो और क्या? ब्राह्मण होकर भी कसाई ही था वह। माता-पिता की इच्छा का विरोध न कर सकी मैं। चुपचाप पति को स्वीकार किया। वहाँ मुझे किसी से भी सुख प्राप्त नहीं हुआ। एकदम असहाय बन गयी। जलती रही। पति ने मेरी भावनाओं को महत्व नहीं दिया। सुसंस्कृत खानदान की थी मैं, इसलिए चुप रही। किसी को कभी कष्ट नहीं दिया मैंने।

मृत्युदेवता : फिर पति की हत्या क्यों की आपने ?

मथुरा : [सिसकियाँ भरती हुई] महाराज, ऐसा घटित हुआ है मेरे हाथ से। लेकिन करती भी क्या ? देव ब्राह्मणों के सामने ली गयी सौगंध को तोड़ देना पड़ा मुझे। सिवा इसके कोई दूसरा रास्ता ही नहीं था। मेरी छाती पर ही घर में एक औरत ले आये, मैं कैसे सहन करती यह सब ? [हिचकियाँ] एक ब्राह्मण कुल पुरुष ने नीच क्षत्रिय कुल की एक स्त्री से संबंध रखा और वह भी खुले आम, छि....छि....।

मृत्युदेवता : लेकिन क्षत्रीय....

मथुरा : क्या क्षत्रिय कुल हीन कुल नहीं होता ? क्या वर्ण-व्यवस्था का कोई अर्थ नहीं ? वर्ण-व्यवस्था निर्माण की भगवान् कृष्ण ने यह बात गीता में स्पष्ट कही है। कृष्ण थे यादव। लेकिन हम आर्यों ने उन्हें अपना मान लिया। इतनी विशाल दृष्टि और कहाँ मिलेगी ? कृष्ण की गीता मालूम है न आपको ? अर्जुन युद्ध नहीं करना चाहता था। वह बुद्धिमान था। उसे वर्ण-संकर का डर था। हमारे पति एक नीच वर्णवाली से संबंध रखने लगे थे। कितना घोर पाप।

मृत्युदेवता : पाप !

मयुरा : पाप नही तो और क्या ? सब कुछ अपनी आंखो मे देखा है मैंने। कुछ भी शेष नही रखा था उन्होंने।

मृत्युदेवता : [कमडलु से] कमडलु, मयुराबाई के पति को बुलाओ। [कमडलु घंटा बजाता है। भाल पर टीका, धोती, आंखो पर ऐनक, सिर पर टोपी, कोट पहने व्यक्ति का प्रवेश]

मृत्युदेवता : मयुराबाई, पहचनती हैं न इन्हे ? [मयुराबाई चुप रहती है]

व्यक्ति . लेकिन मैं पहचानता हूं इसे। मेरी धर्मपत्नी। इसी ने हत्या की थी मेरी। मैंने कितना सहन किया। लेकिन महाराज, सहनशक्ति की भी कोई सीमा होती है....इसने. ..

मयुरा [गुस्से मे] आपकी हरकते चलने नही दी, यही न ? हीन खानदान की औरत के साथ कुछ करते समय कुछ भी बुरा कैसे नही महसूस हुआ आपको ?

नरसोपंत . अरे रे, यह क्या बोल रही हो मयू। वह असहाय प्रौढ़ औरत....

मयुरा : शरीर सबध के लिए उम्र की कोई शर्त नही होती। कितनी धूल झोंकोगे मेरी आंखो मे।

नरसोपंत : उससे मेरा शरीर सबध ? मेरे दोस्त की वह विधवा बहन थी। आश्रम मे भिजवाने के लिए मैं उसे अपने घर ले आया। इसमे मेरा क्या अपराध ? तुम तो जानती ही हो, उसका अपना नजदीक का कोई रिश्तेदार नही था।

मयुरा : इसका मतलब यह तो नहीं था न कि आप रात्रि के समय उसके कमरे मे जाते रहें।

नरसोपंत : कितना झूठ बोलती हो तुम। तुम्हारे कमरे के सिवा और किसी औरत के कमरे मे कभी प्रवेश नही किया मैंने। तुम्हारी कसम लेकर कहता हूं।

मथुरा : झूठ ! एकदम झूठ ! मृत्यु के बाद भी मेरा मजाक। मेरा भाग्य ही बुरा है।

मृत्युदेवता : यहाँ भाग्य की बात कहने से कोई लाभ नहीं मथुराबाई।

मथुरा : महाराज, मेरे पिताजी ने कभी महार-मांग की छाया तक नहीं पड़ने दी मुझ पर। मैंने भी ऐसा नहीं किया। और इन्होंने ? इन्होंने किसी भी प्रकार के बंधन का पालन नहीं किया। अपना अस्तित्व, अपना व्यक्तित्व, अपना धर्म, अपना कर्तव्य, किसी की भी चिंता नहीं की इन्होंने। इतना ही नहीं, अछूत के एक लड़के को संस्कृत पढ़ायी इन्होंने।

नरसोपंत : महार भी मानव ही होता है न। क्या एकनाथ महाराज ने महार के बच्चे को कंधे पर नहीं उठा लिया था ?

मृत्युदेवता : नहीं, महार के बच्चे को कभी कंधे पर नहीं उठाया एकनाथ ने, यह घटना झूठ है।

नरसोपंत : वह कुछ भी हो, किंतु महार के बच्चे को मैंने संस्कृत पढ़ायी है। इसमें किसी भी प्रकार की गलती नहीं लगती मुझे।

मथुरा : अछूत के बच्चे को संस्कृत पढ़ाकर हमारी देववाणी को भ्रष्ट किया है आपने।

नरसोपंत : संस्कृत पढ़ाने से क्या वह भाषा भ्रष्ट हो सकती है ? फिर भ्रष्ट भाषा को देववाणी कैसे कहेंगे ? कितनी झूठी कल्पना है तुम्हारी।

मृत्युदेवता : धर्मदत्त; इस विषय में सम्बन्धित मायनाक को दरबार में हाजिर करो।

धर्मदत्त : जो आज्ञा महाराज। [धर्मदत्त घंटा बजाता है, घंटा बजते ही एक काला व्यक्ति मायनाक उम्र पचपन, प्रणाम करते हुए प्रवेश करता है]

सायनाक : जोहार माई बाप जोहार।

मृत्युदेवता . हमारे दरबार में यह जोहार मंजूर नहीं है हमें।

सायनाक : गलती हो गयी महाराज। क्षमा कीजिये, बेअदबी के लिए सजा भोगने को मैं तैयार हूँ। सजा भोगने की आदत है महाराज हमें।

मृत्युदेवता : लेकिन सजा देने की आदत नहीं है इस दरबार को। मैंने सुना है, तुमसे कोई गुनाह हुआ है। संस्कृत देवभाषा है, यह जानते हो तुम ?

सायनाक . जी हाँ, महाराज हमें ऐसा बताया गया है।

मृत्युदेवता : मथुराबाई का आरोप है कि नरसोपत से तुमने संस्कृत सीख कर, मनु के कानून को भंग किया है। तुम्हारा क्या कहना है ?

मथुरा : वह क्या कहेगा ? मैं कहती हूँ, ब्राह्मण बनना चाहता था यह। कलियुग में शूद्रों के लिए बंधन ही नहीं रहा है, लेकिन कौआ कभी हंस थोड़े ही बन सकता है।

सायनाक : माताजी, आप कठोर बोल रही है। कितनी निर्दयता से आघात कर रही हैं ?

मथुरा : निर्दयता ! शूद्रों के साथ कभी सौम्य भाषा बोली जाती है ?

मृत्युदेवता : मथुराबाई हमारे दरबार में सब आत्माओं को समान स्थान है। ब्राह्मण और शूद्र में भेद नहीं मानते हम। सायनाक मथुराबाई द्वारा लगाये गये आरोपों के संबंध में कुछ कहना है तुम्हें ?

सायनाक : महाराज, ज्ञानपिपासा पर क्या कभी बंधन लगाया जा सकता है ? संस्कृत पढने की, सीखने की खूब इच्छा थी मेरी। नरसोपंत मिले मुझे। धन्य हो गया मैं। ज्ञान के द्वार बंद थे। मेरे माता-पिता के लिए वेद शब्द वर्ज्य था। वेद शब्द कान में पड़ने से ही कड़ी से कड़ी सजा होती थी उन्हें। नरसोपंत ने धीरज दिया मुझे। वेद यानी ज्ञान। यह ज्ञान एक को स्वेच्छा से मिले और एक को बिल्कुल नहीं...।

मथुरा : [गुस्से में] सायनाक....[क्षणभर के बाद] अरे रे। मेरी जिह्वा भ्रष्ट हो गयी। शास्त्राज्ञा से परपुरुष का नाम नही लेना चाहिए हमे। और यह है शूद्र। अब प्रायश्चित करना पड़ेगा मुझे। महाराज प्रायश्चित करने के लिए क्या मुझे ब्रह्मवृंद उपलब्ध होगा ?

मृत्युदेवता : मथुराबाई, ऐसा ब्रह्मवृंद हम अपने दरबार में नहीं रखते। पृथ्वी पर के प्रायश्चित की भाषा वर्ज्य मानते हैं यहाँ हम। नरसोपंत, मथुराबाई के बारे मे कुछ कहना है आपको ?

नरसोपंत : क्या-क्या कहूं ? कितना कहूं ? इस शास्त्र से तंग आ गया था मैं। मरते दम तक इसने तकलीफ दी मुझे। यह न खाओ, यह विधि करो, उस ओर ना करो, इसे दान दो, उसे मत दो और मैं आधुनिकता में विश्वास करने वाला मानव। समय के साथ मनुष्य को बदलना चाहिए, ऐसा मेरा मत। मेरा हर एक कार्य इसे भ्रष्ट लगता था। और इसलिए.... [अस्वस्थ हो जाता है]

मृत्युदेवता : एकदम क्यों रुक गये, नरसोपंत ?

नरसोपंत : और इसी कारण जहर दे दिया मुझे इसने।

मथुरा : जहर नहीं तो क्या अमृत देती ? धर्म का नाश करने वालों के लिए इससे कम और कोई सजा नहीं थी।

नरसोपंत : मनु ने भी ब्राह्मण को देहांत की सजा नहीं बतायी मधु !

मथुरा : लेकिन तुम्हारा आचार-व्यवहार ब्राह्मण जैसा था ही नहीं। शूद्र को लजाने जैसा था।

साधनाक : माताजी, हमारी जाति का तिरस्कार करने में ही आपको धन्यतामहसूस होती है क्या ? इसे सहन नहीं करेंगे हम। प्रजातंत्र ने भाषण तथा मत स्वतंत्रता दी है हमें। आंबेडकर बाबा ने स्वाभिमान की सीख दी है हमें, यह कैसे भूल सकता हूँ मैं ?

मथुरा : कौन आंबेडकर।

साधनाक : आप कैसे समझेंगी यह ! मनु के झंडे को सलाम करने वाला मानव नहीं था वह। [रौद्र हास्य हँसकर, क्रोध से बोलने लगता है] मानव की प्रतिष्ठा खत्म करने वाला, मानव को पैरों तले कुचल डालनेवाला वह मनु ! मनु के केवल स्मरण-मात्र से मेरे शरीर में आग फैल जाती है। आम्बेडकर बाबा ने मनुस्मृति जलाई, कोई करता है इस पर विचार ?

मथुरा : मनुस्मृति जलाने से क्या होगा ? मानव तो बदल नहीं सकेगा कभी।

साधनाक : यही तो जीत है मनु की। गीता में वर्णित आत्मा को जैसे शस्त्र से काट नहीं सकते, इसी तरह मनुस्मृति को काटना भी मुश्किल, अग्नि भी जला नहीं सकती थी उसे। मात्र चमत्कार हुआ। एक चमत्कार हुआ। एक चमत्कार ही कहूँगा उसे मैं। संघर्ष करने, अन्याय के विरोध में लड़ने को तैयार हुए हमारे मानस।

नरसोपंत : सायनाक, आंबेडकर को जानता था मैं। उनकी एक सभा में भी उपस्थित था मैं। प्रचंड था वह मानव, उसकी वाणी में आग थी। सारा समाज बदल दिया उस महापुरुष ने।

मथुरा : आप चुप बैठिए, शूद्र स्तुति करना धर्मशास्त्र में मना है। आंबेडकर के पागलपन में बहक गये आप भी।

सायनाक : महाराज, धर्म की इस बेडी के कारण मानव घुटन-सी महसूस करता रहा। अध्यात्म से प्रेम करने वाले इस देश ने कभी मानव को पहचाना ही नहीं।

मृत्युदेवता : सायनाक, तुम्हारी वेदना समझ सकता हूँ मैं, लेकिन इसका कोई इलाज नहीं।

सायनाक : महाराज, मैंने इस देश को अंतःकरण से प्रेम किया है। देश को छोड़कर जाने की बात सोची भी नहीं। यहीं पर हमारे पुरखों ने जिंदगी बितायी। इस देश को अपना माना। किंतु इस देश की पुरोहितशाही ने पंखहीन कर दिया मुझे। मिली मुझे केवल दासता। दासता को कौन स्वीकार करेगा? लेकिन हुआ यही। मेरी हजारों पीढ़ियों ने चुपचाप स्वीकार किया उसको। अब जाग गई है पीढ़ी मेरी। उसे स्वाभिमान के पंख निकले। जीवन का अर्थ समझ में आया। अपनी दासता से मुक्ति के लिए सब कुछ करने को तैयार हो गये हम। शांति को आलिंगनबद्ध किया हमने। यह सब कुछ हुआ, लेकिन आज भी अपनी पुरानी परंपरा पालन करने में गौरव मानता है यह मेरा देश। [थोड़ी देर शांति, फिर अन्दर से शोर।]

मृत्युदेवता : कमंडलु, फिर शोर आरंभ हुआ। देखो, क्या चल रहा है अंदर [कमंडलु बाहर जाता है] सायनाक, तुम्हारा दर्द मैं समझ सकता हूँ। शोषण और दुःख की भी एक मर्यादा है

है, लेकिन पृथ्वी-लोक को उसकी कोई चिंता नहीं। [कमंडलु आता है।]

कमंडलु : महाराज, क्षत्रिय और वैश्य का संघर्ष चल रहा है। क्षत्रिय कहते हैं, हम श्रेष्ठ हैं और वैश्य कहते हैं हम।

मृत्युदेवता : उनके नेताओं को दरबार में हाजिर करो।

कमंडलु : जो आज्ञा महाराज! [घंटा बजाता है। अमरसिंह और पुरुषोत्तम का प्रवेश]

मृत्युदेवता : [उन्हें संबोधित कर] मृत्युशाला में आपको कोई असुविधा हुई है क्या ?

अमरसिंह : महाराज, यह कहता है, मैं क्षत्रिय से श्रेष्ठ हूँ।

पुरुषोत्तम महाराज, हम वैश्य हैं। देश को आर्थिक मजबूती हमी ने प्राप्त करायी। व्यापार पर ही कोई देश जीता है। शिवाजी महाराज साहूकारों को खुश रखते थे, ढाल-तलवार को यह कहाँ मालूम ?

अमरसिंह : ढाल-तलवार की उपेक्षा करने से तराजू महत्ता प्राप्त नहीं कर सकती पुरुषोत्तम। ब्राह्मण के बाद क्षत्रिय श्रेष्ठ है। हम देश के लिए लड़ते हैं। मर मिटते हैं। तुम पेट के लिए लड़ते हो। इस अमरसिंह की तलवार कभी स्वार्थ के लिए नहीं लड़ी।

पुरुषोत्तम : अमरसिंह, हमारी तराजू भी कभी स्वार्थ के लिए नहीं झुकी। तुमने तलवार की अपेक्षा हमेशा ढाल का ही ज्यादा उपयोग किया है, इसे न भूलो।

अमरसिंह : पुरुषोत्तम इस तरह की बातें मेरे लिए असह्य है। क्षत्रियों ने पराक्रम का इतिहास स्वीकार किया है। धनुष्यवीर

अर्जुन कौन था ? छत्रपति कौन थे ? चित्तौड़ का राजा किस वंश में जन्मा था ? इस तरह के हजारों नाम दिये जा सकते हैं।

पुरुषोत्तम : मुझे इस तरह का पराक्रम स्वीकार्य नहीं। हम अपनी तलवार का कभी प्रदर्शन नहीं करते, हमें ढिंढोरा नहीं पीटना था। हमें तो बस अपने देश की सेवा करनी थी।
[मृत्युदेवता जोरों से हँस पड़ते हैं।]

मथुरा : महाराज, ईश्वर ने मनुष्यों का कितना सुन्दर विभाजन किया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। हर कोई अपनी सीमा में रहे। कोई किसी के मामले में दखलन्दाजी न करे। दुनिया में ऐसी सुन्दर व्यवस्था कहीं भी नहीं होगी। [सायनाक हँसता है और हँसते-हँसते गंभीर हो जाता है।]

पुरुषोत्तम और अमरसिंह : तुम हँस रहे हो ?

सायनाक : हँसूं नहीं तो और क्या करूँ ? वर्ण-व्यवस्था ने ही हमारे देश को खोखला कर दिया है। मनुष्य मनुष्य का शत्रु हो गया है। वर्ण-व्यवस्था यानी इन्सानियत का जनाजा। [illegible] अक्सर कहते थे कि वर्ण-व्यवस्था का अर्थ श्रम का विभाजन [illegible] बल्कि श्रमिकों का विभाजन है।

मथुरा : क्या बकवास करता है ? वर्ण-व्यवस्था पर [illegible] वाले शूद्र की जबान काट लेनी चाहिए।

मृत्युदेवता : मथुराबाई, इस दरबार में [illegible] नहीं। मुझे भी नहीं।

अमरसिंह : सायनाक, दुनिया में तुम्हारा सत्कार हो, ऐसी इच्छा तुम क्यों रखते हो ? जो तुम्हारे भाग्य में लिखा होगा, वही होगा।

सायनाक : भाग्य ? कहाँ का भाग्य ? भाग्य पर भरोसा रखकर ही हम अब तक जीते रहे है। कितना बड़ा यह अज्ञान।

पुरुषोत्तम : अज्ञान ? हमारे भाग्य में था, इसीलिए हम वैश्य के यहाँ पैदा हुए।

सायनाक : तुम्हारे सर पर लटकती तलवारें.. ब्राह्मण और क्षत्रिय तुम्हारे सर पर बने रहें, यह तुम्हें सह्य है। निम्नों को कुचलना और ऊपरवालों की खुशामद ही तुम्हारा धर्म है।

अमरसिंह : और मथुरा : यह कितनी दुष्टता है।

मृत्युदेवता : सत्य सदैव कठोर होता है। उसे स्वीकार करने के लिए मन के दरवाजे तथा भावनाओं के झरोखे खुले होने चाहिए। समझे !

मथुरा : इसका मतलब यह तो नहीं कि आपके दरबार में हमारा अपमान हो।

मृत्युदेवता : यह अपमान नहीं। ये धधकते हृदय के उद्‌गार हैं। पर मथुराबाई, पृथ्वीलोक में तुमने लोगों का अपमान किया ?

मथुरा : मुझे याद नहीं।

मृत्युदेवता : कमंडलु, विवरण पत्र पढ़ो। [कमंडलु विवरण पत्र खोलता है।]

कमंडलु [पढ़ते हुए] मथुरा नरसोपंत सरदेशपांडे, उम्र ३५ मुकाम... पति को शारीरिक दंड, पुरुष जाति के विषय में तिरस्कार और घृणा........

नरसोपंत : हाँ, इसने मुझे कभी शरीरसुख नहीं दिया। हमेशा मुझसे नफरत की। मुझे कष्ट दिये।

कमंडलु : सास-ससुर को यातनाएं.......

नरसोपंत : कितनी यातनाएं दीं तुमने मुझे, माँ-बाप का मैं इकलौता पुत्र था, फिर भी केवल तुम्हारी निर्दयता के कारण उनके लिए मैं कुछ भी न कर सका।

कमंडलु : नीतिमत्ता पालन नहीं की। सार्वजनिक जीवन को तुच्छ समझा। धर्म-शास्त्र के नाम पर अशोभनीय वर्ताव शूद्रातिशूद्रों को .. .

मथुरा : [चीखकर] यह सब झूठ है। मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

मृत्युदेवता : इस दरबार का विवरण झूठा नहीं हो सकता।

मथुराबाई : कमंडलु, आगे पढ़ो।

कमंडलु : पति को भोजन में विष दिया।

नरसोपंत : उस दिन मुझे कितनी यातना हुई। मेरा सारा बदन नीला पड़ गया। मैं घंटे भर तक लगातार तड़पता रहा, पर मेरी ओर देखा तक नहीं।

मथुरा : आपकी ओर क्या देखती ? मेरा नीति-धर्म टूट रहे, इसीलि मैं ज्ञानेश्वरी पढ़ रही थी।

मृत्युदेवता : मथुराबाई, आपका पति जब मृत्यु की अंतिम घ रहा था, तब आपने ज्ञानेश्वरी कैसे पढ़ी थी ?

हँसती है। पागलों की तरह आंखें नचाते हुए हँसते-हँसते भीतर चली जाती है।]

कमंडलु : मथुराबाई अंत में पागल हो गयी और उस पागलपन के दौर में ही उसने आत्महत्या कर ली—कुएं में डूबकर। दूसरे दिन उसकी लाश ऊपर आयी, तब लोगों को पता चला।

नरसोपंत : महाराज, मुझे जाने की आज्ञा दीजिए। मैं उसे मनाऊँगा कि पृथ्वीलोक में जो संभव नहीं हो पाया, वह कम से कम यहाँ तो हो—[नरसोपंत जाते हैं। कुछ क्षण शांति।]

मृत्युदेवता : अमरसिंह, तुम्हें क्या कहना है ?

अमरसिंह : महाराज झगड़ा है हम दोनों में। उसका विवरण मैं [सायनाक की ओर उंगली से इशारा कर।] इसके सामने नहीं दूँगा।

सायनाक : महाराज, आपके सामने मेरा यह अपमान ? आपके दरबार में तो सभी को समान समझा जाता है !

अमरसिंह : अरे, यह क्या बकवास लगा रखी है ? [ताली बजाकर] अरे, कोई है उधर ? जरा मेरी तलवार ले आओ। अभी इसके टुकड़े-टुकड़े कर देता हूँ।

मृत्युदेवता : [हँसकर] अमरसिंह, यहाँ तुम्हें तलवार लाकर देनेवाला कोई नहीं। यह मृत्युदेवता का दरबार है। इसे तुम भूल जाते हो ?

अमरसिंह : तो इससे क्या ? शूद्र को अपनी मर्यादा नहीं भूलनी चाहिए। हमने अपने क्षत्रियत्व की मर्यादा को कभी नहीं भुलाया।

मृत्युदेवता : पर यह मर्यादा किसने बनायी ? क्यों बनायी ? कब बनायी ? क्या तुम जानते हो ?

अमरसिंह : मैं इस झमेले में कभी नहीं पड़ा । हमारे परदादा ने हमारे दादा को, दादा ने हमारे पिता को और पिता ने हमें जो कुछ कहा, उसी को हमने माना । वही हमारा धर्म । धर्मपालन से मनुष्य स्वर्ग प्राप्त करता है ।

पुरुषोत्तम : अमरसिंह के कहने में सचाई है । पूर्वजों ने जो कुछ कहा, उसका पालन ही हमारा धर्म है ।

अमरसिंह : महाराज, धर्म का पालन किया, पर कभी-कभी मनस्ताप होता है । परशुराम ने धरती को क्षत्रिय-विहीन किया । एक बार नहीं, इक्कीस बार । हमारे पूर्वजों की उन्होंने निर्दयता से हत्याएं की । इस वेदना से मैं अपने आपको मुक्त नहीं कर पाया । मैं असमर्थ सिद्ध हुआ । उसका स्मरण होते ही मेरी मुट्ठियां भिंच जाती हैं, मैं कुछ भी कह सकने में असमर्थ रहा, क्योंकि धर्मग्रंथों की आज्ञा को मैंने वरण किया है । मैं इस दु:ख को कैसे भूल सकता हूं ?

मृत्युदेवता : इस संबंध में मैं क्या कह सकता हूं ?

अमरसिंह : इस दु:ख को दूर करने के लिए कोई उपाय नहीं है ?

मृत्युदेवता : इस बारे में कभी मुझसे कुछ कहते नहीं बनेगा अमरसिंह ।

अमरसिंह : तो मुझे दु:ख दूर करने के उपायों की खोज करनी होगी । [जाता है ।]

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम तुम्हें क्या कहना है ?

पुरुषोत्तम : महाराज ! मैं बेचैन हूं । बेचैनी को नष्ट करने [illegible] महाराज ?

मृत्युदेवता : [हँसकर] इलाज ? स्वस्थता, यही एकमात्र इलाज है बेचैनी का। पुरुषोत्तम आखिर हुआ क्या है, यह तो बताओ।

पुरुषोत्तम : बहुत कुछ कहना चाहता हूँ, महाराज। हम वैश्य। हमारा तीसरा वर्ण। इसका हमें कभी दु:ख नहीं हुआ। हमने अपनी शक्ति के अनुसार अपने देश की सेवा की और समृद्धि दी। पर हम वर्ण-व्यवस्था में हमारा स्थान तीसरा ही रहा। वैश्यों को पहला स्थान मिलना चाहिए। ब्राह्मणों और क्षत्रियों को सही अर्थ में सम्मानित जीवन मिला केवल हमारे कारण। हम विशेष पढ़े-लिखे न रहे हों, पर बुद्धिमत्ता के बिना तो व्यापार हो ही नहीं सकता। आपके दरबार में हमें शीर्षस्थान मिलना चाहिए।

मृत्युदेवता : इससे क्या होगा ?

पुरुषोत्तम : इससे अगले जन्म में तो कम-से-कम हमें प्रथम वर्ण का सम्मान मिलेगा।

मृत्युदेवता : कितने मूर्ख लोग हो तुम। मृत्युलोक और पृथ्वीलोक का कोई संबंध नहीं है। लगता है तुम इसे भूल जाते हो और तुम्हारा अगला जन्म मनुष्य योनी में होगा यह तुमसे किसने कहा ?

पुरुषोत्तम : मुझे लगता है। मेरी अपनी श्रद्धा कहती है।

सायनाक : [हँसकर] इसी को कहते हैं पागलपन।

पुरुषोत्तम : छि: छि: ! इस शूद्र को बीच में बोलने की बड़ी बुरी आदत है।

मृत्युदेवता : सायनाक, क्या तुम कुछ देर के लिए अपनी जबान पर लगाम नहीं लगाओगे ?

सायनाक : महाराज, हजारों वर्षों से हमने अपनी जबान बंद रखी थी। आज ही तो हम कुछ कहने लगे है....।

मृत्युदेवता : मुझे एक पात्र का कथन पूरी तरह से सुनना है। तुम्हारा भाषण-स्वातंत्र्य मैं नहीं छीनूँगा।

सायनाक : ठीक है, मेरे लिए आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। पृथ्वीलोक पर हमारे देश में अभी-अभी प्रजातंत्र की स्थापना हुई है। हमें अपना मत प्रदर्शित करने का अवसर मिला है, इसलिए मैं....

पुरुषोत्तम : महाराज, इस प्रजातंत्र-फिजातंत्र को हम नहीं मानते। बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग कर यह शूद्र हमें धोखा दे रहा है।

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम, जिनकी जबान हमेशा के लिए काट दी गयी थी, उनको बोलने का अवसर मिलते ही कितना गजब करने लगे हो तुम लोग। तो पुरुषोत्तम, तुम मनुष्य-जन्म चाहते हो न ?

पुरुषोत्तम : हाँ महाराज।

मृत्युदेवता : लेकिन किस जाति में ?

पुरुषोत्तम : महाराज, मैं जिंदगी-भर वैश्य कहलाता रहा। अब मुझे न इस जाति में जन्म चाहिए न क्षत्रिय की जाति में। अब मेरी एक ही इच्छा है ब्राह्मण जन्म की।

[मृत्युदेवता अट्टहास करता है]

पुरुषोत्तम : महाराज, क्या शूद्र को ब्राह्मण जन्म की अपेक्षा रखनी चाहिए ? इससे तो धर्म में और अधिकारभ्रष्टता आयेगी।

मृत्युदेवता : और तुम्हारी अपेक्षा में ?

पुरुषोत्तम : गुणों के आधार पर, श्रेष्ठता संभव है। इस ऋषि-मुनियों ने यह रखी है।

मृत्युदेवता : पर लाख कोशिश के बावजूद तुम्हें मनुष्य जन्म नहीं मिलेगा। तुम जैसों को गुणों का अहंकार नहीं रखना चाहिए। कमंडलु, इनका विवरण फल निकालो और पढ़ो इनके कृत्य।

कमंडलु : पुरुषोत्तम, नरसोपंत, मुकाम बलसाड। अत्यंत स्वार्थी, द्रव्यलोभी, सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देकर सरकार के साथ धोखेबाजी। श्रमदान के नाम पर विद्यार्थियों से अपार कपट और धोखेबाजी। अनाज का काला बाजार....

पुरुषोत्तम : नहीं, नहीं, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। सरकार तथा विद्यार्थियों को तो कम-से-कम मैंने कभी धोखा नहीं दिया।

कमंडलु : अनेक लोगों का व्यापार नष्ट किया। संकल्पित तालाब का निर्माण नहीं किया, उल्टे उसकी सारी रकम हजम कर ली। गरीबों का शोषण किया। शासन पर दबाव....[कुछ देर खामोशी]

पुरुषोत्तम : महाराज, मेरा भ्रम दूर हो गया। आपके दरबार में इतना विवरण लिखा होगा, मैंने यह नहीं सोचा था। मरते दम तक मैंने कितने कष्ट उठाये।

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम, गुणों के कारण श्रेष्ठता मिल सकती है, ऐसा तुम्हारा कहना है न ? फिर तुम्हारी मृत्यु कैसे हुई ?

पुरुषोत्तम : मेरे दुःखों को फिर क्यों याद दिला रहे हैं, महाराज ? मैं पापी हूँ। जिंदगी भर धन ही कमाया मैंने। धन ही में डूबा रहा। विलास ही में मग्न रहा। आगे चलकर दुनिया से नफरत हो गयी मुझे।

मृत्युदेवता : ऐसा क्यों हुआ ?

पुरुषोत्तम : मेरे छोटे भाई ने, पत्नी ने, बच्चों ने, सभी ने मुझ से संपत्ति में अपने हिस्से की माँग की, मैंने इनकार किया। फिर भाई ने मुझसे दुश्मनी की। वह घर में एक विषकन्या ले आया....किंतु उस युवती से मेरा कोई संबंध नहीं था····

मृत्युदेवता : कमंडलु, शांति को दरबार में हाजिर करो। [कमंडलु घंटा बजाता है। शांति प्रवेश करती है। पुरुषोत्तम काँपने लगता है। गर्दन दूसरी ओर घुमा लेता है।]

पुरुषोत्तम : कौन है यह ? इसका क्या काम है यहाँ ?

मृत्युदेवता : पुरुषोत्तम, तुम घबरा क्यों रहे हो ? तुम्हारे पैर क्यों काँपने लगे हैं ?

पुरुषोत्तम : नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं।

मृत्युदेवता : नहीं, तुम्हारी साँस रुकने लगी है। शरीर से पसीना छूटने लगा है।

पुरुषोत्तम : नहीं तो। [पुरुषोत्तम पसीना पोंछने लगता है]

मृत्युदेवता : शांति, इस वैश्यपुत्र को जानती हो तुम ? [शांति सिसकियाँ भरने लगती है।] क्या हुआ ? बोलो ?

शांति : महाराज, हम वर्ण के बाहर के लोग हैं—हमारा अपना अलग से कोई अस्तित्व नहीं रहता। हमारा स्वयं का कुछ नहीं होता—न शरीर, न मन और न रिश्ते-नाते।

मृत्युदेवता : मैं पूछता हूँ, क्या तुम इसे जानती-पहचानती हो ?

शांति : जान-पहचान क्या बताना है, महाराज ! हमारी पहचान का भी कोई अर्थ होता है ? मेरी शादी हमारे रीति हुई। माता-पिता को लगा उनके सिर का बोझ लेकिन........

मृत्युदेवता : लेकिन क्या ?

शांति : आनन्द के साथ दु:ख भी बना रहता है। हमारी परम्परा में दुःख के इस प्याले को आँखें बन्द कर चुपचाप पीना पड़ता है हमे। मेरी जिन्दगी मे भी वही घटित हुआ जो अन्य युवतियो के साथ....[सिसकियाँ लेने लगती है] महाराज, शादी के दिन मुझे अपने पति के साथ जाने का अधिकार नही था, परंपरा के अनुसार गांव मे अमीर के पास रात भर मुकाम के लिए जाना पड़ा मुझे। मैं युवावस्था की दहलीज पर प्रवेश करने वाली युवती थी। मन मे तूफान-सा उठा। लेकिन परंपरा तोड़ना असंभव था मेरे लिए। जिसने भी परपरा को तोड़ने की कोशिश की, उसने जिंदगी से हाथ धो लिया। हमारे पड़ोस की कॉलोनी की युवती का यही हाल हुआ। जैसे ही उसने अमीर के घर से भाग जाने की कोशिश की, चाबुक की मार से उसका शरीर फोड़ दिया गया। वह जोर-जोर से रो रही थी, तड़प रही थी, किंतु किसी ने भी मुक्त नही किया उसे। वह डर गयी और अंत मे प्राण त्याग दिया उसने।

मृत्युदेवता : शांति, तुमने क्या किया, यह बताओ।

शांति : मुझे भी अमीर के घर पहुंचाया गया। अंधेरी रात थी। मन में अंधेरे का ही साम्राज्य फैला था। मैं अस्वस्थ थी। बेचैन थी। वेदना से मेरा सर्वांग थरथरा रहा था। उस अमीर की दहलीज पर मैंने कदम रखा। क्षण मात्र के लिए मैंने गर्दन घुमाकर देखा तो उस अमीर की पत्नी, बच्चे, बहू मेरी ओर देखकर व्यंग्यपूर्वक हँस रहे थे। उस क्षण-मात्र में यह सब देख कर मैं जल कर खाक हो गयी। उस समय मुझे लगा, मेरा

सारा शरीर कोयला बन चुका है। पैरों में शक्ति न होने पर भी मैं एक-एक सीढ़ी मुश्किल से पार करती हुई ऊपर चढ़ती गयी। मेरे साथ और कोई नहीं था। मैं पूरी तरह डर गयी थी, फिर भी आगे बढ़ती जा रही थी। द्वार पर पहुंची, तो वहां मुंह में पान रखे, बेजान-सी हँसी हँसते हुए मेरा स्वागत करने वाले उस अमीर को मैंने देखा [पुरुषोत्तम घबरा जाता है। [मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था, सर में आंधी-सी उठी। मैंने उस अमीर के पैर पकड़े। प्रार्थना की। याचना की। गिड़गिड़ाई। कहा, मैं तुम्हारी कन्या की भांति हूं। मेरा युवा पति चातक की भांति मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा। लेकिन मेरी सुननेवाला था ही कौन वहां? [सिसकियां....क्षणभर रुकती हैं।]

पुरुषोत्तम : शांति....शांति बस! बस, आगे मत कहो, शांति! मुझे क्षमा करो। अब उस प्रसंग का फिर स्मरण मत दिलाओ। वह प्रसंग मुझे कांटे-सा सालने लगा है। मुझे पश्चात्ताप होने लगा है....।

शांति : अमीर पुरुष क्रूरता से हँस रहा था। दीवारें तक डर गयी थीं। मैं संपूर्णतः असहाय, आधारहीन थी, वहां। अपना यौवन लुटते हुए देखना था मुझे।

पुरुषोत्तम : शांति, मुझे क्षमा कर दो। शांति, क्षमा कर दो। शांति, क्षमा कर दो।

शांति : क्षण मात्र में ऐसा कुछ घटित हुआ कि मैं [illegible] सकी। और मेरे शरीर को पुरुष-बाहुओं ने [illegible] जकड़ लिया। मेरा कौमार्य भग्न हो गया। [illegible] की अग्नि क्षण-मात्र में पूर्ण रूप से बुझ गयी।

[सिसकियाँ] अपनी मृत्यु को मैंने अपनी आँखों देखा। उस समय, महाराज, [सिसकियाँ] और फिर बुझे हुए, राख हुए उस यौवन को मन ने ललकारा। मन ने विद्रोह किया। निस्तेज मन में चेतना की लहर दौड़ पड़ी। शरीर से चिन-गारियाँ निकलने लगी। महाराज, फिर मैं अपने काबू में न रही। सारी शक्ति जुटाकर कोने में पड़ी लाठी से मैंने अमीर के सिर पर जोर से प्रहार किया। और फिर मैं चीखती-चिल्लाती भागती हुई निकली। मेरा सौभाग्य लुट गया था। मैंने मृत्यु को स्वीकार किया—बिल्कुल निर्भयता के साथ महाराज। कितनी बेबस, असहाय, मजबूर, कोमल युवतियों को यही जीवन जीना पड़ता होगा। [सिसकियाँ]

पुरुषोत्तम : मृत्युदेवता, मुझे कुछ नहीं चाहिए....मुझे मनुष्य जन्म नहीं चाहिए....कुछ नहीं चाहिए। [पुरुषोत्तम चला जाता है। क्षण भर शांति।]

मृत्युदेवता : [स्वागत] मनुष्य का कितना अधःपतन, कितनी पराजय!

सायनाक : महाराज यह मनुष्य की पराजय नहीं। मृत्यु के रास्ते पर लगी पुराणवादी नैतिकता की विजय है। ऐसी यातनाएं भोगते हुए कई पीढ़ियां कुर्बान हो गयीं। महाराज, एक बात पूछूं।

मृत्युदेवता : कौन-सी ?

सायनाक : महाराज, शूद्रों के मन में पृथ्वी-लोक के प्रति ममता की भावना कब निर्माण होगी ?

मृत्युदेवता : सायनाक, बहुत ही जटिल प्रश्न पूछा है तुमने। ममता की भावना मांगने से प्राप्त नहीं होती। इसे मानव के मन में, अंतस में स्थिर होना पड़ता है।

सायनाक : फिर पृथ्वी पर ऐसा क्या कभी घटित नहीं होगा ?

मृत्युदेवता : कौन कहे ? और मैं वह कैसे कह सकता हूँ ? मृत्युशाला मेरा घर है, यही मेरा आंगन। यही मेरा परिवार है, यही मेरी दुनिया। यही मैं सुख प्राप्त करता हूँ। यहीं मैं आराम करता हूँ। यहाँ मेरे लिए सभी समान हैं, समता का साम्राज्य यहाँ है। मुझे इसका अहंकार नहीं, ऐसी समता पृथ्वी पर कब आयेगी, मैं कैसे कहूँ ? [धीमे-धीमे प्रकाश मृत्युदेवता, सायनाक और शांति के चेहरे पर। कमंडलु एक ही स्थान पर स्थिर है, उस पर प्रकाश। फिर कमंडलु घंटा बजाता है। घंटा बजते समय ही परदा गिरता है।]

अनुवाद : डॉ. कमलाकर गंगावणे,
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय
औरंगाबाद

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	आवर्त	प्रा दत्ता भगत
हिन्दी अनुवाद :	आवर्त	प्रा. वामन जगताप

प्रकाशन : शारदा प्रकाशन
वजीराबाद,
नांदेड़–४३१६०१

मंचन : दलित थिएटर, औरंगाबाद
थिएटर यूनिट, बम्बई

सम्पर्क : प्रा. दत्ता भगत,
पीपुल्स कॉलेज कैम्पस, नांदेड़–४३१६०१

आवर्त

☐ प्रा० दत्ता भगत

[मंच सूना है। ढोलकी और तुनतुने की तान गूंज रही है—धीरे-धीरे लय बढ़ने लगती है। परिवर्धित लय के साथ सूत्रधार और उसके पीछे विदूषक [सोंगाड्या] मंच पर आते हैं—ये दोनों लय के साथ एकात्म हो चुके हैं। सम पर आते ही हा ऽ हा ऽ हा का सम्मिलित घोष कर हाथ से इंगित करते हुए मंच के मध्य में स्थिर होते हैं। तभी पार्श्व-संगीत रुक जाता है।]

सूत्रधार : जोहार माई-बाप, जोहार। आपके महारों का मैं महार हूं। भूखा मैं अकिंचन। आया खाने आपकी जूठन। भद्र बोया मैं पाटी लावन। जूठन लेने तुमरा भगवन्।

विदूषक : अर ऽ र ऽ र

सूत्रधार : क्यों, क्या हुआ ?

विदूषक : अरे, अचानक यह गया-बीता पुराना राग आलापना क्यों शुरू कर दिया ?

सूत्रधार : ऐसी बात नहीं । जोहार पुराना ही है पर उसका अर्थ नया है

विदूषक : अच्छा ! वह कौनसा ?

सूत्रधार : जोहार पुराना ही है पर इसका अर्थ नया है ।

विदूषक : अरे हां, समझा । पर कौनसा नया अर्थ है उसमें ?

सूत्रधार : अर्थ ? नया अर्थ ? अब वह मुझे भी कहां मालूम है ? आज
कल इसे दलित साहित्य कहते हैं ।

विदूषक : यह कौन नई बला है ?

सूत्रधार : दलित साहित्य मालूम नहीं तुझे ?

विदूषक : ना, बिल्कुल नहीं ।

सूत्रधार : मुझे भी कहां मालूम है ।

विदूषक : बहुत अच्छे ।

सूत्रधार : परिभाषा नहीं की जा सकती पर जो होता है, उसे दलित
साहित्य कहते है ।

विदूषक : नहीं समझा ।

सूत्रधार : नहीं समझे ? समझकर भी क्या करोगे ? आखिर परिभाषा
परिभाषा ही होती है ।

विदूषक : ठीक है । पर मालूम होता तो ठीक रहता ।

सूत्रधार : इकार यानी क्या ?

विदूषक : यह भी कोई पूछने की बात हुई ?

सूत्रधार : अब कह ना....

विदूषक : अरे, यह सब जानते हैं ।

सूत्रधार : तो भी परिभाषा बताओ न ?

विदूषक : ना—नहीं बताई जा सकती इसकी परिभाषा।

सूत्रधार : पर इकार समझ में आती है या नहीं ?

विदूषक : हाँ—अब समझा।

सूत्रधार : क्या समझा ?

विदूषक : यही कि दलित साहित्य के माने क्या होते हैं। [विदूषक रंग-मंच की दाईं ओर देखता है]

सूत्रधार : समझा न ? बहुत अच्छा। अरे, बार-बार उधर क्या देख रहा है ?

विदूषक : राह देख रहा हूँ।

सूत्रधार : किसकी ?

विदूषक : अब और किसकी ? अरे बाबा, नमन समाप्त हुआ पर अभी तक राधा ग्वालन क्यों नहीं आ रही है ?

सूत्रधार : अरे रे। कितना पीछे रह गया है रे तू ?

विदूषक : मतलब ? हमारे पहले ही राधा आगे निकल गयी है क्या ?

सूत्रधार : अरे, यह बात नहीं। इन दिनों राधाकृष्ण के काव्य को पूज्य दत्ता बाल ने मनाही की है।

विदूषक : यह कौन दत्ता बाल साक्षात् देवता को प्रवेश के लिए मना करता है।

सूत्रधार : देवता पर नहीं, राधा-किसन की बतायनी पर बंदी लगा दी है।

विदूषक : बहुत ठीक बात है।

सूत्रधार : कौनसी वात है ?

विदूषक : कौन कर रहा था ? दत्ता वाल न— ?

सूत्रधार : पूज्य दत्ता बाल ।

विदूषक : वाल कहाँ समझेगा इसकी खास बात ।

सूत्रधार : ऐसा नही, भगवान् किसन देव को विडम्बना उन्हें मंजूर नही है ।

विदूषक : भगवान् किसन देव की विडम्बना मंजूर नही है उन्हें ?

सूत्रधार : हाँ, नही मंजूर उन्हें ।

विदूषक : यह तो बहुत ही अच्छा हुआ ।

सूत्रधार : वह कैसे ?

विदूषक : अब भगवान् किसन देव नही आयेंगे, इसका मतलब यह हुआ कि राधा को जाते रोकने का चानस मुझे ही मिलेगा न—?

सूत्रधार : कितनी भयंकर बात कर रहा है तू ?

विदूषक : देख लिया आपने कॉलेज के व्हारांडे में लडकियों को रोकने पर प्रिंसिपल गुस्सा भरते थे, अब नाटक में राधा को रोकने की बात की तो यह कहता है बडा भयंकर बोलता है तू । प्रिंसिपल का बाप ही है न जैसे ?

सूत्रधार : अबे, बस्स कर अब तेरी टग टग । हौले से तो बोल न ?

विदूषक : अब तो जरा जोर से बोलने दे । आपातकालीन उसीस महीनों में हौले-हौले ही बात की न ?

सूत्रधार : खबरदार ।

विदूषक : आयी क्या ? [राधा को देखता है]

विदूषक : लोकनाट्य[२] कहलाया।

सूत्रधार : कहलाने दे न बे। तेरा क्या बिगड़ता है उसमें ?

विदूषक : बिगडने की क्या बात ? असली "जागृति" की बोतल से सोडा लेमन पीने जैसा है यह। नही तो अपना-भाऊ-बापू क्या कहना, इठाबाई का वह नखरा....। [विठाबाई के लहजे में गीत गाता है]

सूत्रधार : तमाशा को थोड़ा खानदानी बनाया जाये तो उसमें क्या बिगड़ता है रे ?

विदूषक : खानदानी ? यहाँ कौन माई का पूत ना कहता है ? पर यह तो सीधे तमाशा से नाटक ही बन बैठा है। [लयबद्ध स्वर में कहता है।]
आगे बढ़ने पर जलते दिये। पीछे हटने पर दीवार मढ़ाये।

सूत्रधार : कहाँ जायें ? क्या करें ? कह तेरी ओपिनियन।

विदूषक : यहाँ नही रहना।

सूत्रधार : यहाँ नहीं रहना।

विदूषक : पीछे-पीछे जाना।

सूत्रधार : पीछे-पीछे जाना।

विदूषक : आगे-आगे बढ़ना।

सूत्रधार : आगे-आगे बढ़ना।

विदूषक : पीछे नहीं जाना भैया, आगे नहीं बढ़ना।

सूत्रधार : आगे नहीं बढ़ना भैया, पीछे नहीं जाना।

विदूषक : गोल-गोल घूमना।

सूत्रधार : हाँ गोल-गोल घूमना।

विदूषक : गोल-गोल घूमना जी-गोल-गोल घूमना।

सूत्रधार : गोल-गोल घूमना जी-अंग-संग घूमना।
[गोल-गोल घूमने-नाचने लगते हैं—इतने में]

विदूषक : अरे ठहर, ठहर, रुक मेरे दोस्त। देखते-देखते हम बहुत दूर आ चुके हैं।

विदूषक : अच्छा जी।

सूत्रधार : फिर। अरे यही है सोनपुर?

विदूषक : बामनी के नजदीक है वही?

सूत्रधार : बिल्कुल नरसी बामन के पास का।

विदूषक : नरसी बामनी—यानी अपने नामदेव की ही न?

सूत्रधार : नामदेव को क्या तू अपना क्लासमेट समझता है?

विदूषक : ना-ना। वही नामदेव ना बी. ए. के कोर्स वाला?

सूत्रधार : तो फिर नामदेव महाराज कहेगा तो क्या जीभ गलेगी?

विदूषक : अतीत के भलेमानस को केवल नाम-भर से पुकारना आजकल का फैशन है।

सूत्रधार : बात, आगे की बात कहता है तू। अरे हम बहुत पीछे आ चुके हैं।

विदूषक : पीछे? तो भी कितना?

सूत्रधार : तो भी हम लोग एक साल पीछे आ चुके हैं।

विदूषक : अच्छा?

सूत्रधार : मैं क्या झूठ बोल रहा हूं ? यह देख, वह दिण्डी ठाकुर महाराज का पवा है शायद।

सूत्रधार : अरे हां यार।

विदूषक : आज मुकाम होता है उनका इस सोनपुर में। कल वामनी, और परसों नरसी, नरसी में सभी रावटियां इकट्ठा होती हैं और वहां से मिलकर सब पंढरपुर की ओर—अरे ओय ! चलेंगे हम पंढरपुर ?

सूत्रधार : कोई ?

विदूषक : [भक्तिभाव के साथ] विठाई से मिलने। आजकल यह पंढरपुर में रहती है। [तुरन्त नीचे बैठो इस प्रकार विठाबाई के लहजे में बोलने ही वाला है, सूत्रधार बीच में रोककर....]

सूत्रधार : हां-हां-हां—

विदूषक : क्यों क्या हुआ ?

सूत्रधार : अरे वो वह विठाबाई नहीं। विठाबाई के माने विठा आई, [विठाई हाथ जोड़ता है, दोनों भी एक सुर में] विठाई माता—भक्तों की माता।

[ज्ञानराज माउली, तुकाराम, इस जयघोष से दिण्डी प्रवेश करती है। आगे महाराज और पीछे टाड़ताल-धारी इनके पीछे पताका-धारी एक बहुत बूढ़ा आदमी। विदूषक और सूत्रधार दिण्डी में जा मिलते हैं। भजन समाप्त होते ही महाराज सामने आते हैं।]

महाराज : सिदनाक—। [दिण्डी से एक आदमी बाहर आता है।]

सिदनाक : जी-जी [महाराज के पैर छूकर अदब से दूर खड़ा रहता है। इसके बाद बारी-बारी से सब सिदनाक का अनुसरण करते हैं।]

महाराज : सिदनाक, शायद हम सोनपुर आ पहुँचे है।

सिदनाक : हाँ—महाराज—हरसाल हम इसी पीपल वाले चौहट्टे पर आकर रुकते हैं। तुकाराम बाबा यहीं तो आता है ले जाने के लिए।

जयू : पीपल के इस पेड़ को हम भला कैसे भूल सकते हैं ? यह रेल की पटरी नही थी तब से....

विदूषक : बहुत पुरानी बातें आपके ध्यान में हैं।

सूत्रधार : तुझे क्या लगा, यह पुरानी हड्डी आजकल की है क्या ?

जयू : बड़े अकाल में तेरा जनम भी नहीं हुआ था, [illegible] था समझा ?

विदूषक : याने पचास साठ साल हुए होंगे न ?

जयू : पचास साठ साल क्यों ? अच्छे खासे [illegible] हुए होंगे। यह तुकाराम, अपनी तरफ आता है न, [illegible] था। यह बात तब की है [illegible] नहीं बना था। इसी [illegible] "दिण्डी" पायी। [illegible] सीधे पैर पकड़ लिये [illegible]।

विदूषक : अरे, मार पड़ी तुकाराम के बाप को, उसका कुछ नहीं क्या ?

जखू : पड़ी न ? मार पड़ी, पर किसलिए ?

जखू : *जाति की रीत छोड़ दी इसलिए। अरे, कहे तुका जाति और जाति संग खाये माटी।*

विदूषक : पर वह गया ही क्यों पैर पर मस्तक रखने ?

जखू : क्या करेगा ? खुद पाडुरंग ने ही दृष्टान्त दिया था सपने में।

विदूषक : फिर पांडुरंग ने क्यों नहीं बचाया ?

जखू : परीक्षा लेते हैं देवता।

विदूषक : यह परीक्षा थी क्या ?

जखू : नहीं परीक्षा तो आगे ही है और....।

विदूषक : क्या हुआ आगे ?

जखू : गांव में हैजे की बीमारी आयी।

विदूषक : हैजा आया ?

जखू : *छुआछूत बहुत ही कुप्रथा है भैया।*

विदूषक : फिर

जखू : फिर क्या ? पहले दिन चिंतामन महाराज चल बसे।

विदूषक : बाप रे। आगे ?

जखू : दो दिनों में सब गांव साफ होने की नौबत आयी।

विदूषक : आगे क्या हुआ ?

जखू : क्या होने का ? भगत में देवी का संचार हुआ और भगत के मुंह से उसने तुकाराम के बाप का भोग मांगा।

सिदनाक : ऐसी कैसी भूल हुई ? महाराज हो गए परेशान ?

तुकाराम : हमारे गाँव के जोशी ने कहा तिथि तो मंगलवार की है। इसीलिए हमे ऐसे लगा कि तुम इतवार को आओगे पर तुम तो दो दिन पहले ही आ गये।

सिदनाक : तिथि मंगलवार की नही इतवार की है। इतवार को हमे नरसी पहुँचना है।

तुकाराम : लगता है जोशी बाबा ने कुछ तो भी गडबड़ी कर दी है।

सिदनाक : वह बाद मे देख लेना। पहले जल्दी चलो। देर हो रही है। महाराज बैठे हैं गाँव के परे।

तुकाराम : हाँ—बुलाता हू सबको। पिरामामा ए पिरामामा कौन है रे उधर। दिण्डी पहुँच गई है कहना, जल्दी चलो। गोपाला अरे गोपाला [पंक्ति से एक प्रतिसाद देते हुए बाहर आता सिदनाक के पैर छूता है और अदब से दूर खड़ा रहता है] मनहर दिखता नही जरा आवाज देना—पिरामामा अजब ही जिद कर बैठा है। बुलाओ उसे।

पिराजी : तुका, मनहर के लक्षण कुछ ठीक नही हैं। कौन जाने पूना, बम्बई जाकर क्या क्या सीख आया है। कुछ तो भी ऐसा वैसा सिखाते बैठता है लड़कों को....।

गोपाला : पिरादादा, वह कुछ बुरी बात तो नही कहता है न ?

पिराजी : कहता है गाँव के काम छोड़ो। भीम बाबा का नाम लेना है।

मनोहर : [पंक्ति से बाहर आकर] क्या गलती है उसमे ?

पिराजी : दस दो हाथ दिये हैं भगवान ने। मेहनत करो-मजदूरी करो। और गाँव के मरे जानवर कौन ढोएगा ?

मनोहर : ढोएगा जिसका वह। बच्चे की धान धोने के लिए कौन माँ भंगी को बुलाती है।

पिराजी : पर क्यों ? किसलिए करें हम यह सब ?

मनोहर : लोग कहते है कि तुम साफ-सुथरे नही रहते इसलिए छूत होता है हमें। तुम मांस-मच्छी खाते हो इसलिए हमारा भगवान अपवित्र होता है। मैंने आसपास के गाँव के बच्चों को तैयार किया है। ये साफ सुथरे रहते हैं। माँस-मच्छी नहीं खाते—इसी से हनुमान के मंदिर में जाने के लिए हम लायक हैं।

पिराजी : मतलब यह कि हमने जो सुना है, वह सच है।

मनोहर : क्या सुना है तुमने ?

पिराजी : हनुमान देवता को अपवित्र करेंगे।

मनोहर : नही, मंदिर में जायेंगे। भगवान का दर्शन करेंगे।

पिराजी : ऊपरवाली गली को अगर मालूम पड़ा तो ?

मनोहर : उन्हें बताकर ही जाना है। पर आज नहीं, जिस दिन डिण्डी आएगी।

सिदनाक : दिण्डी आयी है मनोहर। महाराज राह देख रहे हैं।

मनोहर : यह कैसे हुआ ? जोगी महाराज ने तो कहा था कि तिथि मंगलवार की है।

गोपाल : इसका मतलब कि जोगी महाराज ने हमें धोखा दिया।

मनोहर : कोई बात नहीं। इस कार्य में मुझे उनकी मदद थी लेकिन अब वे न भी रहे तो भी हम मंदिर प्रवेश

पिराजी : सुना, तेरे इस बच्चे को समझा दे। इसने और ..

तुकाराम : क्या गलती हुई उसकी ? ज्ञानोबा, चोखोबा, सावता क्या ये सब एक पंक्ति में नही बैठते थे ?

पिराजी : पर वे सन्त महात्मा थे ।

मनोहर : इसीलिए उनका आचरण हमें आदरणीय मानना चाहिए । उनकी राह पर हमें चलना है । उधर पंढरपुर के मंदिर में जाकर अपने लोगों के साथ देवता का दर्शन किया परमेश्वर तो सर्वाभूति । एक फिर हमारे स्पर्श से भला वह क्योंकर अपवित्र होगा ?

पिराजी : पर क्या तुझे अपना गाँव मालूम नही ।

तुकाराम : क्या करेगा ? जैसे पहले एक बार बहिष्कार किया था, वैसे ही करेगा । पर अब मोगलाई नही रही । चीफ साहब सबको ठीक करेंगे ।

सिदनाक : तुकाराम बाबा, बातें बाद में करते रहना । महाराज उधर कब से राह देख रहे है ।

तुकाराम : अरे बाबा गोपाल, पानी का घड़ा ले आ और अब चलो सभी जल्दी से....। चलो पिरा मामा....
"उदार तुम सन्त ।

सभी : मां बाप कृपावन्त ।

तुकाराम : कितना किया उपकार ।

सभी : क्या कहूँ मैं पामर ।
[ज्ञानोबा माऊली, शांताराम माऊली, तुकाराम कहते हुए सभी दिण्डी बनकर निकलते हैं । प्रकाश मन्द पड़ते पड़ते सभी पूर्ववत् पीठ किए खड़े । विदूषक और सूत्रधार मंच के मध्य में आते हैं]

विदूषक : क्यों मेरे शेर, हम तो बहुत चलकर आए हैं।

सूत्रधार : हाँ, सोनपुर पहुँच गए हैं।

विदूषक : तुमने पिरामामा और मनोहर की बातचीत सुनी ?

सूत्रधार : हाँ, सुनी तो।

विदूषक : हाँ, पब्लिक ने भी सुनी है।

सूत्रधार : सच है।

विदूषक : पागल तुकाराम अपने बेटे का साथ दे रहा है।

सूत्रधार : हाँ, और क्या करेगा ?

विदूषक : पागलवा मार खायेगा वह।

सूत्रधार : हाँ, खाएगा। पर उसे इतना महत्त्व क्यों ?

विदूषक : क्या ?

सूत्रधार : तू चिन्ता मत कर, मारने को आ ही गए गाँव वाले।

विदूषक : मारने को गाँव वाले आये ? कहाँ हैं ? [भाग निकलने का अभिनय करता है]

सूत्रधार : ठहर। अरे भाई, घड़ीभर समझ ले कि गाँववाले मारने के लिए आ ही जायें तो हम दोनों [भागने का अभिनय करते हैं] का क्या होगा ?

विदूषक : बहुत अच्छा। और फिर दवाखाने में जाकर भेंट। रावसाहब श्रीमान् ढेकनजी टमढेरे सभापति समाज कल्याण की पावलों में भेंट। शानदार एक फोटो अखबार में।

सूत्रधार : कुछ और हो या न हो, लेकिन अब कुछ कुछ समझ में आ रहा है तेरे....

विदूषक : बाबा के रथ का एक चक्का जो है वह । चक्का घूमता है इसलिए राजनीति का घुमाव-फिराव भी समझ में आना चाहिए । अच्छा अब बता, बीच ही में तुकाराम ने चीफ साहब वाली कौनसी बात कह दी ?

सूत्रधार : मोगलाई का जमाना था, सुनेगा ?

विदूषक मुझे नहीं, इस पब्लिक को सुना दे ।

सूत्रधार : तो फिर सुन [गाना है]

जो बीती वही कथा सुनाता हूँ सोनपुर की ।
बाजी सुनार, चन्दर पटेल के आपस के झगड़े की ।
बात नहीं थी बड़ी, झगड़े के लिए काफी हुई ।
दो बड़ो के संघर्ष में तुक्या की मिट्टी पलित हुई ।
बाघ पर आक्रमण सुनार का, क्रोध में पटेल बेभान ।
सुनार की खेती हड़प के, किया उसका नुकसान ।
हुक्म हुआ, तुका आया, पंचायत में खड़ा रहा ।
"बात करोगे मेरे जैसी" पटेल ने धौंस देकर कहा ।
याद रख पीढ़ी दर पीढ़ी का हिसाब शेष । कौन खेत है किसका ?
तेरी मजूरी बता देगी मालिक है पटेल इसका ।

गिरदावर गाँव आया
उसने तुक्या को बुलाया
कहा सौगंध तुझे भगवान की
लाज रखना न्याय की
तुक्या की गिनती—संकरी
सुनार ने बताए अधिकारी

क्रोध से उबलता पटेल बोला, बजना बंद महारों का ।
कोई उनका नहीं रखवाला मार खाया रोहिणों का ।

विदूषक : इसलिए तुकाराम ने चीफ साब को बुलाया ?

सूत्रधार : चीफ साब ने चंदर पटेल को धमकाया, घर के नौकरों की मरम्मत की और आये वैसे चले गये।

विदूषक : जब तुकाराम को इतना पीटा गया तब बाकी लोग क्या कर रहे थे ?

सूत्रधार : तुकाराम के बाप को जब ताल के पानी में फेंक दिया गया तब लोग क्या कर रहे थे ? वही—[आखिरी शब्द पर पीछे खड़ी हुई दिण्डी दर्शकों की ओर मुड़कर भजन शुरू करती है। "भले ही मस्तक टूटे। शरीर फूटे—" विदूषक और सूत्रधार दिण्डी में शामिल होते हैं। दिण्डी पूर्ववत् दर्शकों की ओर पीठ कर स्थिर होते ही दो व्यक्ति उसमें से बाहर आकर रास्ते पर मानो एक दूसरे से मिल रहे हैं।

किसन : राम राम महादूभाई।

महादू : राम राम।

किसन : खेत पर जल्दी जा रहे हो आज ?

महादू : हाँ—सोच रहा हूँ, जरा नरमी के लिए निकल जाऊँ।

किसन : तुकाराम के बेटे की अटपटी बातें तो कानों पर आयी ही होंगी ?

महादू : क्या हुआ ?

किसन : चार साल था न गाँव के बाहर. . ।

महादू : जानता हूँ।

किसन : गया था न देहू, पूना, बंबई की तरफ। वहाँ कुछ उल्टा सीधा देखकर आया है और वही बना रहा है यहाँ सबरो।

महादू : क्या बना रहा है ?

किसन : महार अछूतों के लौंडे, सुना है, पंढरपुर के विठोबा के मंदिर में प्रवेश करने पर तुले है।

महादू : अरे रे-सच ? कली घुस गयी है सभी के मन में !

किसन : इसीलिए तुकाराम महाराज ने कहा है—सुनो कली का फल भविष्य के अनर्थ का मूल। चार वर्ण अठारह जाति। भोजन करेंगे एक पाति।

महादू : फिर क्या हुआ ?

किसन : क्या होने का ? ताला लगाकर पुजारी भाग गया।

महादू : अच्छी सूझी रे उसे।

किसन : कोई फायदा नही हुआ।

महादू : क्यो ?

किसन : ताला तोड़कर सभी अंदर घुस गए।

महादू : जब देवता का कोप होगा तब पता चलेगा। इसी तुकाराम के बाप ने चितामन महाराज के पैर पर मस्तक रखा था तो सारा गाँव पटकी से हिल गया था।

किसन : बहुत छोटा था मैं तब।

महादू : पर मैं था कुछ कुछ समझदार।

किसन : आगे क्या हुआ ?

महादू : क्या होने का ? चंदर पोलिस पटेल बहुत समझदार आदमी। मोगलाई में भी उनका रौब था। उन्होंने पोतराज को हुक्म दिया। पोतराज में देवी का संचार हुआ, और वह बोला, "तुकाराम के बाप का भोग चाहिए। सभी पापों का मूल यही है।"

किसन : देवी माँ बोली ?

महादू : कैसा भोला है रे तू ? काहे की देवी माँ। पोतराज को पटेल ने धमकाया था। फिर उसकी क्या मजाल कि पटेल की बातों को वह टाल सके।

किसन : अच्छा अच्छा ! फिर....?

महादू : फिर क्या ? साजोशान के साथ बाजे बजाते सभी निकले तुकाराम के घर। वहाँ पिराजी ने उसके हाथ-पैर बांधकर यहीं गहरे पानी में फेंक दिया उस पाप को।

किसन : उस पाप को तुमने फेंक दिया, अब इस पाप का क्या करेंगे ?

महादू : किस पाप का ?

किसन : मनोहर के पाप का। सुना है हमारे मंदिर में घुसेगा।

महादू : उसके दादा की जो हालत की गई, वही उसकी भी करेंगे।

जोशी : [पंक्ति से बाहर आते हुए] उधर उसने पूरी तैयारी कर ली है। तुम यहीं बैठो, बातें करते हुए।

महादू : किसन ?

जोशी : उसी लौंडे ने—मनोहर ने—आज ही चार लौंडों को एक किया है उसने। [जाने लगता है]

महादू : और तुम कहाँ जा रहे हो ?

जोशी : हमने भी कर रखी है न तैयारी—मसान में जाने की। डिण्डी आएगी उसी दिन मंदिर में घुसने की ठान ली दो लौंडों ने।

महादू : मतलब आज....?

जोशी : नहीं परसों....। मैंने ही उसे गलत तिथि बताई दो दिन बाद की। वरन् गांव की आबरू पहुंच गई होती पंढरपुर तक। सब तैयारी बेकार हो गई, दिण्डी पहले ही आ गयी।

महादू : नहीं तो लगता है, उनका मनसूबा था मंदिर में जाने का।

जोशी : केवल सोनपुर के ही नहीं, बल्कि आस-पास के सभी गांव के लीडरों को बुलाया था उस पोट्टे ने। सभी आने वाले थे। अब आओ। कहना परसों—पूरा बंदोबस्त किया है हमने।

किसन : जोशी महाराज, बड़ी होशियारी बताई।

जोशी : इसमें काहे की होशियारी ?

किसन : नहीं कैसे ? सभी गांव को जगा दिया।

जोशी : हाँ—ठीक है। पर इसमें मेरी कोई होशियारी नहीं है। चंदर पटेल का ही वैसा हुक्म था। भला हम क्या उनके हुक्म के बाहर जाते ?

महादू : वैसे शिवाजी पहले ही से है बड़ा ईमानदार।

किसन : मतलब पटेल को यह सब कुछ....

जोशी : सिर्फ मालूम ही नहीं। बाद को भी पूरी तैयारी हो चुकी है। अपना काम अब सिर्फ बाती लगाने का।

किसन : किसको ?

जोशी : किसी को नहीं जी—मंदिर में जाने की उनकी योजना थी न ? बस्स। वही उनके मुँह से कहलावानी—हाँ ?

महादू : आ ही गए देखो वह लोग।

[पीछे से शिवाजी, तुकाराम, मनोहर, गोपाल, बाहर आते हैं, भजन करते हुए। जोशी महाराज को देखकर कुछ दूर ही ठिठक कर खड़े रहते हैं।]

किसन : क्यों भाई किधर ?

पिराजी : दिण्डी श्रायी है न, ठाकुर महाराज की।

जोशी : इसका मतलब दो दिन पहले ही श्रा पहुंची दिण्डी। तिथि के श्रनुसार कुछ भूल हुई-सी लगती है।

तुकाराम : तिथि के बारे में महाराज से गलती नहीं हो सकती।

जोशी : क्यों रे ? क्या मतलब है तेरे बोलने का। पंचांग नहीं पढ़ सकते हम यही न ? हम ?

महादू : बहुत मस्ती चढ़ गई यार तुक्या तुझे। गाँव के जोशी का काम क्या तेरे महाराज करते हैं ?

किसन : जोशी महाराज का श्रपमान करता है ?

मनोहर : खामख्वाह क्यों इल्जाम लगाते हो ? किसका श्रपमान किया इन्होंने ?

किसन : तू चुप रह बे पोट्टे। तू कुछ नहीं समझेगा। तुक्या, पंचांग क्या होता है यह तेरे बाप ने भी देखा है कभी ?

मनोहर : हां बाप न निकालो पटेल।

महादू : हां-हां उसकी बात मत निकालो किसन। भूल गया हैजे ने कैसे पटकी दी थी गाँव को। श्रब फिर उसे निकालोगे दुबारा तो फिर से एक बार हैजे की बीमारी श्राएगी।

तुकाराम : मेरे बाप की बात क्यों करते हो पटेल श्रब। उसने भोगा श्रपने करम का फल।

किसन : श्राज तुझे भुगतना पड़ेगा तेरे बेटे के कर्म का फल।

तुकाराम : क्या किया है उसने।

महादू : पिन्या हाथ-पैर बाध उसके....

मनोहर : कोई जरूरत नही। जहाँ कहो, हम चलेंगे। पर यह जता देना चाहता हूँ कि न्याय-अन्याय का निर्णय करने का अधिकार तुम्हें नही है। तुम्हारे पोतराज के शरीर मे प्रवेश करने का स्वाग भरने वाली तुम्हारी देवी माँ को भी नही है। जनता का राज है, ऐसा कहते है गांधी नेहरू उधर।

महादू : उधर होगा, इधर चदर पटेरा का राज है। पिन्या बांधता है या नहीं ?

[पिराजी जकड़कर उसे बाधने का अभिनय करता है। सिदनाक एक दिशा से और शेष आदमी दूसरी दिशा से निकलकर पूर्ववत् कतार बन जाते है। कतार बनते ही भजन सुनाई देता है। धीरे धीरे उस गीत मे दिण्डी भी शामिल होकर आती है]

कहाँ रुके हो आधा भर। पांडुरग पढरी के।
तेरे दरबार मे गुगरूर चल रहे नाच नगे दलालों के।
ना रहा अर्थ समाज को
शेष रही केवल भीती
बस करो अब आत्मतुष्टी प्रभु !
छोड़ निकालो भोग आरती। २

[गीत गाते हुए दिण्डी गतिमान होते ही सिदनाक प्रवेश करता है। वह हाँफ रहा है।]

सिदनाक : महाराज, भारी सकट खड़ा हुआ है। [यह सवाद चल रहा है उसी समय ग्यानबा तुकाराम का धीमे स्वर में घोष प्रारम्भ होता है।]

महाराज : क्यों क्या हुआ ?

सूत्रधार : मनहर माऊली पिराजा तुकाराम।

विदूषक : पिराजी तुकाराम।

सूत्रधार : पिराजी तुकाराम।

विदूषक : तुकाराम तुकाराम।

सूत्रधार : तुकाराम तुकाराम।

विदूषक : कभी उसका होगा क्या घासीराम।

सूत्रधार : घासीराम घासीराम।

विदूषक : [अपने को अचानक सम्भालते हुए] अरे, बीच में ही यह घासीराम कहां से ले आया ? वह कोतवाल तो नहीं है ?

विदूषक . बिल्कुल वही। तेंडुलकर के नाटक का नाना से बदला लेने वाला घासीराम कोतवाल।

सूत्रधार : वह यहां कैसे आया ?

विदूषक : आया नहीं, लाया गया।

सूत्रधार : किसलिए ?

विदूषक : कुछ फायदा नहीं।

सूत्रधार : कुछ फायदा नहीं ? क्यों क्या हुआ ?

विदूषक : तुकाराम का कभी घासीराम नहीं होगा।

सूत्रधार : मतलब ?

विदूषक : मतलब और क्या हो सकता है ? अब तुकाराम को पत्थर बांधकर ले गये या नहीं ?

सूत्रधार : ले गये न ?

विदूषक : क्यों ?

सूत्रधार : उसने जोशी महाराज का अपमान किया।

विदूषक : झूठी तिथि किसने बतलायी ?

सूत्रधार : जोशी महाराज ने।

विदूषक : किसको ?

सूत्रधार : तुकाराम को....विठोबा के भक्तों को।

विदूषक : विश्वासघात किसने किया ?

सूत्रधार : जोशी महाराज ने।

विदूषक : तो सजा किसे मिलनी चाहिए।

सूत्रधार : जोशी महाराज को [गड़बड़ा जाता है।]

विदूषक : हाँ-हाँ गड़बड़ाओ नहीं। बोलबाला किया कि उन्नीस महीने जेल में.... समझा ?

सूत्रधार : हाँ-हाँ समझ गया।

विदूषक : तुकाराम ने चोक गाय को गाँव में घुमाया। महारों का बलूत शुरू किया पर तुकाराम को क्या मिला ?

सूत्रधार : रोहिलों की मार।

विदूषक : अब मनोहर कहता है कि मन्दिर में जाएंगे, उन्हें क्या मिलेगा ?

सूत्रधार : [चुप्पी]

विदूषक : यहीं भी जाओ, द्वार के पास तीन। तुकाराम का तुकाराम, तुकाराम का बेटा मनोहर हम गये ? आराम हो।

सूत्रधार : मतलब ?

विदूषक : भँवरा कैसे घूमता है ? गर गर गर पर एक ही जगह । बस ऐसे ही मनोहर का बच्चा घूमेगा ।

सूत्रधार : नही समझा ।

विदूषक : वैसे तुकाराम बहुत सरल, बहुत सीधा है न ?

सूत्रधार : लगता तो है ।

विदूषक : तुकाराम जैसे ही सखाराम, गगाराम सरल सीधे हैं ।

सूत्रधार : होंगे, होंगे ।

विदूषक : होंगे ही । जिसके नाम में राम वे सभी सीधे जैसे जगजीवन...

सूत्रधार : समझा, समझा । आगे बोल ।

विदूषक : फिर वह तुकाराम, गगाराम बनने के बजाय घासीराम क्यों नहीं बना ?

सूत्रधार : मुझे कोई आपत्ति नही ।

विदूषक : मुझे भी नही, पर होता नही ।

सूत्रधार : क्यों ?

विदूषक : क्योंकि शंबूक से लेकर सभी को यही लगता है कि राम ने शंबूक की हत्या उसकी भलाई के लिए ही की ।

सूत्रधार : अब तू बहुत गहराई में जा रहा है हाँ ।

विदूषक : नहीं-नही मैं रामायण में जा पहुंचा हूँ । [तुरन्त एक आसन लाकर रखा जाता है । सियावर रामचन्द्र की जय, की घोषणा होती है । रामचन्द्रजी की मुद्रा में विदूषक आसनस्थ होता है । घोषणा देनेवालों में से दो सेवक बन दोनों तरफ

खड़े रहते हैं। छत्र लेकर एक पार्श्व में खड़ा। विदूषक बड़ी शान से घोषणाओं का स्वीकार करता है।]
मंत्रीगण और मेरे प्रजाजन बंधु—
[आक्रोश करते हुए एक का प्रवेश करने का प्रयत्न]

एक : दया करो, प्रभु दया करो।

विदूषक : द्वारपाल, उस याचक को मार्ग दो। उसे अन्दर आने दो।

एक : प्रभु मैं लुट चुका हू। मेरा रक्षण करो। [घुटने टेकता है]

विदूषक : क्यों याचक, कहो, क्या बात है ?

एक : प्रभु मैं एक गरीब ब्राह्मण हू।

विदूषक : क्या बात है ब्राह्मण ? हम तुम्हें निर्भय देते हैं।
कौनसा संकट आ पड़ा है, तुम पर ?

एक : मेरे तरुण पुत्र की मृत्यु हो गई है प्रभु। इस रामराज्य में मैं अभागा बना हूं नाथ।

विदूषक : क्या कारण ?

एक : राज्य में जरूर कोई ऐसा पाप होगा, हे भगवान् जिस कारण मेरे पुत्र की मृत्यु हुई।

विदूषक : ब्राह्मण, आप चिंता रहित होकर हमें आशीष दें। हम पाप के मूल को खोज लेंगे। राज्य का कोना-कोना छानकर, ढूंढ निकालेंगे पाप का मूलस्थान। अमात्य....।

सूत्रधार : आज्ञा महाराज....।

विदूषक : इस गरीब ब्राह्मण के संकट का उत्तरदायित्व हम पर है। हम आज्ञा देते है, इसी समय जाओ। राज्य का कोना कोना छान डालो।

सूत्रधार . मतलब ?

विदूषक : भँवरा कैसे घूमता है ? गर गर गर पर एक ही जगह। वस ऐसे ही मनोहर का बच्चा घूमेगा।

सूत्रधार : नही समझा।

विदूषक : वैसे तुकाराम बहुत सरल, बहुत सीधा है न ?

सूत्रधार : लगता तो है।

विदूषक : तुकाराम जैसे ही सखाराम, गंगाराम सरल सीधे है।

सूत्रधार : होगे, होंगे।

विदूषक : होगे ही। जिसके नाम मे राम वे सभी सीधे जैसे जगजीवन...

सूत्रधार : समझा, समझा। आगे बोल।

विदूषक : फिर वह तुकाराम, गंगाराम बनने के बजाय घासीराम क्यों नही बना ?

सूत्रधार : मुझे कोई आपत्ति नही।

विदूषक : मुझे भी नही, पर होता नही।

सूत्रधार : क्यो ?

विदूषक : क्योंकि शंबूक से लेकर सभी को यही लगता है कि राम ने शबूक की हत्या उसकी भलाई के लिए ही की।

सूत्रधार : अब तू बहुत गहराई मे जा रहा है हाँ।

विदूषक : नहीं-नहीं मैं रामायण मे जा पहुचा हूँ। [तुरन्त एक आसन लाकर रखा जाता है। सियावर रामचन्द्र की जय, की घोषणा होती है। रामचन्द्रजी की अदा मे विदूषक आसनस्थ होता है। घोषणा देनेवालो मे से दो सेवक बन दोनो तरफ

खड़े रहते हैं। छत्र लेकर एक पार्श्व में खड़ा। विदूषक बड़ी शान से घोषणाओं का स्वीकार करता है।]
मंत्रीगण और मेरे प्रजाजन बंधु—
[आक्रोश करते हुए एक का प्रवेश करने का प्रयत्न]

एक : दया करो, प्रभु दया करो।

विदूषक : द्वारपाल, उस याचक को मार्ग दो। उसे अन्दर आने दो।

एक : प्रभु मैं लुट चुका हूं। मेरा रक्षण करो। [घुटने टेकता है]

विदूषक : क्यों याचक, कहो, क्या बात है ?

एक : प्रभु मैं एक गरीब ब्राह्मण हूं।

विदूषक : क्या बात है ब्राह्मण ? हम तुम्हें निर्भय देते हैं।
कौनसा संकट आ पड़ा है, तुम पर ?

एक : मेरे तरुण पुत्र की मृत्यु हो गई है प्रभु। इस रामराज्य में मैं अभागा बना हूं नाथ।

विदूषक : क्या कारण ?

एक : राज्य में जरूर कोई ऐसा पाप होगा, हे भगवान् जिस कारण मेरे पुत्र की मृत्यु हुई।

विदूषक : ब्राह्मण, आप चिंता रहित होकर हमें आशीष दें। हम पाप के मूल को खोज लेंगे। राज्य का कोना-कोना छानकर, ढूंढ निकालेंगे पाप का मूलस्थान। अमात्य....।

सूत्रधार : आज्ञा महाराज....।

विदूषक : इस गरीब ब्राह्मण के संकट का उत्तरदायित्व हम पर है। हम आज्ञा देते हैं, इसी समय जाओ। राज्य का कोना कोना छान डालो।

सूत्रधार : मतलव ?

विदूपक : भँवरा कैसे घूमता है ? गर गर गर पर एक ही जगह । कल ऐसे ही मनोहर का वच्चा घूमेगा ।

सूत्रधार : नहीं समझा ।

विदूपक : वैसे तुकाराम वहुत सरल, वहुत सीधा है न ?

सूत्रधार : लगता तो है ।

विदूपक : तुकाराम जैसे ही सखाराम, गगाराम सरल सीधे है ।

सूत्रधार : होंगे, होगे ।

विदूपक : होगे ही । जिसके नाम मे राम वे सभी सीधे जैसे जगजीवन...

सूत्रधार : समझा, समझा । आगे वोल ।

विदूपक : फिर वह तुकाराम, गगाराम वनने के वजाय पासीराम क्यों नही वना ?

सूत्रधार : मुझे कोई आपत्ति नही ।

विदूपक : मुझे भी नही, पर होता नही ।

सूत्रधार : क्यों ?

विदूपक : क्योकि शबूक से लेकर सभी को यही लगता है कि राम ने शबूक की हत्या उसकी भलाई के लिए ही की ।

सूत्रधार : अब तू बहुत गहराई मे जा रहा है हां ।

विदूपक : नही-नही मैं रामायण मे जा पहुंचा हूं । [तुरन्त एक आसन लाकर रखा जाता है । सियावर रामचन्द्र की जय, की घोषणा होती है । रामचन्द्रजी की अदा मे विदूपक आसनस्थ होता है । घोषणा देनेवालों मे से दो सेवक बन दोनों तरफ

खड़े रहते है। छत्र लेकर एक पार्श्व मे खड़ा। विदूषक बड़ी शान से घोषणाओं का स्वीकार करता है।]
मंत्रीगण और मेरे प्रजाजन बंधु—
[आक्रोश करते हुए एक का प्रवेश करने का प्रयत्न]

एक : दया करो, प्रभु दया करो।

विदूषक : द्वारपाल, उस याचक को मार्ग दो। उसे अन्दर आने दो।

एक : प्रभु मैं लुट चुका हूं। मेरा रक्षण करो। [घुटने टेकता है]

विदूषक : क्यों याचक, कहो, क्या बात है ?

एक : प्रभु मैं एक गरीब ब्राह्मण हूं।

विदूषक : क्या बात है ब्राह्मण ? हम तुम्हें निर्भय देते हैं।
कौनसा संकट आ पड़ा है, तुम पर ?

एक : मेरे तरुण पुत्र की मृत्यु हो गई है प्रभु। इस रामराज्य मे मैं अभागा बना हूं नाथ।

विदूषक : क्या कारण ?

एक : राज्य मे जरूर कोई ऐसा पाप होगा, हे भगवान् जिस कारण मेरे पुत्र की मृत्यु हुई।

विदूषक : ब्राह्मण, आप चिंता रहित होकर हमे आशीष दें। हम पाप के मूल को खोज लेंगे। राज्य का कोना-कोना छानकर, ढूंढ निकालेंगे पाप का मूलस्थान। अमात्य....।

सूत्रधार : आज्ञा महाराज....।

विदूषक : इस गरीब ब्राह्मण के संकट का उत्तरदायित्व हम पर है। हम आज्ञा देते है, इसी समय जाओ। राज्य का कोना कोना छान डालो।

सूत्रधार : आज्ञा महाराज....।

[इस बीच मनोहर को जकड़कर बांधे जबर्दस्ती खींच लाते हैं]

विदूषक : यह क्या हो रहा है सेवक ?

सेवक : महाराज, यह निपाद, अयोध्या के समीप वन में तपस्या कर रहा था।

सेवक : महाराज, यह अनर्थकारी जीव यहां आने के लिए तैयार नही था।

विदूषक : क्या नाम है तुम्हारा ?

मनोहर : शबुक।

विदूषक : तुम निपाद हो ?

मनोहर : जी....।

एक : विश्व संरक्षक भगवन् यही है वह पाप, मेरे जैसे गरीब ब्राह्मण के पुत्र की मृत्यु का कारण। यह अनधिकारी शूद्र का तपोबल ही पाप का मूलस्थान है।

विदूषक : तुम तपस्या कर रहे थे ?

मनोहर : जी....।

विदूषक : अनधिकारी हो यह जानते हुए भी।

मनोहर : जी।

विदूषक : [खड़ा होकर] अमात्य, हटा दो इस पापी को यहाँ से। और शिरच्छेद कर दो उसका *[सिंहासन से नीचे उतरता है। सिया रामचन्द्र की जय की घोषणा करते सब निकल जाते*

है। आसन उसी स्थान पर है। घोषणा के दौरान आसन के संमुख एक कुर्सी लाकर रख दी जाती है। पुराने ढंग की। विदूषक उस कुर्सी पर पांव फैलाकर बैठता है]

विदूषक : गणप्या, ए गणप्या....।

सूत्रधार : जी मालिक।

विदूषक : अरे, गिरती छत को बल्ली लगाने जैसा क्यों तनकर खड़ा है ?

सूत्रधार : ऐसे ही। राह देख रहा हूँ, मयादूराव और किसनराव जाने कब आएगे।

विदूषक : अरे आएंगे न। जोशी महाराज को है उसकी फिकर ?

सूत्रधार : आ गये न सभी।

किशन : राम राम पटेल।

महादू : राम राम।

विदूषक : क्योंजी, जोशी महाराज, इस तरह से मुंह लटकाये क्यो चले आ रहे हो ?

महादू : बात ही कुछ ऐसी है।

विदूषक : क्या हुआ ?

किसन : अरे, तुक्या का बेटा हमारे देवता को अपवित्र करने चला था ?

महादू : तुक्या ने कहा कि जोशी महाराज पंचांग नहीं पड सकते।

विदूषक : क्या तुमने अपने कानों से सुना ?

किसन : तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ।

विदूषक : अरे, फिर खाली हाथ हिलाते क्यों आए तुम लोग ? क्यों नहीं ले आये उसे पकड़कर।

महादू : नीचे खड़ा किया है।

विदूषक : मेरे सामने ले आओ।

सूत्रधार : अरे, इधर लाओ उसे। [तुकाराम और मनोहर को बांधकर पिराजी ले आता है]

विदूषक : तुक्या, क्या यही है तेरा बेटा ?

तुकाराम : जी।

विदूषक : किसन जो बोल रहा है क्या वह सच है ? यही बच्चा हमारे मंदिर की सीढ़ी चढ़ने वाला था ?

मनोहर : सच है।

विदूषक : पूना-बम्बई जाकर बहुत ढीठ बन गया है लौंडा। ऐं। नजर मिलाकर बात करता है।

जोशी : अरे, माफी माँगने तक को वह तैयार नहीं है।

विदूषक : कैसे मांगेगा। मालूम पड़ा है न कि सरकार उनकी है। अरे, पर उससे क्या ? वह तो रही दिल्ली में और दिल्ली बहुत दूर है।

जोशी : अब क्यों बोलती बंद हो गई ? बड़ी शान की बातें कर रहा था मेरे सामने।

विदूषक : [उठ खड़ा होता है] अभी के अभी इन दोनों को गुड़ की उबलती कढाई में फेंक दो। और हाँ, जोशी महाराज, शहर जाकर डॉक्टर से कहना गुड़ बनाते वक्त हमारे दो मजदूर गुड़ की कढाई में गिरकर जले हैं। कहना, जल्दी आना।

[सभी जाते हैं : मनोहर का आक्रोश]—यह अन्याय है, जुल्म है। हम बेगुनाह हैं। गाँव वाले हमें गुड़ की कढ़ाई

में फेंककर जिंदा जला रहे हैं। [केवल सूत्रधार और विदूषक मंच पर हैं। एक ओर कुर्सी न्यायमूर्ति के लिए लाकर रखी जाती है। न्यायमूर्ति की अदा में विदूषक उस कुर्सी पर बैठ जाता है। कुर्सी के सामने टेबुल है। दो कटघरे लाकर रखे गए हैं।]

सूत्रधार : फरियादी मनोहर तुक्या "हाजिर होऽऽ मुलजिम मनोहर तुक्या हाजिर होऽऽ [मनोहर कटघरे में आकर खड़ा रहता है] गवाह पिम्या सकनाजी हाजिर होऽऽ [पिराजी गवाह के कटघरे में खड़ा होता है। दो वकील उपस्थित होते हैं। शपथ ग्रहण विधि सम्पन्न होने पर]

वकील : *देखो पिराजी, इस केस में तुम्हारी गवाही ही अंतिम और महत्वपूर्ण है।*

पिराजी : जी।

वकील : इन मुल्जिमों को तुम पहचानते हो ?

पिराजी : जी सरकार। यह मनोहर सवई, वह तुक्या सवई का भाई है।

वकील : कब से पहचानते हो ?

पिराजी : एक ही गाँव में जन्म हुआ। गाँव ही में बड़े हुए। बुजूरग कमठा के हैं हम और एक ही मालिक के पास सालदार थे हम।

वकील : किसके पास ?

पिराजी : रायभान पटेल के यहाँ ?

वकील : कितने सालों से ?

पिराजी : बारह साल हुए।

वकील : इनको बहनें कितनी ?

पिराजी · एक।

वकील : न्यायमूर्ति महोदय, गवाह से इस तरह के सवाल पूछकर मेरे मित्र न्यायालय के समय का अपव्यय कर रहे हैं।

वकील : न्यायमूर्ति महोदय, इस गवाह का ब्योरा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

विदूषक · ठीक। औ. ..।

वकील : इनकी बहन की उम्र कितनी है ?

पिराजी : होगी कोई बीस बाईस साल।

वकील : उसकी शादी हो गई है।

पिराजी : नहीं।

वकील : क्यों ?

पिराजी : बहुत गरीबी है घर में साब। शादी के लिए उनके पास पैसा नहीं है।

वकील : तुम्हें कैसे मालूम ?

पिराजी · मेरे सामने ही पटेल से पैसे माँगे इन दोनों ने।

वकील : पटेल ने क्या कहा ?

पिराजी : अभी पैसे नहीं हैं, आगे देखेंगे।

वकील : फिर ?

पिराजी : मनोहर ने मुझसे कहा कि, अगर पटेल पैसे नहीं देंगे तो अखबार में खबर छापेंगे कि पटेल ने हमारी बहन की आबरू लूटने की कोशिश की।

वकील : तुमने क्या किया ?

पिराजी : मैंने हर तरह से समझाने की कोशिश की पर जिसके यहाँ बारह साल नौकरी की, वहाँ पाँच छः सौ रुपये भी न मिलें, इस बात पर बहुत ही गुस्सा आया उनको।

वकील : आगे क्या हुआ ?

पिराजी : गुस्से में ही वे दोनों पटेल की हवेली पहुँचे।

वकील : तुमने देखा ?

पिराजी : अक्सर रात को वहीं रहता हूँ। उस दिन भी मैं वहीं था।

वकील : आगे क्या हुआ ?

पिराजी : बोलते... बोलते तीनों हाथापाई पर उतर आये।

वकील : तो फिर तुकया की आँखें किसने निकाली ?

पिराजी : निकाली नहीं, निकली।

वकील : अपने आप ?

पिराजी : हाँ, अपने आप। बात यह हुई कि पटेल झगड़ा टालने की खातिर दरवाजा बंद करके अंदर जा रहे थे, तब यह दोनों दरवाजा ढकेल रहे थे। दरवाजे में बड़े बड़े कीले लगे हुए थे। तुकया ने जोर लगाकर दरवाजा ढकेल दिया। दरवाजा खुला पर कीले घुस गए आँखों में और आँखें बाहर आ गईं।

वकील : तुम क्या कर रहे थे ?

पिराजी : मैं भी पटेल के साथ दरवाजा बंद कर रहा था।

वकील : न्यायमूर्ति महोदय, अब तक ली गई गवाही को यह गवाही अधिक स्पष्ट करती है। मनोहर गवई और तुकाराम गवई पर रायभान पटेल ने हमला नहीं किया था बल्कि वे तो

झगड़ा टालने के लिए और आत्मरक्षा के लिए दरवाजा बंद कर रहे थे। इस दौरान खुद की असावधानी के कारण दुर्भाग्य से तुकाराम की आँखें गयी। लेकिन मुलजिम ने न्यायालय मे झूठा बयान दिया और रायभान पटेल पर झूठा इल्जाम लगाकर उनकी बेइज्जती की, इसके लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि दोनों को सजा मिलनी चाहिए।

विदूषक : [वकील से] आपको क्रॉस करना है ?

वकील २ : नो, थैंक्यू।

विदूषक : पिराजी, तुम जा सकते हो। [पिराजी कटघरे से बाहर आता है, इतने में भागते हुए किसन प्रवेश करता है]

किसन : न्यायमूर्ति महोदय, हमें इन्साफ चाहिए।

विदूषक : तुम्हारा केस रेकॉर्ड पर है।

किसन : हाँ सरकार।

विदूषक : क्या नाम है तुम्हारा ?

किसन : किसन वल्द महादू रणखाबे।

विदूषक : गाँव ?

किसन : उरण गाँव

विदूषक : प्रोसीड द केस।

किसन : न्यायमूर्ति महोदय, हम उरणगाव के गरीब कुरमी। हम किसी झमेले में नही पड़ते।

विदूषक : फिर यहाँ क्यों आये हो ?

किसन : ३०२ के तहत हम पर खून का इल्जाम लगाया गया है।

विदूषक : ऐसा ? कौन थे वे ?

किसन : ये ही चाचा मतीते हुजूर । सारनवरे इनका उपनाम । चेहरे पर न जाइए माई-बाप । इनका बाप बड़ा सात्विक । गाँव में हैजे की बीमारी आयी । लोग एक एक कर मरने लगे । उस साधू पुरुष ने आत्म-बलिदान किया, जलसमाधी ली । गाँव का महान् संकट दूर किया । पर ये कहते है कि हमने ही उसे ढकेल दिया ।

विदूषक : रेकॉर्ड तो कहता है कि लाश के हाथ-पैर को रस्सियाँ बंधी थीं ।

किसन : वह हमने नहीं बांधी थी सरकार । मरने वाले ने खुद बांध ली थी । जलसमाधी लेते समय देह का मोह पैदा न हो इसलिए ।

विदूषक : ओह आय सी ।

किसन : हाँ । हुजूर । अब आप ही देखिए ।

विदूषक : मुल्जिम मनोहर और तुकाराम । तुम पर लगाए गए सभी इल्जाम तुमने सुन लिये हैं । तुम दोनों में से किसी एक को अपनी ओर से सफाई देने का अवसर मैं देता हूँ । तुम दोनों की उम्र को ध्यान में रखकर युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप मे यह अवसर मैं मनोहर को देता हूँ । मनोहर, तुम्हें कुछ कहना है ?

[रंगमंच पर अब प्रकाश केवल मनोहर पर ही है]

मनोहर : जी हाँ, न्यायमूर्ति महोदय, मैं कहने जा रहा हूँ आज मेरे मन की बात । युग-युग से विरासत में मिली वेदना के कारण प्रकट होगी मेरी वाणी मे आशय की तीव्रता ।

दरिद्रता का चक्रवर्ती सम्राट। लाचार नीति का प्रवक्ता आर्य चाणक्य। मेरी आशा आकांक्षाओं के सभी चेतोहर शिल्प रूढ़ि एवं परंपरा के प्रस्तर के नीचे दबा दिये गये हैं। मेरी आत्मा की हुंकार कभी होठों के बाहर निकली ही नहीं। आपकी सीमा पार की हुई मेरी आँसुओं की सरस्वती कभी जी भर के प्रवाहित हो न सकी। पर आज मैं बोलने जा रहा हूँ। युग-युग से मेरे रक्त में प्रवाहित ध्वनि से अंकुरित हो रही है शब्द की नयी कोंपलें। नीली काली वेदना में ठिठरा हुआ रक्त आज फूटकर प्रज्वलित कर रहा है शब्दों के भीतर की आग। मैं हूँ आपके आर्य-धर्म की मर्यादा तोड़ने वाला पापी शंबुक। यहाँ मेरा ही तपोबल आपके लिए पाप का मूलस्थान सिद्ध हुआ। हर तरह से संभव होते हुए भी, सीता की इच्छा के विरुद्ध कभी आचरण न करने वाला चौदह चौकड़ियों के राज्य का अधिपति दशानन मैं ही हूँ। स्वर्ग की एक-एक सीढ़ी चढ़ते रह गए सभी यहीं और शेष रहे अकेले अधिकार। लूत भरा कुत्ता देखकर उनकी आँखें भर आयी। पर दिखा नहीं उन्हें कभी भाईचारे की माँग करने वाले सूर्यपुत्र का रक्त जो बह रहा है मेरे शरीर में। विश्वासघाती इंद्र की नफरत का जहर मेरी धमनियों में बह रहा है जो ले गया कवच कुंडल। उस विष्णु के विरोध में भी जिसने विश्वामित्र के विश्वनिर्मिती के सपने का गला घोट दिया। नाथ की गोद में बैठा वात्सल्य मैं हूँ। मंगल-वेढ़ा के ढेर के नीचे दबी हड्डियों की पुकार मैं हूँ। चले आओ भगवन्—चलो नहीं धीमे—इस गीत में भरी आर्तता का स्वर मैं हूँ। राष्ट्रपिता को भी डंके की चोट पर चुनौती देनेवाला मैं ही हूँ। मैं ही हूँ वह मवई जिसे राव कहने के

बदले में अपनी आँखों का दान करना पड़ा। मैं ही हूँ उरणगाँव का सानरवरे, उनपर अभियोग चलाने वाला जिन्होंने मेरे चाचा को बली चढ़ायी। मैं ही हूँ चिंगारी जिसने पाँच हजार वर्ष पुराने दारु भण्डार को आग लगा दी। देह के अनेक आवरण और समय के कितने ही मोड़ पार कर आज मैं यहाँ आ पहुँचा हूँ। आज मैं खड़ा हूँ मंदिर प्रवेश के मोड़ पर। अगर आप इसे गुनाह समझते हैं तो वह मैंने किया है, लेकिन मेरी भंवर जैसी गति को मुझे कहीं तो रोकना था। एक ही जगह चल रही परिक्रमा समाप्त करनी थी। न्यायमूर्ति महाराज, अगर मैंने गुनाह किया होगा तो बस यही है। मैं भंवर। एक ही जगह पर घूमता हुआ भंवर।

[मनोहर पर स्थित प्रकाश मंद होकर सारा मंच प्रकाशित हो जाता है। तुकाराम पूर्ववत् खड़ा है। दोनों कटघरे हटाये जाते हैं। बैठक की रचना अब बनी है। माथे पर शुभ्र टोपियाँ, एकाध नीले रंग की और गेरुए रंग की भी टोपी उनमें दिखाई पड़ती है।

विदूषक : भाइयों, क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि इन बाप बेटों ने गुनाह किया है ? [इस बार विदूषक मुखिया की अदा और लहजे में बात करता है। समूह में से प्रतिसाद की आवाज हाँ। हाँ। हाँ।] ठीक है, ठीक है। कहते हैं कि पंच परमेश्वर होता है। अब लोकतंत्र है। अगर तुम कहोगे तो इन्हें थाने भेज देने पर अपने सोनापुर गाँव की इज्जत....।

सभी : ना-ना-ना....।

विदूषक : अच्छा, तो फिर आप ही कहिए, इन्हें क्या सजा दी जाय ?

किसान : इन दोनों को गाँव से निकाल बाहर करो। तड़ीपार कर दो।

विदूषक : कुछ भी हो पर ये अपने भाई हैं।

महादू : बहिष्कृत कर दो इन महारों को, नहीं तो ऐसा करेंगे—इनके हाथ तोड़ेंगे।

विदूषक : अब मोगलाई का जमाना गया। अब तो लोकतंत्र है। कुछ रचनात्मक बात करो।

पिराजी : [नीली टोपी पहने है। दबी नजर से इधर-उधर देखता है। सभी की नजर उस पर। जब उठकर कहता है] सरपंच !

किसन : ए-पिन्या-बैठ नीचे।

जोशी : सरपंच जी, मुझे लगता है ये दोनो जुर्माना दे दें।

पिराजी : [फिर से उठकर] सरपंच साहब, इसके बजाय इन्हें थाने भेज दीजिये।

महादू : ए पिन्या, नीचे बैठ। मालूम है बड़ा चुनकर आया है। क्यों रे, चुनकर आने का मतलब यह तो नहीं कि तेरी अक्ल बढ़ गयी है। बैठ नीचे।

विदूषक : बोलने दो, बोलने दो पिराजी को। लोकतंत्र में सभी को बोलने का अधिकार होता है।

पिराजी : सरपंच, मुझे लगता है, इन्हे एक बार माफ कर दिया जाए।

विदूषक : [खड़ा होकर] भाइयो, [करतल ध्वनि] आप सब लोगो की बात मैंने सुन ली। कुछ भी हो, तुकाराम और मनोहर अपने गाँव भाई है। भाई भूल करता है इसलिए उसको मार-पीट करना, गाँव से बाहर निकाल देना, जुर्माना कर दंड देना, ये बातें पुरानी हो गयी है। गांधीबाबा कहते हैं कि अब रामराज्य चाहिए। [करतल ध्वनि] तो इन्होने गुनाह किया फिर भी हम इन्हें बहिष्कृत नहीं करेंगे। भला-बुरा नहीं कहेंगे। जुर्माना नहीं लेंगे। श्रीमान् पिराजी के कथना-

नुसार हम उन्हें माफ कर देते हैं। [करतल ध्वनि] ठहरो— माफ करने से आदमी सर चढ़ जाता है। फिर से दुबारा गुनाह करता है। इसलिए सजा होनी ही चाहिए। बिल्कुल मामूली सजा। अपनी माई-बाप सरकार की आज्ञा से अपने गाँव में सामूहिक कुआँ की खुदाई हुई है। पानी अब दो-चार हाथ पर ही लगेगा। यह कुआ हम सबका है, तब बाकी बचा हुआ थोड़ा-सा जो काम है, वह ये दोनों करें। [करतल ध्वनि] इसमें गाँव के फायदे के साथ ही इनका भी फायदा है। क्यों तुकाराम, मनोहर, तुम्हें मंजूर है ?

पिराजी : [बीच में ही] मंजूर है मालिक, वे क्या बोलेंगे। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा है।

विदूषक : अब आगे की सारी व्यवस्था किसनराव पटेल देखेंगे। क्यों किशनराव ?

किसन : समझ लीजिए हो गई व्यवस्था।

विदूषक : सभा बरखास्त [तालियाँ]

सभी : [सभी एक लय-ताल में नाचने लगते हैं। तुकाराम और मनोहर को घेरा डालते हुए। बीच में दोनों का कुआ खोदने का अभिनय]

विदूषक : अरे, सिर्फ तालियाँ क्यों पीट रहे हो ? बोलो, महात्मा गाँधी की....

सभी : जय।

विदूषक : गरीबी हटाओ।

सभी : हाथ बढ़ाव—[लय में नाचने लगते हैं। इशारों से विदूषक और किसन की आपस में संकेत से कुछ बातचीत। तुकाराम और मनोहर पर लाल रंग का प्रकाश आता है। विदूषक

ग्रौर सूत्रधार ग्रागे ग्राए हुए। किसन पटेल कुछ अलग खयाल मे दूर खड़ा है। मंच पर मंद प्रकाश। गीत एवं तालियों की ग्रावाज कुछ इस ढंग से ग्रा रही है मानो दृश्य बहुत दूर से दीख पड़ता है।]

सूत्रधार : [लय ताल मे] क्या करे है ? क्या करे हैं ?

विदूषक : कुग्राँ खोदे है। कुग्रा खोदे है।

सूत्रधार : कितने मजदूर कुग्राँ खोदे है ?

विदूषक : दो मजदूर कुग्राँ खोदे है।
दो महार काम करे है।

सूत्रधार : कुग्राँ किसका ? कुग्राँ किसका ?

विदूषक : कुग्राँ गाँव का। सभी गाँव का।

विदूषक : पानी किसका ? पानी किसका ?

सूत्रधार : पानी गाँव का ही नही महारो का।

विदूषक : धोखा गरीबो को। धोखा महारो को।

[सुरंग की बत्ती सुलगाकर किसनराव दूर भागते हुए सभी को चिल्लाकर सचेत करता है, हट जाओ-भागो-दूर भागो— सभी दूर भाग जाते है। मनोहर और तुकाराम की बाहर निकलने की छटपटाहट लेकिन तभी सुरंग की विस्फोट की आवाज सुनाई देती है। दोनो घायल गिर पड़ते हैं। विदूषक ग्रौर सूत्रधार स्थिर-पाषाणवत्। ग्रपने ही रंग मे मस्त दिण्डी का प्रवेश। विट्ठल का उद्घोष। "हरि नाम का झंडा फड़केगा।" कहते हुए दिण्डी का प्रस्थान, इसमें तुकाराम और मनोहर भी शामिल होकर निकल गये हैं।

मंच पर अब केवल सूत्रधार और विदूषक और एक स्तब्ध शांति। धीरे-धीरे, ढोलकी और तुनतुने की ताल शुरू होती है।]

विदूषक : यहाँ नही रहना।

सूत्रधार : यहाँ नही रहना।

विदूषक : पीछे-पीछे जाना।

सूत्रधार : पीछे-पीछे जाना।

विदूषक : आगे-आगे बढ़ना।

सूत्रधार : आगे-आगे बढ़ाना।

विदूषक : पीछे नही जाना-आगे नही बढ़ना।

सूत्रधार : पीछे नही जाना-आगे नही बढ़ना।

विदूषक : गोल गोल घूमना जी-गोल गोल घूमना।

सूत्रधार : गोल गोल घूमना जी-गोल गोल घूमना।

विदूषक : अंग संग घूमना जी-अंग संग घूमना।

सूत्रधार : अंग संग घूमना जी-अंग संग घूमना।

[अपने ही अतराफ घूमने लगते है। तभी पटाक्षेप]

अनुवाद : प्रा. वामन जगताप
मिलिंद विज्ञान महाविद्यालय,
औरंगाबाद

---

१. महाराष्ट्र के लोकनाट्य 'तमाशा' में कथासूत्र का संकेत।

२. पोतराज : जनजीवन में पूजा स्थान प्राप्त हुई देवी 'मरीआई' का भगत।

३. अभंग की रचना प्रा. अमृत देशमुख।

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	नांव नसलेला गांव	: प्रा. अविनाश डोलस
हिन्दी अनुवाद :	बिन चेहरे का गांव	: प्रा. बी. के. चौदन्ते

प्रकाशक : 'निकाय' त्रैमासिक
दीपावली विशेषांक १९७७
संपादक, डॉ. प्रा. भाऊ लोखंडे,
'निकाय,' बुद्धनगर, डॉ. आम्बेडकर मार्ग
नागपुर-१७

मंचन : दलित थिएटर, औरंगाबाद

संपर्क : प्रा. अविनाश डोलस,
मिलिंद कला महाविद्यालय
औरंगाबाद-४३१००२

बिन चेहरे का गाँव

□ प्रा. अविनाश डोलस

[मंच पर कोई भी नही है, अचानक दर्शको मे से दो चार लोग शिकारियो के समान दौड़ते आते है। मंच पर आने के बाद शिकार को लेकर नाचने लगते हैं। बेहोशी की सीमा तक नाच बढ़ता जाता है। शिकार को कंधे पर उठा ले जाते है। मंच रिक्त। कुछ ही क्षणो मे सूत्रधार या आगमन-निवेदक का रूप]

निवेदक : राम राम, जयभीम, सलाम, नमस्ते। आप क्या समझे, यह जंगली नाच था ? नही माई-बाप, यह आपका हमारा खेल है। इन्सानो का जुगजुग से चला आ रहा इन्सानों का खेल [जाता है]

[एरण गावड़ एरणगांवड़ का उच्चारण करते हुए कोरस का सामूहिक स्वर। निवेदक दर्शकों में जैसे किसी को ढूंढता है। फिर जैसे परिचित को देखकर....]

माई-बाप आप नीचे क्यों बैठे है ? आइए, मंच पर आइए। अखिल भारतीय जनता की ओर से मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप यहाँ पधारिए।
[दर्शकों मे से एक आवाज—मैं ?]
हाँ, हाँ ! आप ही माई-बाप, आइए, आपके बिना खेल कैसे शुरू होगा ? आइए…!
[दर्शकों मे से एक मंच की ओर बढ़ता है। चाल-ढाल से मगरूर]

सूत्रधार : आइए माई बाप। [एक मंच पर उपस्थित] आपका परिचय ?

एक : हम …मुखिया। [जैसे आया था, वैसे ही लौटता है]

कोरस : ए मुखिया—ए मुखिया।
[दूसरा एक आता है]

निवेदक २ : आप ?

दूसरा एक : मैं ? गाँव का पटेल। [जाता है]

कोरस : यह गाँव के पटेल….यह गाँव के पटेल….।
[कोरस चल रहा है, बीच मे दो बूढे आते है]

निवेदक : ठहरो, ठहरो, ठहरो ! शहंशाह आलमपनाह तशरीफ ला रहे हैं। [दोनों चकराते है] आइए-आइए, आपका नाम ?

दोनों : जोहार, माई-बाप जोहार….।
हम गाँव के अछूत महार।

निवेदक : तो तुम गाँव के अछूत….?

दोनों : जी माई-बाप।

निवेदक : कौनसे गाँव के ?

महार : गाँव सरहद नहीं है माई-बाप ।

निवेदक : गाँव सरहद नहीं ?

दोनों : नहीं—माई-बाप ।

निवेदक : गाँव नहीं—सरहद नहीं, कोई बात नहीं, हम तुम्हें गाँव देंगे । सरहद देंगे । मकान देंगे ।

दोनों : [चुप]

निवेदक : और कुछ चाहिए तुम्हें ।

दोनों : [चुप]

निवेदक : रोटी देंगे । मिट्टी देंगे । गाँव देंगे । पानी देंगे । धरती देंगे । आकाश देंगे । अब तो कुछ बोलो, हाँ-हाँ, बोलो-बोलो ।

दोनों : [झुककर जोहार करते हैं]

निवेदक : जमीन देंगे । सरहद देंगे । गाँव देंगे ।

दोनों : दो माई-बाप ।

निवेदक : पानी देंगे ।

दोनों : दो माई-बाप ।

निवेदक : दिस इज टु सर्टिफाई दैट मी ऐंण्ड मी बिलांग्स टु शेड्यूल कास्ट सबकास्ट महार हियर बाय गिव्हन ॲथॉरिटी टु देम, टु हॅव देयर ओन विलेज । ठीक है ?

दोनों : जी माई-बाप ।

निवेदक : गाँव का नाम ?

दोनों : जी ?

निवेदक : एरणगाँव....।

दोनों । जी ।

निवेदक : ठहरो, ठहरो ।
कौन हो तुम ?

दोनों : जोहार माई-बाप जोहार
हम अछूत महार ।

कोरस : जोहार माई-बाप जोहार
एरणगांव के अछूत महार ।

निवेदक : युग-युग से....

दोनों : अछूत महार ।

निवेदक : शताब्दियों से गुलाम । तुम्हारे स्पर्श से सारी धरती अपवित्र होती है । तुम्हारे साये से हम अमंगल होते है । तुम पूर्व जनम के पापों के हो चंडाल ।
तुम्हारा शब्द

कोरस : छुआछात-छुआछात-छुआछात ।

निवेदक : तुम्हारा स्पर्श—?

कोरस : कलंकित-कलंकित-कलंकित !

निवेदक : तुम्हारा साया ?

कोरस : महापाप-महापाप-महापाप !

निवेदक : तुम्हारे कारण—?

कोरस : धर्म भ्रष्ट, धर्म भ्रष्ट, धर्म भ्रष्ट, ।

निवेदक : तुम्हारे कारण ?

कोरस : हम कलंकित-हम कलंकित—।

महार : हमारा शब्द—?

कोरस : छूआछूत-छूआछूत—।

महार २ : हमारा साथ—?

कोरस : महापाप, महापाप ।
हम गाँव के अछूत महार
हमारा स्पर्श कलंकित
हम एरणगाँव के अछूत महार
हमारा शब्द छूआछूत ।

निवेदक : तो तुम एरणगाँव को जाओ ।

दोनों : जी, माई-बाप ।

निवेदक : एरणगाँव में रहो ।

दोनों : जो हुकुम माई-बाप—।

निवेदक १ : ऐसे ही एक नगर की कहानी सुनेगा क्या भूल जाएगा ।

दोनों : जी नहीं माई-बाप ।

निवेदक २ : लिया हुआ "बरत" फेंक देगा ।

दोनों : जी नहीं, माई-बाप ।

निवेदक १ : तो जाओ, सुखी रहो, राज करो, यही ईश्वर की इच्छा ।
[दोनों जाते हैं]

निवेदक १ : महार गए ।

कोरस : महार गए ।

निवेदक : महार सुखी हुए ?

कोरस : नहीं महाराज—।

निवेदक २ : अछूत वेईमान हुए ?

कोरस : नहीं महाराज।

निवेदक २ : महार मस्ती में आये ?

कोरस : नहीं महाराज—।

निवेदक : फिर—?

कोरस : बदले, लड़े, मंदिर में प्रवेश कर गए।

निवेदक : महारों ने नकार दिया।

निवेदक : जानवर मर गया।

कोरस : महारों ने नहीं ढोया।

निवेदक : जोहार नही किया। चवदार तालाब के पानी में तमाम दलितो ने गुलामी को आग लगा दी। पानी तडपा, पानी फटा, पानी रोया, पानी ने आग को जन्म दिया। पानी बदल गया। महार पढ़ने लगे।

कोरस : बदले, लड़े, पढने लगे। बदलने लगे।

निवेदक : ठहरो, ठहरो।

निवेदक १ : क्या हुआ ?

निवेदक २ : कौन आ रहा है ?

निवेदक १ : सरकार !

निदवेक २ : नहीं महाराज

निवेदक १ : फिर ?

कोरस : पढ़ने लगे, लिखने लगे।
पढने लगे, बोलने लगे।

निवेदक २ : बदले। महार आए। [एक युवक का प्रवेश]
नमस्ते।

युवक : नमस्ते।

कोरस : जयहिन्द।

युवक : जयहिन्द।

निवेदक १ : जयभीम।

युवक : जयभीम।

कोरस : राम राम।

युवक : [चुप्पी]

कोरस : हमने कहा नमस्ते तुमने कहा नमस्ते।
हमने कहा जयहिन्द तुमने कहा जयहिन्द।
हमने कहा जयभीम तुमने कहा जयभीम।
हमने कहा, राम राम, तुम चुप।

निवेदक : हमने फिर से कहा राम राम।

कोरस : तो भी तुम चुप।

निवेदक १ : हम क्या समझें ?

युवक : हम राम को मानते नहीं। शंबुक का शिरच्छेद करने वाले गर्भवती सीता को घर से बाहर निकालने वाले राम को हम नहीं मानते।

निवेदक २ : बहुत ही तीखे विचार लगते हैं।

निवेदक १ : भयंकर—

निवेदक २ : ये कौन ?

निवेदक १ : ये दलितों के नेता।

निवेदक २ : दलितों के नेता ?

निवेदक १ : बड़े नहीं, छोटे नेता।

निवेदक २ : गांव के नेता।

कोरस : छोटे नेता, गांव के नेता, नये नेता।
शिक्षित नेता, गांव बदलना चाहने वाले नेता।

निवेदक १ : आपका गांव ?

युवक : जहाँ, जहाँ दलित वहाँ मेरा गांव।

निवेदक २ : अर्थात् जहाँ अछूत—।

युवक : मातंग, चमार, आदिवासी

निवेदक २ : वह तुम्हारा गांव।

कोरस : जोहार, माई-बाप जोहार।
हम गांव के सरदार।

निवेदक २ : ये गांव के—।
१ : सरदार याने लड़ने वाले।

निवेदक २ : इनका गांव ?
वही। अपना एरणगांव।

निवेदक १ : एरणगांव—। एरणगांव के पटेल, एरणगांव के मुखिया
महार एरणगांव के और ये भी।

निवेदक २ : यह एरणगांव के नेता। रामदास नन्नवरे।

कोरस : एरणगांव-एरणगांव-एरणगांव
वहाँ के पटेल, वहाँ के पटेल।

निवेदक १ : उसने गाँव की परम्परा तोड़ दी—।
परम्परा तोड़ दी।
परम्परा तोड़ दी।

निवेदक २ : परम्परा तोड़ दी। वह अंगार बन टूट पड़ा, हजारों वर्षों की दासता के विरोध में। वह....उतरा और भाषण देने लगा।

[निवेदक एक ओर बैठ जाता है। कोरस से दो दो लोग सभा सुनने के लिए बैठ जाते हैं]

युवक : तो हजार वर्षों की दासता, गुलामी तोड़नी है हमें। बाबा साहेब के संदेश से दुत्कारना है अछूतापन। फेंक देना है यह महारकी का पेशा। आज से महारकी बंद, जोहार बंद, गाँव में रोटी नहीं मांगनी है। उस बासी रोटी के टुकड़े हमारे खून में गुलामी, लाचारी, बेबसी पनपाते हैं। देखो, देखो तुम्हारे शरीर की ओर। पीठ-पेट एक हो गया है। तुम मेहनत करते हो खेत पर, खलिहान पर, फिर भी खाने के लिए अनाज नहीं। जीते हो बासी टुकड़ों पर कुत्तों जैसा। हमें कुत्ता नहीं बनना है। किसी के आगे गर्दन नहीं झुकानी है। ढोने दो जानवर गाँव को, सफाई करने दो उन्हें पशुओं के मलमूत्र की। तुम्हें नहीं जीना है उस तरह। अधिकार के लिए झगड़ना है। समझते हो, अधिकार के लिए झगड़ना है। समझते हो, अधिकार क्या होता है]

सभा से आवाज : पर खाएँगे क्या ?

युवक : गाँव से नहीं डरना है। अरे, कुत्ते की दुम पर पैर रख दो तो वह भी काटता है। तुम तो आदमी हो। आदमी की तरह रहना सीखो।

आवाज : पटेल मुखिया क्या कहेंगे ?

युवक : ज्यादा से ज्यादा क्या कर लेंगे ? काम से निकाल देंगे। दुकान बंद कर देंगे। पिछले दो दिनों में क्या किया, यही ना ?

सभी : हाँ-हाँ—।

युवक : और फिर भी तुम्हें उनकी चिन्ता है। नमक नहीं, मिर्च नहीं, गुड़ नहीं दिया उन्होंने। दो दिन भूखा रखा तो भी तुम उन्हीं को सोचते हो।

आवाज : उनके हाथ में सत्ता है, गाँव उनके इशारे पर चलता है।

युवक : पर आज से हम उनके इशारों पर नहीं चलेंगे। ग्रामपंचायत के इलेक्शन में उन्हें वोट नहीं देंगे।

आवाज : यह बात बिलकुल ठीक है।

युवक : तो फिर यह तय हुआ।

सभी : हाँ तय हो गया—हाँ तय हो गया।
[सभा समाप्त हो जाती है।]

निवेदक १ : रामदास ने कहा, दलितों ने सुना। रामदास ने तय किया, दलितों ने तय किया। रामदास नहीं बोला, दलित नहीं बोले। रामदास ही बोले, दलित ही बोले। रामदास एरणगाँव का नेता हो गया।

निवेदक २ : दलितों की पंचायत बैठने लगी। रामदास पंच बना। दलितों के संगठन की मनशक्ति रामदास के शब्दों में आयी।

निवेदक १ : रामदास बोलने लगा।

कोरस : दलित सुनने लगे।

निवेदक २ : रामदास चलने लगा।

कोरस : दलित पैर उठाने लगे।

निवेदक १ : रामदास सुनने लगा।

कोरस : महार बोलने लगे।

निवेदक २ : रामदास ने कदम उठाया।

कोरस : महार चलने लगे।

निवेदक १ : गांव में कानाफूसी शुरू हो गयी। गांव की दीवारें हँसने लगीं। गांव का अंधा अतीत डरने लगा, कांपने लगा। अनहोनी होने लगी।

कोरस : डरने लगा गांव
डरने लगे झिझकने लगे।
अनहोनी होने लगी
गांव चिंता में डूब गया।

निवेदक २ : गांव के सामने सवाल उठा मरे हुए पशुओं को कौन ढोएगा? मौत मय्यत की खबर कौन पहुँचाएगा? खलिहान से धान घर कौन लाएगा?

निवेदक १ : लावारिस लाश कौन उठाएगा? जलतन कौन चीरेगा? खेत में मेहनत कौन करेगा?

कोरस : लाश कौन उठाएगा?
मरे हुए पशु को कौन ढोएगा?
जलतन कौन चीरेगा?
खेत में काम कौन करेगा?
गांव चिन्ता में डूब गया।

निवेदक १ : गांव का रखवाला कौन? "जागल्या" कौन? बेगारी कौन? गांव विचारों में डूबा।

कोरस : गाँव विचारों में डूबा। गाँव चिन्ता में डूबा। गाँव बिगड़ गया। गाँव उबलने लगा। आग बरसाने लगा। अनहोनी होने लगी।

निवेदक २ : गाँव के कुलकर्णी की गाय मर गई…
मर गई माने कोठे में मर गई।

व्यक्ति १ : गोमाता चल बसी।

व्यक्ति २ : गोमाता इहलोक से चल बसी।

निवेदक १ : कुलकर्णी दु:खी हुए।

कोरस : कुलकर्णी की गाय मर गई। गाँव की गोमाता मर गई। कुलकर्णी दु:खी हुए। गाँव दु:खी हुआ। गाँव उबलने लगा, आग बरसाने लगा। गाँव विचार में डूब गया।

निवेदक : गाँव के सामने सवाल खड़ा हुआ।

कोरस : गोमाता चल बसी। गोमाता ने प्राण त्याग दिया। गोमाता गयी।

निवेदक १ : गोमाता का अन्तिम संस्कार कैसे होगा?

कोरस : गाय मर गयी। गोमाता मर गयी।
गाँव दु:खी हुआ, गाँव चिन्ता में डूब गया।

निवेदक २ : गोमाता कौन ढोएगा।
कौन? याने महार?

निवेदक १ : महारों ने पशुओं को ढोने का काम छोड़ दिया।

कोरस : महार बदल गए। महार पढ़ने लगे। बुद्ध बन गए।

व्यक्ति १ : एकम गाँव के महारों ने गंदे काम छोड़ दिये।
गाँव के सामने सवाल उठा।

व्यक्ति २ : [वाघ्या मुरली] खबर प हुचायी जी।
[मेरे वाघ्या रे—देवा देवा तू रे जी]
तब कोतवाल आया। गाँव के बाहर आया। गाँव की महार वस्ती मे उसने आवाज दी।
[कोरस में से एक व्यक्ति कोतवाल बनकर]

कोतवाल : अरे राम्या
[जवाब नही]
अरे ओ....।
तुक्या, तुक्या....अरे ओ तुक्या....
[कोरस मे से एक व्यक्ति तुका बनकर]

तुक्या : क्यो चिल्लाता है रे ?

कोतवाल : गाँव में गाय मर गई ?

तुक्या : अच्छा फिर—?

कोतवाल : पटेल ने पूछने के लिए कहा है कि बस्ती के लोग उसे ढोयेंगे या नही ?

तुक्या : कह दिया ना एक बार कि यह काम हमने छोड दिया है।

कोतवाल : पर पचो से क्या कहूँ ?

तुक्या : कह दे, हमने वैसे काम छोड़ दिये है।

कोतवाल : तुक्या, क्यो बेकार के खटते हो ?

तुक्या : हम ये करने वाले नही यानी हार्गिज नही।

कोतवाल : तीन दिन हो गए बदबू फैली रे अब।

तुक्या : ज्यादा बातें मत बना। गाँव के हाथ क्या बाँध रखे हैं हमने ?
[कोरस मे मिल जाता है]

कोतवाल : मुझे क्या ? मैं चला।
[हाथ नचाते हुए कोरस में मिल जाता है]

कोरस : महार पढ़ने लगे। महार बदलने लगे। महार बोलने लगे।
महार नाचने लगे। एरणगाँव के महार बोलने लगे।

निवेदक १ : महारों ने मर्यादा छोड़ दी। महारों ने गाँव की परम्परा तोड़ दी। पटेल की सत्ता को नकारा।
[कोरस में से एक "रायरंद" बन नाचता हुआ आता है।]

व्यक्ति १ : तु'बड़ी भर देना, अब बाजीराव नाना
बाजीराव नाना अब बाजीराव नाना
ये गाँव के पटेल की गद्दी मुखिया की गद्दी
मुखिया के पुरखों की गद्दी—तु बड़ी भर देना।
[नाचते हुए कोरस की ओर बढ़ता है]

कोरस : कोई नहीं नाना—कोई नहीं नाना।
तु'बड़ी भर देना, कोई नहीं नाना।

निवेदक : महारों ने गाँव की सत्ता को नकारा। एरणगाँव का रामदास बोलने लगा।

कोरस : महार सुनने लगे।

निवेदक १ : महार रामदास को नेता मानने लगे। उसे जादूगर समझने लगे।

निवेदक : गाय सड़ गयी।

निवेदक २ : गाय पड़ी रही। तीन दिन गोमाता कोठे में सोती रही।

कोरस : गाँव चिढ़ गया। गाँव बिगड़ गया। गाँव काँप गया। गाँव बिगड़ गया।

निवेदक १ : गाँव कहने लगा, रामदास नन्नवरे ने गाँव को बिगाड़ दिया। तंग आकर गाँव बेबस हुआ। क्रोधित हुआ। रामदास के पिता का गाँव ने गाली प्रदान कर उद्धार किया। [गोधूली] रामदास उसका बाप—दोनों के नाम से किया गया उद्धार जी जी जी जी....

निवेदक २ : गाँव ने गाय ढोयी।
दैया रे-दैय्या—अनहोनी भयी।
[कोरस में से एक नाचते हुए आगे आता है]

निवेदक १ : क्या हुआ ?

एक : कैसे मैं कहूँ ?

कोरस : अनहोनी भयी।

एक : मैं क्या जानूँ ?

कोरस : अनहोनी भयी।

एक : किसे मैं कहूँ ?

कोरस : अनहोनी भयी।

एक : दैय्या रे दैय्या—अनहोनी भयी।

कोरस : अनहोनी भयी।

निवेदक १ : गाँव के पटेल ने गाय की दुम पकड़ी।

निवेदक २ : मुखिया ने पैर।

कोरस : क्या ?

निवेदक १ : पटेल ने दुम पकड़ी—मुखिया ने पैर।

कोरस : अनहोनी भयी, भैय्या अनहोनी भयी।

निवेदक २ : प्रघटित हुम्रा । कुलकर्णी की गाय को गाँव ने ढोया ।

निवेदक १ : गाँव उबल पड़ा। गाँव चिढ उठा। गाँव बिगड़ गया। रामदास ने गाँव को भड़का दिया ।

निवेदक २ : गाँव के सामने सवाल उठा। गाँव विचार करने लगा। रामदास ना होता तो....?

कोरस : महार नही बदलते....।

निवेदक १ : गाँव विचार करने लगा, रामदास ना होता तो....?

कोरस : महार आँख उठाकर बात न करते ।

निवेदक २ : रामदास ना होता तो....?

कोरस : इतने बुरे दिन न आते...।
[गाँव चिढ़ने लगा। रामदास पर आग बबूला होने लगा।]

निवेदक १ : और परम्परा के रक्षक गाँव वाले....

निवेदक २ : संस्कृति की रक्षा के लिए सन्नद्ध हुए। रग-रग में खून खौलने लगा ।

निवेदक १ : दुर्ग पर हमला बोलने के लिए शूरवीर आगे बढ़े ।

कोरस : गाँव चिन्ता में डूब गया। गाँव फिक्र में डूब गया। गाँव कानाफूसी करने लगा ।

निवेदक २ : इकट्ठा होकर गाँव विचार करने लगा ।

निवेदक १ : रामदास को हत्या किये बिना गाँव के इतिहास को अर्थ नहीं था। उन्होने भगवान् से प्रार्थना की, हे भगवान् मजिल पार करने की हिम्मत दे। अपने-आपको हम तेरे ... निछावर कर देंगे। भण्डारा उछालेंगे और उससे नहाएंगे ।

कोरस : येलकोट येलकोट—जय मल्हार।
येलकोट येलकोट—जय मल्हार।
जेजुरीके खंडेराया-जागरण को आइए।
[कोरस गाँव की पंचायत बन जाती है। मुखिया पटेल बैठे हुए]
गाँव की पंचायत बुलाई गयी।
गाँव की पंचायत बुलाई गयी।

मुखिया : लगता है महार मस्ती मे आ गए हैं।

पटेल : औकात ही भूल गए।

व्यक्ति १ : गाँव की बात नही मानते, यह तो खूब रहा।

मुखिया : अजी, उनका बाप मानेगा।

व्यक्ति २ : और अगर न माने तो....?

पटेल : गाँव मे कैसे रह सकेंगे ?

व्यक्ति ३ : अब क्या करना होगा ?

पटेल : राणा से कह दो, कल महारवाड़ा नही दिखेगा।

मुखिया : पटेल, जरा धीमे। ग्राम पंचायत का इलेक्शन है।

पटेल : ठीक है। हो जाने दो। फिर देखेंगे कैसे रहते हैं।

मुखिया : पटेल, फिर देखेंगे ? वह फिर से बोलना शुरू करेगा।

पटेल : मरने दो हरामजादों को। पटेल की बात नही मानते, कोई मजाक है ? फिर हम गाँव मे रहें ही किसलिए ?

मुखिया : इलेक्शन।

पटेल : यह इलेक्शन के लिए ही तो चुप रहना पड़ता है मुखिया, वरना उनके बाप-दादाओं ने कभी देखा था इलेक्शन।

मुखिया : और अब सुना है अछूत का वह छोरा मेरे खिलाफ चुनाव में खड़ा है। कोई कह दो उनसे, अपनी हैसियत का खयाल करो।

व्यक्ति ४ : अतः अब क्या करना होगा ?

मुखिया : इलेक्शन तक ठहरो, फिर देखेंगे।

[पटेल मुखिया उठकर बातें करते चलने लगते हैं। गाँव वाले कोरस की अवस्था में आ जाते हैं।]

निवेदक १ : सभा समाप्त हुई। अर्थात् इलेक्शन तक स्थगित की गई।

निवेदक २ : तय हुआ।

कोरस : तय हुआ। तय किया। तय हुआ।

निवेदक १ : इलेक्शन तक चुप रहना है और फिर....।

कोरस : लोकतंत्र-लोकतंत्र-लोकतंत्र ...।

निवेदक १ : इलेक्शन में मुखिया के खिलाफ रामदास खड़ा है।

कोरस : लोकतंत्र-लोकतंत्र-लोकतंत्र....।

निवेदक १ : मुखिया के विरोध में एक महार का चुनाव लड़ना गाँव को जँचा नहीं, भाया नहीं।

निवेदक २ : आज तक गाँव में कभी ऐसा नहीं हुआ था।

निवेदक १ : बूढ़े विचारों में डूब गए। सदियों से जिन्होंने जोहार कहकर गर्दन झुकायी, वे ही महार गाँव से टकराएँगे।

कोरस : जनतंत्र-लोकतंत्र-गणतंत्र....।
एरणगाँव-एरणगाँव-एरणगाँव।

निवेदक २ : एरणगाँव घबराया।

निवेदक १ : अहं को चोट पहुँची। प्रतिशोध में गाँव हलचल करने लगा। गाँव गालियाँ देने लगा। ऐसा कैसा यह लोकतंत्र कि महार हमें ज्ञान सिखाएँगे।

निवेदक २ : जोश में आकर गांव ने जनतंत्र को गाली दी।

कोरस : लोकतंत्र-लोकतंत्र-लोकतत्र....।

निवेदक १ : गांव चिढ़ उठा। इलेक्शन के पहले महारों को हाथ कैसे लगाएं, यह गांव के सामने सवाल था।

कोरस : गांव को नींद नहीं।
गांव का हाजमा ठीक नहीं।
गांव को चैन नहीं।
एरणगांव-एरणगांव-एरणगांव....।
लोकतंत्र-लोकतंत्र-लोकतंत्र....।

निवेदक १ : तभी इलेक्शन आया। मतदान शुरू हुआ। [चुनाव दृश्य—वोट दिए जा रहे हैं। मतदाता आ-जा रहे हैं। मुखिया पटेल और एक दो व्यक्ति साथ मे प्रवेश करते हैं]

मुखिया : क्यो महाद्या काम कैसा चल रहा है ?

महाद्या : सब बराबर करता हूं मालिक।

मुखिया : महार आये थे क्या ?

महाद्या : सब आकर गए।

पटेल : कौन आये थे ?

महाद्या : वह सुपड्या महार का लौंडा।

पटेल : क्या कह रहा था ?

महाद्या : कह रहा था, हमारा रामदास चुनकर नही आएगा फिर भी हमने उसे खड़ा किया है। हम वोट उसी को देंगे।

पटेल : अच्छा ! और क्या ?

महाशय : लोकतंत्र या ऐसा ही कुछ कह रहा था।

मुखिया : दिया देंगे कहना लोकतंत्र....।
[जाते हैं। कोरस पूर्वस्थिति में]

कोरस : लोकतंत्र-लोकतंत्र-लोकतंत्र।
एरणगाँव-एरणगाँव-एरणगाँव
एरणगाँव का लोकतंत्र—एरणगाँव का लोकतंत्र।

निवेदक १ : कहानी सुनाता हूँ लोकतंत्र की।
लोकतंत्र की—लोकराज्य की।
जनसत्ता की—मानव मूल्यों की।
यह कहानी नहीं पटेल की।
नहीं है, यह एक मुखिया की।
केवल है रामदास की....।
सुनो, सुनाता हूँ कहानी...।
जो गाँव न रहा उस गाँव की। जी जी जी।

निवेदक २ : हाँ तो एरणगाँव में इलेक्शन हुआ।

व्यक्ति १ : इलेक्शन हुआ और चुनकर कौन आया।

निवेदक १ : वे ही सब।

व्यक्ति : वे ही माने ?

निवेदक २ : गाँव के पटेल, गाँव के मुखिया।

व्यक्ति १ : फिर रामदास ने चुनाव क्यों लड़ा ?

कोरस : पढ़ने लगे—लिखने लगे—बोलने लगे।
बदलने लगे—लोकतंत्र पनपाने लगे।

निवेदक १ : बदलने लगे, लड़ने लगे, पराजित होने लगे।
पराजय उनके लिए कोई नई बात नहीं थी।

निवेदक २ : स्वाभिमान की रक्षा के लिए वे लडने लगे। **और** वही बात गांव को अच्छी नही लगी।

निवेदक १ : गांव धधकने लगा।

निवेदक २ : बराबर। [दो चार लोगो की भजन मंडली बन जाती है] गांव अवसर की प्रतीक्षा करने लगता है।

निवेदक १ : या जा रो विठाबाई।
मेरी पढरी की माई।
[कोरस भी गा रहा है]

कोरस : तो हा माधव वखा। तो हा विट्ठल वखा।
ज्ञानदेव तुकाराम—निवृति महाराज....।

सूत्रधार : ईश्वर की आराधना करने लगे और दिन बीतने लगे। विचारों मे डूबा गांव अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। जीवन मृत्यु का प्रश्न गांव को छुड़ाना था। गांव उसी क्षण की प्रतीक्षा करने लगा।
[तन्मय हो सभी गाते है।]
रघुपति राघव राजाराम।
सबको सन्मति दे भगवान।
ईश्वर अल्ला तेरो नाम।
सबको सन्मति दे भगवान।

कोरस । एरणगांव-एरणगांव-एरणगांव।

निवेदक १ : और भगवान् ने गांव की प्रार्थना सुन ली। भगवान् दुखियों की सहायता के लिए आये। अपने आप अवसर आया।

कोरस : गांव का सवाल हल हुआ।
गांव हँसने लगा।
गांव चहकने लगा।

निर्देशक १ : गाँव में हैजे की बीमारी आयी। और....[एक व्यक्ति गिर जाता है। दो चार उसे राम बोलो कहते हुए उठाकर ले जाते हैं]

निर्देशक २ : एक गया।
[दूसरा गिरता है। उठा ले जाते हैं।]
दूसरा गया।

निर्देशक १ : देखते-देखते एक एक कर गाँव के लोग मरने लगे। [पटेल मुखिया विचार करने लगे।]

कोरस : विचार करने लगे जी—सोचने लगे।

निर्देशक १ : हैजे की बीमारी से लोग मरने लगे और मुखिया की जिम्मेदारी बढ़ गयी।

निर्देशक २ : उन्होंने देवी माँ के भगत को बुलाया।
[भगत को लाया जाता है। उसके सामने नींबू, नारियल और पूजा साहित्य रखा गया। भगत अब बैठे बैठे झूम रहा है।]

मुखिया : माँ गाँव में लोग मरने लगे हैं।

भगत : जानती हूँ।

भगत : गांव ने।

पटेल : नाम बता मां।

भगत : दिन जिधर से निकलता है, गांव की उस दिशा में किसी ने नीबू गाड़ दिये हैं गांव की हद पर....।

मुखिया : कौन है वह ?

भगत : इसीलिए लोग मरने लगे। गांव का एक भी आदमी नहीं बचेगा।

मुखिया : मां, इसका उपाय बता दे।

भगत : बताती हूं। उनका पहले बंदोबस्त करो।

व्यक्ति : करेंगे मां, करेंगे। निशानी बता।

भगत : गांव के पूरब में—गांव की सरहद के बाहर....पहले चार मकान छोड़कर....पांचवा....।

व्यक्ति : और एकाध निशानी बता मां।

भगत : यह मुखिया प्रथा के विरोध में है।
[चर्चा—हाथ के इशारों से एक दूसरे से वातचीत]

पटेल : अब उपाय क्या है ?

भगत : जातरा में बारा गाड़ियां खींचेंगे।

सभी : हां मां....खींचेंगे।

भगत : भोग चढाना होगा।

मुखिया : चढायेंगे। पर दो पैर वाला या चार....?

भगत : दो।

पटेल : मुर्गा।

भगत : मुर्गा नहीं ।
[भगत का कोप बढ़ा हुआ । भयानक आवाज—भाग-दौड़ । फिर स्तब्धता]

कोरस : सोरतम्र-सोकतम्र-सोवनंत्र ।
एरणगांव-एरणगांव-एरणगांव ।

निवेदक १ : माँ ने भक्ष्य की माँग की और गाँव महारवाड़े की ओर बढ़ने लगा । [दो चार लोग जाते हैं]

कोरस : रामदास—रामदास ।
एरणगांव—एरणगांव ।

निवेदक २ : रामदास को बुलाया गया । मंदिर के सामने लाया गया । दोपहर में तीन का समय । पंचायत बैठी है । रामदास का विरोध, फिर भी जबर्दस्ती पकड़कर उसे लाकर खड़ा किया गया । रामदास असमंजस में....उसे भगत के सामने बिठाया जाता है ।]

पटेल : महवे, जादू टोना, छूमंतर करता है ?

मुखिया : गाँव को बर्बाद करता है ?

भगत : बोल, नीबू कहाँ गाड़ दिए हैं ?

रामदास : मुझे मालूम नहीं । [उसे मारते हैं]

भगत : निबू निकालता है या नहीं ?

मुखिया : झूठ बोलता है । मारो कमर में एक लात । [लात मारते हैं, वह विरोध और प्रतिकार के लिए प्रयत्नशील]

पटेल : मरभुक्खा बनता है क्या ? बाबा पूछो ।

भगत : चुपचाप नींबू निकाल नहीं तो माँ का कोप होगा ।

युवक : कौनसी माँ ?

पटेल : माँ को नहीं पहचानता ?

युवक : अरे, हैजे की बीमारी से लोग मर रहे हैं।

भगत : झूठ बोलता है। तूने टोटके-टोने के नीबू का घेरा बनाया है।

युवक : झूठ है यह सब। कसम है मुझे, मैं वैसा नहीं। [मुँह चिढाते हुए हँसते है।]
छोड़ो—छोड़ दो मुझे ..]

मुखिया : छोडो कहता है। [फिर से एक बार भयानक हँसी की आवाज]

भगत : निकाल नीबू !

युवक : साले डॉक्टर को बुलाओ।

मुखिया : किसलिए ? मरने के लिए ?

व्यक्ति १ : इसने ही मारा है मेरे नाना को।

पटेल : पकडो भडवे को और उतारो उसके कपड़े।
[वह चिल्लाकर "ना" कहते हुए अपने को छुड़ाने के लिए छटपटाता है]

व्यक्ति : करो नंगा हरामी को।
[माँ भवानी की जय के नारे के साथ समूह-नर्तन। युवक भागने की चेष्टा में। उसे सब मिलकर नीचे गिराते हैं और एक एक कपडा उतारते है। वह नंगापन छिपाने की कोशिश में छटपटा रहा है।]

मुखिया : अब, भोग की पूजा करो।
[युवक चीखता है। दो चार लोग पूरी ताकत से उसे पकड़ कर रखे हुए है। उदोधूप लगाकर पूजा शुरू होती है।]

पटेल : ठहरो, ठहरो....। ऐसे नहीं....पहले उसका हाथ....

युवक : नहीं-नहीं।

सभी : [माँ भवानी की जय की घोषणा के साथ एक व्यक्ति हाथ उखाड़ता है। युवक गला फाड़कर चिल्लाता है। सभी मद बेहोश बनकर भवानी माँ की जयजयकार के नारे लगा रहे हैं।]

मुखिया : गाँव से खिलवाड़ करता है न ?
[नहीं नहीं की चीख। भवानी माँ का नारा और दूसरा हाथ भी उखाड़कर फेंक दिया गया। भयानक आवाजें छटपटाहट—पैर तने हुए।]

पटेल : भइया, बहुत मस्ती में आया था। पकड़ो उसकी टाँग।

मुखिया : रुको, नाना, महादा, दोनों पैर फैलाकर चीर दो। [होली की शंखध्वनि पूरे जोर पर—भयानक हँसी, आवाजें—युवक का जोर-जोर से चीखना। सभी उसको चारों ओर से घेरे हुए।]

पटेल : काटो। [युवक असहाय....। उसका कोमल अंग काटते हैं वह मृत लाश के समान पड़ा हुआ। उसकी पत्नी छोटे बच्चे को लेकर आती है, पर उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। वह सभी से याचना करती है।]

पत्नी : छोड़ो छोड़ो उनको माई-बाप। इतनी बार माफ करो।
[किसी का उसकी ओर ध्यान नहीं है। बेहोश बेखबर भीड़ उसे भी दो चार लातें जमा देती है। छोटा बच्चा डरा हुआ]

व्यक्ति १ : अरे यह तो....।

व्यक्ति २ : मरने दे....। चलो....।

[पत्नी युवक को देखती है। टूटकर गिर पड़ती है। बच्चा रोने लगता है। वह क्रोध से जैसे उबलती हुई]

पत्नी : मुए—मुर्दे—तुम्हारा सत्यनाश हो....।
सड़ोगे।
कीड़े पड़ेंगे।
[भीड के नर्तन का पुन: प्रारंभ। वह कुचली जाती है। युवक की लाश खीचकर ले जाते हैं। स्त्री प्रेत समान चित पडी हुई।]
[सन्नाटा]
[बच्चा उठकर माँ को हिलाकर देखता है। माँ कहकर उस पर गिर पडता है। रोते हुए खड़ा होता है। उसका रुआँसा चेहरा क्रोध में बदल जाता है। मुट्ठिया भींचकर हाथ उठाता है। सन्नाटा]
[पीछे से कोरस की दबी हुई आवाज....]
लोकतन्त्र-लोकतन्त्र-लोकतन्त्र
एरणगांव-एरणगांव-एरणगांव

—: पटाक्षेप :—

अनुवाद : प्रा. बी. के. चौदन्ते
वाडिया कॉलेज, पूना

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	घोटभर पाणी	: प्रेमानंद गज्वी
हिन्दी अनुवाद :	घूंट भर पानी	: प्रा. नामदेव उतकर

प्रकाशन : प्रागतिक विचार संसद,
त्रैमासिक, 'अस्मितादर्श'।
३७, लक्ष्मी कॉलोनी, छावणी, औरंगाबाद

मंचन : बंबई तथा महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर मंचन हुआ है।

सम्पर्क : प्रेमानंद गज्वी
बिल्डिंग नं १९६, कन्नमवार नगर
विक्रोली, बंबई ८३

घूँट भर पानी

☐ प्रेमानन्द गज्वी

[पर्दा उठते ही दो युवक आते दिखाई देते हैं। दुपहर की कड़ी धूप। थकान से शिथिल दोनों छाँव के लिए तड़प रहे हैं पर सब कुछ वीरान केवल कहीं कहीं सूखी हुई घास—उसी के बीच एक नागफनी अपना फन उठाये हुए।

[संकेत] नागफनी का उपयोग प्रसंग परिवर्तन में नेपथ्य के रूप में किया जा सकेगा]

पहला : धूल में और धूल में—तेरी तो....

दूसरा : हाँ, मगज भी भुन रहे हैं। लगता, एक भी पेड़ नहीं है, एक भी।

पहला : बैठ। [पास देखकर बैठता है] बैठ रे।

पेड़ की छाँव में सभी बैठते हैं, हम सूरज की ही छाँव में बैठेंगे। तू मेरी छाया में बैठ। ठंडक लगी है न बहुत ?

दूसरा : भाषण बंद करेगा ? प्यास लगी है।

पहला : [वाटर-बैग खोलकर उसकी अंजुली में उड़ेल देता है। पहला पानी पीने के लिये आकुल। अंजुली रिक्त ही रहती है।] पी. पी.

दूसरा : पी पी क्या ? उड़ेलता है या नहीं ?

पहला : कहाँ से उड़ेलूं ? [बैग औंधा करके थपथपाता है]

दूसरा : मजाक करता है ?

पहला : ना ना जीवन बीमा के लिए पर्याय नहीं होगा पर पानी के लिए है। कम से कम इस कठिन प्रसंग में तो है।

दूसरा : कौनसा ?

पहला . शिवाम्बु। शिवा सर्टिफाइड उत्तम टॉनिक।

दूसरा : मजाक करता है ?

पहला : अब ठहर कोई नदी या गाँव आने तक।

दूसरा : यह ग्रामीण जीवन अर्थात् साक्षात् मृत्यु है।

पहला : ग्रामीण जीवन पर आधारित तुम्हारे प्रबंध में मृत्यु का ही दर्शन करवा रहे हो न ? अरे, वह देख एक बूढ़ा आ रहा है। उसी से पूछेंगे कि आसपास कहीं....

दूसरा : ठहर, पूछता हूँ।
[पहला "उसी को पूछेंगे या आसपास कहीं...." ऐसा कहकर नागफनी के पीछे जाता है और तुरन्त बूढ़ा बनकर आता है।]

दूसरा : क्यों दादाजी, गाँव कितनी दूर है ?

पहला : मुझकू पूछत हो ?

दूसरा : अं ? हाँ-हाँ।

पहला : कौनसा गांव ?

दूसरा : बहुत दूर से आया बाबा।

पहला : हूं, शहर से ?

दूसरा : हां-हां।

पहला : सब आदमी सीधे। चार मेतर पारे गयी-दूर देह-अगर नदिया पार करी आगे सामन-सामन ही गांव।

दूसरा : पैंक्यू।

पहला : क्या कहत हो।

दूसरा : मतलब, आपका धन्यवाद।

[बूढ़ा जानकारी देकर नागफनी की ओट में आकर फिर पूर्ववत् युवक बन जाता है। [illegible]...]

पहला चल यार। जल्दी से पैर उठा, अब तक मेरी तृष्णा के लिए ही [illegible] सारा सागर [illegible] कर दूंगा।

वह तो नपुंसक लिंगी
पुरुषार्थ के बिना बांझ
यह संस्कृति ही वैसी
परपराओं के अकाल में
दरारें पड़ी धरती वैसी ही खुले मुंह नही मिलने देती,
मिट्टी ही मिट्टी को
घूंट भर पानी ।

[दोनों ही घूंट भर पानी कहते हुए नागफनी के पीछे जाते हैं । पहला गांव के पटेल के रूप में नदी पर ऊपरी हिस्से मे हाथ-पांव धो रहा है और दूसरा दलित के रूप मे पानी पीने के लिए अंजुली होठों तक ले जाता है, यह देखकर....]

पहला : अरे । हरामजादे दूर हो....। घाट भ्रष्ट कर दिया । चांडाल...

दूसरा : सिर्फ एक घूंट भर पानी मेरे बाप । गला सूखकर जान हलक तक आ गई है ।

पहला : खैर....। तेरा हलक ही बाहर निकाल कर रखता हूं ।

दूसरा : दया कीजिए पटेल । सुबह से एक बूंद तक नहीं मिली । बावड़ी पर कोई जल देगा इसलिए कब से ठहरा पर किसी ने भी दया नही की । मजबूर होकर यहां आया । कुत्ते, बिल्ली तक पानी पी गये....

पहला : क्यों रे, बहुत होशियारी दिखा रहा है । पीटो रे भड़वे को । निकाल दो इसका पानी बाहर....।

दूसरा : मालिक, तुम्हारे पांव पड़ता हूं ।

पहला : हाथ मत लगा मुझे । पीटो रे भड़वे को ।

दूसरा : नहीं नहीं मालिक गलती हुई । [मार खाता दूसरा चिल्लाता है] बाप रे....मर गया....मर गया....अरे कोई बचाओ....।

पहला : कौन बाप आता है, देखेंगे हम ।

[पिटाई करते हुए दोनों भी नागफनी की ओट में जाते हैं। आहिस्ता आहिस्ता कविता सुनाई देती है]

पुरुषार्थ के बिना बांझ
यह संस्कृति ही वैसी
परम्पराओं के अकाल में
दरारें पड़ी धरती जैसी ही खुले मुंह
मिट्टी ही मिट्टी को नहीं मिलने देती ।
घूंट भर पानी ।

दूसरा : एक गांव....।

पहला : जिन्दाबाद ।

दूसरा : एक पनघट....।

पहला : जिन्दाबाद । एक गांव एक पनघट....।

दूसरा : जिन्दाबाद । जिन्दाबाद ।

पहला : यह जिन्दाबाद, मुर्दाबाद हमारे गांव में किसलिए ?

दूसरा : शायद आपको मालूम नहीं अब तक ? क्यों जी, इस गांव में पुलिस पटेल कौन है ?

पहला : मैं ही हूँ ।

दूसरा : ऐसा है....। नमस्ते ।

पहला : नमस्कार....नमस्कार....।

दूसरा : क्यों पटेल, दलितों को पीने नहीं दोगे ?

पहला : क्या मतलब ?

दूसरा : खबर है कि घाट भ्रष्ट हुआ इसलिए मार-पीट हुई ।

पहला : नहीं साहब, मेरे तो कानों तक नहीं ग्रायी यह बात ।

दूसरा : समाचार पत्रों में ग्रायी है, चारों ग्रोर फैली है ग्रौर आपको कुछ भी पता नहीं ?

पहला : कौन पढ़ता है जी समाचार पत्र ? ग्रौर यह तो हमारे गांव में आता भी नहीं, फिर कैसे पता होगा ?

दूसरा : ग्रच्छा ! फिर उस चोखा काम्बले को किसने पीटा ?

पहला : कब ?

दूसरा : छः महीने हुए ।

पहला : फिर ग्रब क्या है उसका....?

दूसरा : ग्रापको क्या लगा ? किसी को कुछ भी पता नहीं लगेगा ?

पहला : सुनो जी, मुझे कुछ भी मालूम नहीं ।

दूसरा : ग्राप ही ने लोगों को भड़काया ग्रौर फिर भी मालूम नहीं ?

पहला : पुलिस में जाकर क्यों नहीं कहते ?

दूसरा : पुलिस में गया तो टाँगें तोड़ेंगे, तेरी घरवालों की इज्जत लूटेंगे, ऐसी धौंस उस काम्बले को दी थी ।

पहला : देखिए यह सब झूठे इल्जाम हैं । उन्होंने मेरे खिलाफ सब कुछ कहा पर यह नहीं कहा कि मुसीबतों में पटेल ही पांच पसेरी की मदद भी करता है ।

दूसरा : ग्रौर बदले में मार-पीट भी करता है ।

पहला : मैंने किसी को भी नहीं पीटा ग्रौर मुझे कुछ भी नहीं मालूम । ग्रजी, हम क्या उनके दुश्मन हैं ? गर्मी के दिनों में नदी सूख जाती है इसलिए बांध बनाया है । अब जानवर जहाँ पानी पीते हैं, वह पानी क्या ग्रादमी के पीने का है ? गांव में एक ही रंग के मोड़े ही सब लोग होते हैं । एकाध पागल....।

दूसरा : पर यहाँ पागलपन आपने....अजी, आप तो पुलिस पटेल हैं। सत्ताधारी दल के कार्यकर्ता....। आपने अपने दल को बदनाम किया है। विरोधी दल के लोग तो आपकी बदनामी का अभियान ही शुरू कर बैठे हैं। अपनी सरकार बदनाम होती है। भविष्य में ऐसा नहीं होना चाहिए। आज ही सब कुछ मिटा दो।

पहला : उन्होंने गाँव की बदनामी की। हमारा अपमान किया है। पहले उन्हें हमारी माफी मांगनी होगी।

दूसरा : पटेल, दिमाग तो ठिकाने पर है? आप अपने हैं इसलिए कहता हूँ। जैसे कहता हूँ वैसा करो, उन्हें भी जीने दो।

पहला : उन्हें जीने के लिए हमने ना थोड़े ही कहा है? हाँ, पर अपनी-अपनी मर्यादा—हैसियत देखकर ...।

दूसरा : उनकी बावड़ी भी आप....

पहला : है न वह अपनी जगह। । कौन आ रहा है [illegible]।

दूसरा : उनको उनकी ही बावड़ी पर रोक-थाम ?

पहला : अब वे लोग ही नहीं भरते तो क्या हम [illegible] करें ?

दूसरा : ठीक है। आज से ही सामूहिक [illegible] का आयोजन निपटा लेंगे....।

पहला : हाँ....पर फोटो के साथ रिपोर्ट [illegible]।

दूसरा : एक गाँव एक पनघट....।

पहला : जिन्दाबाद—जिन्दाबाद।

दूसरा : एक गाँव।

पहला : जिन्दाबाद। एक पनघट।

दूसरा : जिन्दाबाद ।

[दोनों परम्परागत राजा और प्रधानमंत्री के रूप में आते हैं]

पहला : प्रधानजी....।

दूसरा : जी हुजूर ।

पहला : पिछले सप्ताह की समाचारपत्रीय समीक्षा तैयार है ?

दूसरा : तैयार है हुजूर ।

पहला : पढ़ो....और कुछ खास हो तो हमें भी बताओ....।

दूसरा : जी हुजूर....रेडी ?

पहला : केवल बातों में समय बर्बाद न करो । हमारे कान और आँखें कब से आतुर हैं ।

दूसरा : जी हुजूर । सुनिए, फलां फलां यहां के बांध के भव्य प्रकल्प का माननीय मुख्यमंत्री जी के शुभ करकमलों द्वारा भव्य उद्घाटन । फोटो फोटो....।

पहला : क्यों चिल्ला रहे हो ?

दूसरा : आपका फोटो हुजूर । उद्घाटन समारोह का समाचारपत्रीय फोटो [समाचार दिखाता है] ।

पहला : इतनी सी बात के लिए इतना चिल्लाते हो ? हमारे हाथ में क्या कैंची है फीता काटने के लिए ।

दूसरा : आदत, आदत हुजूर । गुस्ताखी माफ हुजूर ।

पहला : ठीक है ।

दूसरा : बांध पूरा होते ही फलां फलां हजार एकड़ खेतों की सिंचाई हो सकेगी । फलां फलां हजार मेगावॉट बिजली का उत्पादन होगा और रात में दिन के समान उजाला होगा । फलां

फलां हजार देहातों में पानी पहुंचाने की प्रगति... कितने ही कदम....

पहला : प्रधानजी, यह फलां-फलां क्या बला है ?

दूसरा : बला ? ना-ना भारतीय पीनल कोड के समान भारतीय जनता के हित का यह भी।

पहला : मतलब ? प्रवक्ता का सभी अस्तित्व इसी शून्य में याने मौन फलां-फलां में समाया हुआ है।

पहला : और समाचार-पत्रों में बिल्कुल ऐसे ही समाचार पत्र की आजादी का दिनदहाड़े दुरुपयोग। इससे जनता क्या खाक समझेगी ?

दूसरा : जनता का हमें विचार नहीं करना चाहिए। समाचार पत्रों के अंकों को पढ़कर जनता ही खाक होगी। मतलब वे अंक उनके पल्ले ही नहीं पड़ेंगे। इसका परिणाम यह होगा कि वे भी भूलेंगे और हम भी आइ मीन, सरकार याने अन्त में फलां-फलां ही।

पहला : फलां-फलां प्रधानजी....

दूसरा : फलां फलां जिले के, फलां फलां तालुके, फलां फलां परगने के, फलां फलां गांव के हरिजनों को पाटघण्ट करने पर पुलिस पटेल ने मरते दम तक पीटा।

पहला : यह भ्रम में पड़ो।

दूसरा : परंपरा कैसे तोड़ूं हुजूर।

पहला : ठीक है। विस्तृत निवेदन करो।

दूसरा : जी हुजूर ! छः महीने पूर्व हम पटिया घटना का 'शांति' मानव दैनिक में प्रथम रहस्योद्घाटन किया। तब दुनिया की आंख

निषेध-पत्रकों की वर्षा हुई। मोर्चे भी निकले। अन्त में पानी भरने के कार्यक्रमों द्वारा समझौता—फोटो—सॉरी।

पहला : समझौता ? किसने समझौता करवाया ?

दूसरा : एक स्पेशल प्रतिनिधि भिजवाया था।

पहला : और नाम मात्र एक गाँव एक पनघट वालों का।

दूसरा : हमने ही तो गोद लिया है उन्हें।

पहला : ठीक है। तात्पर्य, अब हमारे राज्य में चारों ओर एकदम शांति शांति। अरे, बाहर यह गड़बड़ कैसी ?

दूसरा : मैं देखता हूँ सर। [विंग तक जाकर लौटता है]
मरकार, मुझे न्याय दीजिए। मेरे साथ न्याय हो।

पहला : कौन है तू ? और एकदम डाइरेक्ट हम तक। न्यायदान का प्रबंध है हमारे राज्य में।

दूसरा : दीन-दलितों का कोई आता नहीं सरकार ?

पहला : दीन-दलित ? हाँ दीन-दलित....। क्या शिकायत है तेरी ?

दूसरा : पानी कहाँ से आता है सरकार ?

पहला : अरे, तू पागल तो नहीं ? पानी नल से आता है। लाखों रुपये खर्च करके बांध बांधे हैं। मीलों तक पाइप लाइन डालकर घर-घर में पानी पहुँचाया है और इस पर पूछता है पानी कहाँ से आता है ?

दूसरा : मैं शहर के बारे में नहीं, गाँव की बात कर रहा हूँ।

पहला : कहता जा—[तू कहते रह, हम सुनते रहेंगे]

दूसरा : पानी आता है बादलों से। वह बहता है नदी नालों में फिर जाता है समंदर की ओर। फिर भाप-बादल—बादल से पानी और उस पानी पर है किसका अधिकार ?

पहला : तुझे बोलने के लिए कहा है तो बहुत बोलता है। तेरी शिकायत क्या है ? कह....।

दूसरा : हमें पीने का पानी नहीं। शहर के लोग आते हैं। फोटो निकालते हैं और गाँव वाले हमारे बर्तन फोड़कर फेंक देते हैं। हम कैसे जियें सरकार ?

पहला : अरे, तेरा दुख सो हमारा दुःख। मेरे ध्यान में आया। तू उस फलाँ फलाँ गाँव का। हमारा राज्य कानून का राज्य है। ऐरे-गैरे का नहीं। तू फिक्र मत कर। हमने नोट कर लिया है। यह देख तू एक लिखित निवेदन दे। यह बात हमारी समझ में आयी है।

दूसरा : यह लीजिए सरकार [निवेदन देता है]

पहला : [निवेदन निहारते] लिखित है न ? अब तू जा। बात हम तक पहुँच गयी है। [पहला विंग तक जाता है]
कौन है रे उधर....?

दूसरा : यस सर !

पहला : अस्पृश्यता कानून का उल्लंघन करनेवालों को क्या सजा है ?

दूसरा : संशोधित बताऊँ या....।

पहला : जबर्दस्त छाप बैठनी चाहिए। उस दिन दीनबंधु की व्यथा सुनकर हमारी आँखों में पानी आया था। आदमी आदमी से ऐसा बर्ताव करता है ? जानवर भी मिलकर एक जगह पानी पीते हैं।

दूसरा : सर, ऐसे बाँध के पानी जैसा नहीं बहना चाहिए। अगर ऐसा हुआ तो राजकर्त्ताओं का वह एक दुर्गुण माना जायेगा। और फिर कुत्ता भी नहीं पूछेगा। फिर हम क्या करें ?

दलितों के लिए कुआं खोदकर इन सवालों का हल करें।

पहला : क्या इससे अस्पृश्यता का प्रश्न हल होगा ?

दूसरा : हमें इसमें ज्यादा उलझना नहीं चाहिए। वह धार्मिक प्रश्न समझकर उसे छोड़ देना चाहिए।

पहला : दलितों को इससे पूर्व एक बावड़ी खोदकर दी गयी थी, ऐसा हमने सुना है।

दूसरा : हाँ। पर उसे गत वर्ष के अकाल में स्पृश्यों ने अपने कब्जे में कर लिया। सरकार को दलितों के प्रति हमदर्दी है, ऐसा दलितों को महसूस होना चाहिए और उस पर यही एक उपाय है।

पहला : ठीक है। हमने नोट कर लिया है। यह उस फलां-फलां गाँव के दीनबंधु का निवेदन....और हमारा भी। समाचार पत्रों को भेज दो और हाँ कुएं की खबर स्पष्ट आने दो।

दूसरा : सफल राजनीति का ऐसा ही जय होता है।

[निवेदन लेकर फाड़ देता है]

भारत मेरा देश है
सभी भारतीय मेरे बंधु हैं
बालभारती के पन्ने पन्ने में
और कश्मीर से कन्याकुमारी तक

पहला : जातीयता के कोढ़ से सड़े हुए भारत। सच कहूं, तेरी संस्कृति ही सड़ी गली है जड़ से। तेरा इतिहास मुझे देशद्रोही घोषित करने वाला हो तो बिना झिझक घोषित करे।

दूसरा : पर हिजड़ों की उत्पत्ति करने का यह एक स्थान है।
ए हिजड़ों, फेंक दो यह बोझ
युग-युग से तुम पर सदा हुआ।

और जियो स्वैर, गगन को घेरने वाले मुक्त पंछी की तरह।
सड़े हुए दिमाग से पैदा हुई बोझ।
वही मार्ग हम क्यों कर चलें।

पहला : इस मार्ग से हम ही क्यों चलें ?
हमारा जीवन एक जलराशि
हम गतिहीन क्यों ?
हमारा स्थान किसने किया निश्चित ?
यही नहीं—हमारी छाया भी अस्पृश्य... ।
समझाये कोई मुझे—
क्या सब में सर्वभूति एक ही आत्मा है ?

दूसरा : उसे नहीं रंग।
रूप नहीं है।
नहीं है स्वाद भी
निर्गुण निराकार
वह मुक्त है।
तो फिर हमारी आत्मा को किसने बांध रखा है।
वह बंधन में बँधे उलझ गयी है।
परवशता को जो आवाज न दे, वह आत्मा कैसी ?

पहला : दासता को सती चढ़ाने वाली आत्मा को ही समाप्त कर दो।
और मुक्त हो जाओ।
मुक्ति का मार्ग है बाहों की सामर्थ्य।
सामर्थ्य है संकल्प।
संकल्प की पताका फहराती सी हो।
स्वर मुक्ति के हरकारे स्वयं ही आ बनो।
दे दो प्राण पर मुक्त मानव की आजादी की खातिर
पैरों तले रौंद ना डालो तुम।

बोझ के नीचे पिलपिला मन मुक्त होगा ।
और मौत संकल्प की अनन्त तोपों को सलामी देगी ।

पहला : क्रांति की जयजयकार । क्रांति जिन्दाबाद ।

दूसरा : इस देश में क्रांति को मिला है एक घिनौना अर्थ जो इस धरती पर अन्यत्र कहीं भी नहीं होगा ।

पहला : दलित बालक को गोद में उठा लेने मात्र से यहां क्रांति होती है । घूंट भर पानी के लिए भले ही आदमी मर जाए, पर गधे को पानी पिलाने से यहां क्रांति होती है । वेदाध्यायी शबूक का शिरच्छेद किया जाता है और चतुष्पाद भैंसा क्रांतिकारी सिद्ध होता है ।

पहला : क्रांति के सारे बांझ अर्थ और संदर्भ देश को ही बर्बाद कर रहे हैं ।

दोनों : संपूर्ण क्रांति जिन्दाबाद ।

दूसरा : फलां-फलां जिले में....।

पहला : फलां-फलां तालुके की. ..।

दूसरा : फलां-फलां सर्कल की....।

पहला : फलां-फलां गांव की....।

पहला/दूसरा : हो हल्ला । हो हल्ला ।

पहला : कुएं पर पानी लेने आये हुए सत्याग्रही कार्यकर्ताओं पर सवर्णों द्वारा प्राणघातक हमला... ।

दूसरा : सत्याग्रह में महिलाएं भी बड़ी संख्या में थी ।

पहला : महिलाओं को बेइज्जती करने का प्रयत्न ।

दूसरा : हमने या दलितों ने निर्धारपूर्वक सामना किया ।

पहला : तथापि एक की मृत्यु । दो गम्भीर घायल ।

दूसरा : भाई साहब को भी मार पड़ी ।

पहला : पुलिस बल अत्यल्प ।

दूसरा : वातावरण में अभी भी तनाव ।

पहला : भाई साहब का जय जैकार हो ।

दूसरा : आप कौन ?

पहला : मैं क्रान्ति नामक समाचार पत्र के ग्रामीण विभाग का पत्रकार हूँ । आपकी भेंटवार्ता के लिए....।

दूसरा : मेरे पास खास कुछ भी नहीं है ।

पहला : यह आपकी विनम्रता है । बहुत वर्षों के बाद एक नया समर्थ नेतृत्व मिल रहा है । दलित समाज का नेतृत्व के अभाव में बहुत बड़ा नुकसान हुआ है । इस समाज का....। अब निश्चित पूर्ति होगी ।

दूसरा : वह कैसे ?

पहला : कौन कह सकता है, कल आपकी वजह से ही इस देश का चित्र बदल जायेगा ।

दूसरा : मैं प्रत्यक्ष कृति पर विश्वास करता हूँ । आज तक हमारी ही पुरुषार्थिता बड़ा कम उठायी गयी । मुझे चुनौती से — मशालों से प्यार है और न हो मैं वह करने लिए चाहता हूँ ।

पहला : सरकार, इस मामले में क्या करे, आपकी क्या मंशा है ?

दूसरा : यह समाज पूर्णतः सामाजिक है । इसी रूप में उनके लिए आंदोलन शक्ति जरूरी चाहिए । दलित एवं शोषितों को केवल निर्वाचन के समय वोट प्राप्त करने की, देखिये यही समस्या

चाहिए। न्याय मिल नही पाता इसलिए निराश, हताश बना दलित समय आने पर देश के साथ द्रोह करने में भी आनाकानी नहीं करेगा।

पहला : और....?

दूसरा : फिलहाल इतना ही....।

पहला : धन्यवाद।
आइए—आइए भाईसाहब, आपसे मिलने के लिए बड़ी बेताबी थी।

दूसरा : शर्मिंदा करते हैं आप।

पहला : आपकी ताकत हम जानते हैं। उसकी दाद देते हैं। [पैसे की थैली सामने धर देते हैं]

दूसरा : यह क्या है ?

पहला : आपके जीवन और भूख की सुरक्षितता—। दो साथ ।

दूसरा : मतलब, मैं मेरा आंदोलन वापस ले लू।

पहला : वैसा कुछ नही। पर आपका नेतृत्व और हमारी राजसत्ता दोनों ही बनी रहें, यही हमारी इच्छा है। आपके हर एक सवाल पर हम आपका साथ देंगे। समय-समय पर धाम सम्मान भी....[उसी समय एक मानचिन्ह प्रदान करता है। वह पैर के पास झुकता है, दूसरा खुशी से हंसता है]

दोनों : भाईसाहब की विजय हो।
मुख्यमंत्री जी की विजय हो।

पहला : अभी कितने दिन पियेंगे रे नाले का पानी ?

दूसरा : मेरी तो कुछ भी समझ में नही आता। हां ना करते-करते छः महीने हो गए पर भाई साहब इधर आने का नाम ही

नहीं लेते। कोई संदेशा है ? श्रौर अब तो गर्मी के दिन चढ़ आए हैं माथे पर। परस डेढ़ परस कुँए का काम हुआ है। काला पत्थर है, इसलिए काम बंद, कोई बात नहीं, पर काम कहाँ तक आया है, यह तो कम से कम देखना चाहिए। गाँव वालो के साथ बेकार का झगड़ा कर बैठा। जान की जान गंवाई, बेकार का खून-खराबा—अब गर्मी के दिन आते ही फिर से पकड़ो पैर और कहो, बाबा पानी दोगे-बाबा पानी दोगे।

बाबा पानी दोगे।

बाबा पानी दोगे।

[यह ध्वनि सुनाई पड़ती है और दोनो का प्रस्थान।]

आवाज : हजार बार प्रसूत, यह बाम धरती
परंपरा के अकाल में
दरारें पड़ी जमीन वैसे ही मुँह बाए।
मिट्टी को नही मिलने देती
घूंट भर पानी——

[घूंट भर पानी, घूंट भर पानी, यह ध्वनि सुनाई देते समय पटाक्षेप]

अनुवाद : प्रा. नामदेव उतकर
प्रतिभा निकेतन कॉलेज
नांदेड़

रचना	शीर्षक	लेखक/अनुवादक
मूल मराठी रचना :	सात समुद्रापलीकडे :	प्रभाकर दुपारे
हिन्दी अनुवाद :	सात समदर पार :	डॉ. माधव सोनटक्के

प्रकाशक : प्रभाकर प्रकाशन,
चन्द्रमणी नगर,
पो. अजनी, नागपुर, ४४०००३

मंचन : पैपस थिएटर, नागपुर

संपर्क : प्रभाकर दुपारे
द्वारा, प्रभाकर प्रकाशन
चन्द्रमणी नगर,
पो. अजनी, नागपुर–४४०००३

सात समंदर पार

☐ प्रभाकर दुपारे

[मिल मालिक की केबिन। वह सिगार पीते हुए बैठा है। इतने में मजदूर नेता का प्रवेश]

मालिक : आइए। आइए। नेताजी ! याद आयी आपको मेरी ?

नेता : मजबूरी थी इसलिए ! अन्यथा आप मिल मालिक की अपेक्षा और कुछ नही, ऐसा मैं मानता हूँ।

मालिक : काम की बात करो।

नेता : आपके कारखाने के मजदूरो की आजादी खो गई है।

मालिक : केस पुलिस मे दर्ज करो।

नेता : हमारी सुरक्षा के सभी कानून आपने अपनी जेब मे लपेटकर रख लिये हैं। इस देश की शासन-व्यवस्था आपने कमजोर की है।

मालिक : नेताजी शासक मैं नही हूँ।

नेता : शासक आप यदि नही भी हुए तो भी आपने ही शासन तैयार किया है। आपकी कृपा से ही इस देश मे कोई विधायक

होता है, संसद का सभासद् होता है, मंत्री होता है, मुख्यमंत्री होता है, प्रधानमंत्री होता है और राष्ट्रपति भी आपकी मेहरबानी से सम्भव है।

मालिक : जनरल-नॉलेज अच्छा है।

नेता : मेरी आजादी मुझे लौटा दो।

मालिक : चिल्लाओ नहीं। कितने दिन हुए मेरी कंपनी में काम करते हुए ?

नेता : वह महत्त्वपूर्ण....।

मालिक : महत्वपूर्ण क्या है और क्या नहीं, यह मैं तुमसे सुनना नहीं चाहता। एक साल हुआ तुम्हारी अपॉइंटमेंट हुए और एक साल के भीतर ही लाल रंग का नशा चढ़ गया और कारखाने में आन्दोलन जारी है न ?

नेता : हाँ।

मालिक : वजह ?

नेता : वही बातें दुहरानी होंगी मुझे सेठजी, आपने बीस मजदूरों को बेवजह काम से निकाल दिया....।

मालिक : तनख्वाह समय पर मिलती नहीं। और १५० रुपये के बजाए केवल १०० रुपये देता हूँ, छः छः साल टेंपररी काम करने वालों को महीने के अंत में गैप देकर परमानेंट करता नहीं, बोनस नहीं, भत्ता नहीं, सुविधाएँ नहीं, बॅकलॉग भरता नहीं....वगैरह-वगैरह माँगों के लिए। करेक्ट ?

नेता : हाँ।

मालिक : तुम यूनियन के जनरल सेक्रेटरी हो ना ?

नेता : हां।

मालिक : अनशन को कितने आदमी बैठे हैं ?

नेता : दस।

मालिक : संख्या गलत।

नेता : याने ?

मालिक : अपने कारखाने में कुल कितने मजदूर हैं ?

नेता : पांच सौ।

मालिक : क्या उतने सारे मजदूर अनशन को बैठे हैं।

नेता : नही ! केवल दस।

मालिक : मूर्ख हो तुम।

नेता : सेठजी, आप....।

मालिक : मैं दस साल से कारखाना चलाता हूं और तुम्हें केवल एक साल हुआ है यहां आये। मजदूरों की वेदनाएं तुमसे भी ज्यादा जानता हूं। अपने कारखाने के हर एक मजदूर को मैंने करीब से देखा है। मैं-मैं भी पहले मजदूर हो था। मैं स्वीकार करता हूं। उन पर अन्याय होता रहा है। पर फिर भी वे जीते थे, जिंदा थे। आज दो महीनों से कारखाने में हड़ताल है। इसलिए उन्हें तनख्वाह नही। कल्पना करोगे कैसे जीते होंगे ? क्या वे जिंदा होंगे ? [मजदूर बस्ती का दृश्य : एक मजदूर का आक्रोश, साहूकार उसे पीट रहा है।]

दोनू : मां कसम, सेठजी मैं झूठ नही बोलता।

सावजी : तुम झूठ बोलो या सही बोलो। मुझे उससे कोई वास्ता नहीं। मुझे मेरे पैसे चाहिए।

दीनू : पर आज दो महीने से मिल बंद है। और....।

सावजी : मिल बंद है, उसका मैं क्या करूं ? पैसों और मिल का क्या संबंध ?

दिनू : पर अब तक तनख्वाह नहीं ! घर में सभी...।

सावजी : भूखे हैं। सच है न ? [पीटता है] साले मेरे घर में भी सब भूखे हैं।

दीनू : हां पर, मैं क्या भागा जा रहा हूं ? हम दोनों एक ही फैक्ट्री में काम करते हैं। फैक्ट्री शुरू हुई कि....।

सावजी : तनख्वाह लेगा और मुझे देगा ?

दीनू : हां-हां !

[और वह दीनू को पीटने लगता है। इतने में दीनू की पत्नी लक्ष्मी चीखती है।]

लक्ष्मी : नहीं सावजी। सावजी, मैं तुम्हारे चरण छूती हूं। उनको मारो-पीटो नहीं। दो दिन से पेट में अन्न का एक भी कण नहीं है उनके।

सावजी : तुम जाओ यहां से। यह हमारा आपसी मामला है।

लक्ष्मी : तुम्हें—तुम्हें पैसा चाहिए न ?

सावजी : हां !

लक्ष्मी : फिर यह मंगलसूत्र लो।

दीनू : ल....लक्ष्मी।

सावजी : इन कालेमणियों का क्या करूं मैं ?

लक्ष्मी : ये सोने के मणी।

सावजी : [मंगलसूत्र उसकी ओर फेंकता है] नही चाहिए यह। मुझे, १५० रुपये चाहिए नकद।

दीनू : सावजी। मैं....।

[सावजी दीनू के पेट मे लात मारता है। दीनू चीखते हुए गिरता है। उसे गिरा हुआ देखकर, लक्ष्मी सभालने हेतु आगे बढ़ती है। सावजी उसे ढकेल देता है। वह गिरती है। उसके "वक्ष" पर सावजी की नजर जाती है और वह उसका हाथ पकड़ता है।]

दीनू : सावजी, लक्ष्मी का हाथ छोड़ो।

लक्ष्मी : छोड़ो मुझे। कमीने, कुत्ते, निर्लज्ज।

सावजी : दिन्या, आगे मत बढ़ो। पैसे नहीं चाहिए मुझे। तुम्हारी औरत आज मेरी मेहमान होगी।

दीनू : सा. ..माव ! लक्ष्मी....।

लक्ष्मी : छोड़ दे। सूअर....बचाओ। दिनेश....बचाओ....बचाओ व.... व....[कारखाने का दृश्य]

मजदूर : हड़ताल हड़ताल हड़ताल। आज भी कारखाने में हड़ताल।

एक स्त्री : नेताजी।

नेताजी : हू ?

एक स्त्री : आज भी हड़ताल ?

नेताजी : हाँ। जब तक हमारी माँगें स्वीकार नही होती तब तक हड़ताल।

दूसरी स्त्री : हमारी माँगें कब स्वीकार होंगी जी ?

नेताजी : कुछ कह नहीं सकते। अब तक मालिक से बातचीत

एक मजदूर : मालिक से बातचीत कब होगी ?

नेताजी : जब मालिक समय देगा तब। बुलाएगा तब।

दूसरा : पर मालिक कब समय देंगे ? कब बुलायेंगे ?

नेताजी : कुछ भी बता नही सकते।

तीसरा : याने हड़ताल कब खत्म होगी, कुछ कहा नही जा सकता ?

नेताजी : नही।

दूसरी स्त्री : ऐसी कैसी हड़ताल जो खत्म नही होती ?
[जैसे कुछ अजीब-सा घटित हुआ हो, एक दूसरे की ओर देखते है।]

एक मजदूर : अरे, वह देखो दीनानाथ।

दूसरा मजदूर : कहाँ है ? वह देखो। वह दीनानाथ और उसकी पत्नी।

सभी : आँ। कहाँ है ? कहाँ है ?
[सभी उन्हें देखने हेतु भीड करते हैं जैसे उस ओर कुछ घटित हुआ हो। झाँककर देखते है। उस ओर से एक आदमी रक्त से लथपथ कराहता, लड़खड़ाता हुआ आता है। सावजी के हाथ मे छुरा है। दोनों रगमंच पर आते है। सावजी दीनानाथ के पेट मे छुरा भोंक देता है और दीनानाथ को छोड़कर भाग जाता है। सभी मजदूर दीनानाथ के पास इकट्ठा हो जाते है। दीनानाथ छटपटाते हुए दम तोड़ देता है।]

नेताजी : दीनानाथ।
[दीनानाथ की पत्नी लक्ष्मी लाश से लिपट कर रोती है।]

लक्ष्मी : तुम-तुम सब मेरे पति का रक्त देख रहे हो क्या ? क्या,

रक्त देखा नहीं कभी ? वह खूनी भागा है। दौड़ो, पीछा करो। पकड़ो उसे। तुम छोड़ गये हो मुझे। अब मैं क्या करूं ? किस के भरोसे बाल-बच्चों को संभालूं ? [और रोती है।] तुम इसान हो कि नहीं ? खूनी को पकड़ते क्यों नहीं ? क्या हत्यारे को देखा नहीं तुमने ?

दूसरा मजदूर : हमे मालूम है, हत्या किसने की है।

लक्ष्मी : वह कोई भी हो, पर वह एक खूनी है। एक निरपराध आदमी को, मेरे पति की हत्या उसने की है। पकड़ो उसे सज़ा दो उसे।

नेताजी : नहीं, हमारे न्यायालय में उस हत्यारे के लिए सज़ा नहीं।

लक्ष्मी : क्यों ?

नेताजी : वह हमारी दुनिया का आदमी नहीं।

लक्ष्मी : यानी ?

नेताजी : मजदूर नहीं है वह। हम मजदूरों की दुनिया ही अलग है। लक्ष्मी, हमारा—अपना न्यायालय नहीं है। जो न्यायालय है, वहाँ हमें न्याय मिलता नहीं। क्योंकि उसके दरवाजे हमेशा के लिए बंद हैं हमारे वास्ते। लेकिन अन्याय के मंदिर के दरवाजे हमेशा खुले रहते हैं हमारे लिए।

दूसरा मजदूर : बहन, दीनानाथ का खून क्यों किया उसने ?

लक्ष्मी : हड़ताल के कारण हर रोज की तरह आज भी सुबह वे जाने के बाद तुरन्त ही लौटे। मैंने उन्हें देखा तब थके-मांदे से देखाई देते थे। आते ही दरवाजे मे खड़े मुन्ने को चूम लिया और उससे कहा....

दीनानाथ : बेटा आओ। पता नहीं कब तक तुम्हें बाप का साया नसीब होगा। तुम खुशकिस्मत हो बेटे। हमने तो बाप को देखा तक नहीं था। बाप जिन्दा नहीं रहा तो क्या हुआ? महत्वाकांक्षी बाप का बेटा तो जिन्दा है। [व्यथित हृदय से] पर-पर बेटा, मेरे जैसा निराशावादी मत बनना।

लक्ष्मी : बाद में कपड़े बदलकर पता नहीं कहाँ चले गए लेकिन जब घर लौटे तो मुझे देखते ही रोने लगे।

दीनानाथ : लक्ष्मी अब मैं और जी नहीं सकूँगा। मेरा जीने का अधिकार ही छीन लिया गया है। आज लौटते समय वह मुझे कहता था कि मैंने चोरी में साथ नहीं दिया, तो वह मेरा खून करेगा। उसका कहना है कि मैं शराब बेचूं। मैं यदि आज गया नहीं तो...।

[दृश्य का अन्त, मिल मालिक, मनोहर (नेताजी)।

मालिक : हत्या! गुण्डागर्दी, खून-खराबा खून! तीन महीने से तनख्वाह नहीं। पैसे नहीं। उनके इर्द-गिर्द अनेक समस्याओं की निर्मिति और उनकी परिपूर्ति हेतु अपराधी प्रवृत्ति की स्वीकृति अन्यथा खून और खून। हर एक घर में खून और यह केवल तुम्हारे कारण, तुम्हारी हड़ताल से फैली हुई अराजकता के कारण।

नेताजी : सेठजी हड़ताल मैंने मेरे लिए नहीं की।

मालिक : तो फिर किसके लिए की।? इन मजदूरों के लिए? पर क्यों किया? उनको भूखा रखने के लिए? उनके घर में खून और भुखमरी की बीमारी फैलाने के लिए?

नेताजी : सेठजी, आप ही बीमारी को रोक सकते हैं।

मालिक : कैसे ?

नेताजी : उनकी मांगें स्वीकार कर ।

मालिक : पर मैं मांगें स्वीकार नहीं कर सकता और मजदूरों के घर की भुखमरी नहीं रोक सकता। इसलिए तुम ही हड़ताल वापस ले लो। यही एकमात्र पर्याय है।

नेताजी : नहीं सेठजी, मैनेजर ने भी यही सलाह दी थी। इसलिए आपके पास आया हूँ। सवाल जीने-मरने का नहीं सेठजी, आजादी का है स्वाभिमान का है। हम मजदूर होने हुए, गरीब होते हुए भी पहले मनुष्य हैं। और मानवता—इन्सानियत के, आजादी के अधिकार के लिए हम लड़ेंगे और लड़ते ही रहेंगे।

मालिक : लड़ो-लड़ो-लड़ो। शरीर के रक्त की आखिरी बूँद तक लड़ो।

[नेताजी का मजदूरों के सामने भाषण]

नेताजी : मेरे मजदूर दोस्तो, इधर कुछ दिन पहले हम मिल-मालिक के पास अपनी न्यायोचित मांगों के लिए गये थे। परन्तु अफसोस कि हमारी हर एक मांग के सम्बन्ध में मालिक ने नकारात्मक जवाब दिया। हड़ताल के दिनों में मजदूरों की बस्ती में मालिक ने जो अत्याचार किये, उसमें हमारे अनेक भाई मर गये और अनेक जख्मी हुए। मालिक की इस हरामखोरी का हम निषेध करते हैं। ध्यान में रखिए, इस कारखाने की मशीनें पेट्रोल या बिजली से न चल हमारे पसीने से चलती हैं। वही पसीना आज न्याय की मांग कर रहा है। स्वाभिमान से जीने की आजादी चाहता है और इसी आजादी के लिए हम मरते दम तक लड़ेंगे। आज यह मोर्चा अतीव शांति से मालिक की कोठी तक ले जायेंगे और हमारी मांगों का निवेदन उन्हें प्रस्तुत करेंगे। मजदूर एकता ऽऽ

मनोहर : आप लेखक हैं। आपसे मेरी कोई अपेक्षा नही। कर सकते हैं आप तो एक काम कीजिए। मुझे बताइए, मेरी आजादी कहाँ है ?

लेखक : जानता हूँ।

मनोहर : कहाँ है ?

लेखक : सात समंदर पार।

मनोहर : सात समदर पार ?

लेखक : यह एक समदर, उस पार दूसरा। बाद मे तीसरा, चौथा फिर पाँचवा। छः और सातवें समदर के पार तुम्हारी आजादी है ?

सभी : सात समदर पार—सात समदर पार—सात समंदर पार।

मनोहर : यह क्या ?

१. यह एक प्रचंड जनसमदर है।

२ रंग-बिरंगी मछलियाँ तैरती हैं इस समदर मे।

३. इस समंदर की पैदाइश की तिथि हम नही जानते, पर उसको निर्मित हुए शताब्दियाँ बीत गई है।

४. यह समदर किसी की मिल्कियत नही।

५. मतलब यह किसी की बपौती नही है अथवा इसे किसी ने गिरवी नही रखा है।

१. याने यह सभी ने तैयार किया है, सभी के लिए है और सभी का है।

२. पर इस समदर की मछलियाँ मात्र दो गुटो मे विभाजित की गयी है।

३ पहला गुट श्रमिको का और दूसरा पूंजीपतियो का ।

४. पूंजीपति श्रमिको का खून चूसकर जीते है। श्रमिको को मात्र अन्याय के सिवा और कुछ नही मिलता ।

५. इसलिए यह कहानी है अन्याय मे पली विषम समाज व्यवस्था की ।

लेखक : इस श्वेत-शुभ्र समदर मे तीन काले-कलूटे आदमी खडे हैं। चंद्रमा के समान चमचमानेवाले श्वेत-शुभ्र विशाल भवन के सामने वे गपशप लडा रहे हैं। दिनभर बहाये हुए पसीने के रूप मे उन्हे दो रुपये मिले हैं। उसे वे तनख्वाह कहते हैं। इस तनख्वाह को घर ले जाते-जाते वही रुक गये हैं। तीनो का ध्यान श्वेत-शुभ्र चंद्रमहल और खून उगलनेवाली श्रमिकों की भुग्गी-झोपड़ियो पर गया। एक ओर बहुत भारी सुख-संतोष है तो दूसरी ओर सुख के कोरे सपने देखनेवाले मनुष्य। पानी के बिना तड़फड़ानेवाली मछलियां। विषमतापूर्ण तथा अन्यायी समाज व्यवस्था के समदर की मछलियां। ऐसे इस काले-कलूटे समदर मे इनकी गतिविधियां शुरू होती हैं तब....।

[मनोहर और उसकी पत्नी लीला, दोनो भी अभी-अभी काम से लौटे हैं, रास्ते मे उनकी भेंट होती है।]

लीला : चलिए। रात हो रही है।

मनोहर : कहां ?

लीला : कहां याने ? घर।

मनोहर : घर कहां है हमारा ?

लीला : अरे वाह। घर भूल गये, शराब पी है क्या ?

मनोहर : जिनके खून मे ही नशा होता है, उन्हें शराब की क्या जरूरत ?

लीला : बारह हो रहे हैं। जल्दी जाना चाहिए। वैसे देखा जाए तो बारह—यह हमारा जनरल टाइम है। परन्तु बारह के पहले घर पहुँचना अच्छा है, फिर हम सारी रात घर के बाहर थे ऐसा कोई अभियोग नहीं लगायेगा।

मनोहर : चार दीवारें और एक छत मे बंदी बालिश्त भर जगह को क्या घर कहना चाहिए ? एक पत्नी और चार संतान याने घर है ? चार दीवारें, एक छत, एक दरवाजा और एक खिड़की—याने घर है ? नही, घर न जाना ही अच्छा।

लीला : पर आज हमे उस घर में जाना होगा, क्योंकि उसके अलावा अलग घर हो सकता है, उसकी कल्पना हमे नही।

मनोहर : नही-नही, तुम खुद को फँसा रही हो। दिनभर रिक्षा ढोकर रात को खाली पेट पत्नी के साथ समय गुजारना याने घर-गृहस्थी संभालने योग्य नही होता मैं। तुम महसूस करती हो कि हमारा अपना एक छोटा-सा घर होना चाहिए, धूप, हवा तथा बारिश से सुरक्षा हेतु। तुम्हें मुलायम साड़ी हो और मुझे कपड़े, बच्चे कॉनव्हेंट मे पढ़ें। उन सब को और तुम्हें भी भर-पेट खाने को मिले सुबह, दोपहर और शाम। पर हाऊ इज इट पॉसिबल ? तुम ग्रेज्युएट हुई और मैं भी। दिनभर रिक्षा ढोकर कितने पैसे मिले ? बच्चों को बोलूं, देखो-देखो तुम्हारे बाप ने दिनभर मे एक रुपया कमाया है ? खाली पेट और निराश होकर मैं दर-दर की ठोकरें खाऊं ? भीख माँगू मैं ? बोलो, भीख माँगू मैं ? नही लीला, नही। अब मकान मिलने तक उस दड़बे में, मैं नहीं आऊँगा।

लीला : जीवन मृतप्राय लगता है तो फिर मृत्यु ही अच्छी।

मनोहर : और मृत्यु के बाद हमारे हाथ श्वेत-शुभ्र नही होंगे। उन पर लालिमा चढी होगी। रक्त की लाली। जिसने हमें गुलाम बनाया उसके रक्त की लाली।

लीला : और फिर नयी दुल्हन के हाथ में रची मेंहदी-सी दिखाई देंगी हमारे हाथ पर रक्त की बूँदें। चलिए।
[जाते हैं। दूसरे दिन मनोहर शराब पीकर आ रहा था उसका दोस्त रमेश उसे रोकता है।]

रमेश : मनोहर, तुम शराब पीकर।

मनोहर : हाँ। कोई नया समाचार ? मिल बंद है न ? मिल खुलने वाली नहीं। बिल्कुल नहीं। हम कामगारों में से कोई काम पर नही जाना चाहिए। फिर वह भुखमरी का शिकार क्यों न हो ? परवाह नही।

रमेश : मनोहर होश में तो आओ। बहुत व्यथित करने वाला समाचार है।

मनोहर : नया है क्या ?

रमेश : तुम....: तुम्हारी पत्नी....

मनोहर : रो रही थी न ?

मनोहर : नहीं यार, आत्महत्या की उसने।

मनोहर : आत्महत्या ! माने मृत्यु। गई; मुझे छोड़कर गई, क्या कारण था।

रमेश : आज सुबह सेठजी के कोठे पर बर्तन माँजने गई थी। वहीं पर ब्रेड के टुकड़े चुराने का अभियोग लादा गया और सेठजी

ने उसे कमरे में बंद कर उस पर अन्याय और जबरदस्ती की और उसने वही सेठजी का खून किया। रक्त से लथपथ हाथ लेकर वह घर की ओर भागी तब पुलिस उसका पीछा कर रही थी, पुलिस के घर तक आने के पहले ही उसने जहर खा लिया।

[लीला का प्रेत, उसके इर्द-गिर्द मजदूरों का समूह]

मनोहर : यह देख लीला, कैसी हँस रही है। वह प्रसन्न है। नहीं-नहीं वह निश्चित ही क्रोधित होगी, मैंने शराब पी है इसलिए। पर मैं भी कैसे खाली-खाली हाथों से घर आया। उसके लिए खाने को कुछ भी नहीं लाया। नहीं-नहीं लीला, यह देख मेरी जेब। एक भी पैसा नहीं है जेब में। तुम जानती हो मिल बंद है। हाँ पर जेब की भी कमाई नहीं हुई। वाह ! कितनी सुन्दर लगती हो तुम। एक हाथ में मेंहदी और दूसरे हाथ में रक्त की बूँद। आज सही दुल्हन लगती हो तुम।

[उसका प्रेत उठाया जाता है।]

मनोहर : लीला, तुमने सेठ का खून किया, बहुत अच्छा किया। तुम पर ब्रेड चुराने का अभियोग लगाया था उसने। बेइज्जत करता था, अब आबरू लूटने का प्रयत्न किया था, साला हरामखोर सेठ, हम गरीब हैं, पर बिकाऊ नहीं। हमारा स्वाभिमान अग्नि की ज्वाला-सा है और याद रख उस आग में एक दिन तुम्हें राख हुआ हम देखेंगे। एक दिन ऐसा भी आयेगा सेठजी कि हमारे पसीने से, हमारे रक्त से तुम्हारे सम्वेत तुम्हारे सभी चमचमाने वाले विशाल भवन ढह जायेंगे, जल जायेंगे सेठजी। ऐसा भी एक दिन आयेगा सेठजी।

लेखक : क्यों चीखता है ?

मनोहर : मेरे जीवन की सभी दास्य विवंचना से छुटकारा पाने के लिए चीखना ही एकमात्र रास्ता है। इसलिए, लेखक महोदय, अब मेरे जीवन पर तुम नाटक न लिखो।

लेखक : क्यों ?

मनोहर : क्योंकि तुम लेखक की जाति हरामखोर है।

लेखक : संभव है। पर तुम ऐसा क्यों तमतमा रहे हो ?

मनोहर : कारण, हमारे जीवन को केवल पूँजी रूप में उपयोग किया है तुमने। तुम्हारी कलम हमारे जीवन को सही अर्थ में चित्रित करने वाली कूँची बनी नहीं, वह हमेशा सुन्दर युवती के ओठों पर गर्दन के आसपास घूमती रही। तुम्हारी आँखें बहुत छोटी हैं, वह हमें नहीं देख सकतीं। तुम्हारे उपन्यासों में हमारे जीवन से निर्मित शब्द नहीं हैं। इसलिए तुम्हारी पुस्तकों के पन्ने केवल काले हुए हैं।

लेखक : यह सब मान्य है। पर एक बात बताओ, लेखकों की जाति— इस शब्द का अर्थ क्या है ?

मनोहर : यह शब्द भी तुम्हारा ही है लेखक महोदय, और तुम्हारे किसी भी शब्द का अर्थ हम नहीं जानते। शब्द का निर्माण तुम ही करते हो और अर्थ भी। हम मात्र शब्दों की खोज में चक्कर काटते हैं, भटकते हैं, भागदौड़ करते हैं, दर-दर की ठोकरें खाते हुए। चिल्लाते चीखते हैं, हमारी आजादी कहाँ है।

लेखक : वह सामने साइनबोर्ड दिखता है न ?

मनोहर : हाँ। सेवा-योजना कार्यालय [बेरोजगार कार्यालय]

लेखक : हाँ वही। वह कतार देखो। यही तुम्हें आजादी मिलने की संभावना है।

[कतार]

चपरासी : देखो भाई, हम जानते हैं आप दूर-दूर से यहाँ आये हैं। यह सेवा-योजना कार्यालय है। यहाँ रोटी मिलती है। यहाँ के नियम और कायदे आपको मालूम नहीं? इसलिए हम बताते हैं। सब कोई लाइन में लग जाओ।

१ : लाइन कहाँ है लाइन?

२ : यहाँ है लाइन।

चपरासी : अबे ओ गधे वहाँ काहे घुस रहा है? हाँ। तो यहाँ जाति के मुताबिक लाइन लगती है। हाँ तो वैसे इस देश में करोड़ों जातियाँ है। लेकिन प्रमुख जाति चार है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। पहले ब्राह्मण कौन है? हाँ। यहाँ फिर क्षत्रिय, अब वैश्य और सबसे पीछे शूद्र।

क्लर्क : तुम सभी आजादी का प्रमाण-पत्र साथ लाये हो? जिनके पास आजादी का प्रमाण-पत्र हो, वे ही कतार में खड़े रहे, अन्य बाहर निकलें।

[ब्राह्मण छोड़कर सभी लाइन से अलग]

[एक चौक में मजदूर काम प्राप्ति हेतु प्रतीक्षा में हैं। इतने में ठेकेदार आता है।]

ठेकेदार : हाँ भाई ट्रक पर चलना है। चलते हो भाई? आदमी का तीन रुपया औरत का पाँच रुपया। चलो जल्दी।

एक मजदूर : आदमी का कितना भाव?

ठेकेदार : तीन रुपया।

दूसरा मजदूर : चार देता क्या साब ?

ठेकेदार : तेरे बाप का ठेका है क्या ? हाँ चलना है बहन ?

स्त्री : कितना रुपया दोगे ?

तीसरा मजदूर : साब, आदमी को तो हमेशा जादा दिया जाता है। औरतों को कम।

[मनोहर अस्वस्थ]

स्त्री : देखो ना किस प्रकार जलन होती है भड़वों को, एकाध काम ज्यादा पैसों का मिला कि ऐसे ही करते हैं जैसे इनके बाप का ही काम हो।

एक मजदूर : ओ बहन, बाप-बाप क्यों निकालती हो।

ठेकेदार : यों झगड़ो मत, हाँ क्या बोला रे ? कुछ पढ़ा-लिखा है।

एक मजदूर : हाँ। ग्रेज्युएट।

ठेकेदार : फिर इतना-सा नहीं समझता कि औरतों का जीवन नाज़ुक होता है। उनको ज्यादा मिलना चाहिए, हाँ तो बहन चलना है ?

दोनों : हाँ जी।

ठेकेदार : चलो वो गाड़ी खड़ी है। [जाते हैं]

मनोहर : नहीं। शेवंती, मैना ! ठहरो, जाओ नहीं। गई गाड़ी चली गई। और तुम, मैं, सभी मुँह फाड़कर देखते रह गये, जानते हो, गाड़ी कहाँ गई ?

दूसरा मजदूर : कहाँ ?

मनोहर : वैश्यालय । दिन-दहाड़े, भरी दोपहर में चौक से चार लोगों की उपस्थिति मे दो औरतों की बिक्री हुई । और तुम, सिर्फ देखते रहे । अरे नराधमों अब तो भी चिल्लाओ । रोको उस गाड़ी को....।

[सभी चीखते-पुकारते हैं—बचाओ, रोको-रोको उस गाड़ी को]

[मंच रिक्त है ।]

मनोहर : मै कहाँ हूँ ?

लेखक : तुम एक प्रचंड जनसागर के तीर पर खड़े हो, ऐतिहासिक युग मे । ऐसा कहते है कि यह समंदर भगवान् ने निर्माण किया है । यह मनुष्य भी उसने ही निर्माण किया है ऐसा कहा जाता है । यह युगावली है इस धरातल पर । इस देवता निर्मित समंदर मे अनेक बुराइयाँ भगवान् ने निर्माण कर रखी है । चातुर्वर्ण्य उनमें से एक है । चातुर्वर्ण्य आज भी इस देश में मानवता का खून कर रहा है । जन-सामान्य की आजादी खत्म कर रहा है । तुम्हे ऐसे ही देवता निर्मित राज्य मे ले आया हूँ मैं । देखो, तुम क्या आजादी पा सकते हो इस ऐतिहासिक काल में ।

[राजा, रक्षक और पुरोहित, सामने झुका हुआ शूद्र]

राजा : पुरोहित जी ।

पुरोहित : महाराज ।

राजा : इस शूद्र ने कौन-सा गुनाह किया ?

पुरोहित : महाराज, इसने मनुस्मृति पढी ।

राजा : ऐसा ? मनुस्मृति पढ़ी ? शूद्र तुम जानते हो, भगवान मनु ने क्या कहा है ?

शूद्र : महाराज पेट की खातिर कमाई के लिए दिन-रात भटकता हूँ। मनुस्मृति पढ़ने को समय ही कहाँ मिलता है ?

राजा : पुरोहितजी, कहो इसे भगवान् मनु क्या कहते हैं ?

पुरोहित : सुनो, मनु की जुबानी, मनु की कहानी। ब्राह्मण पैदा हुआ ब्रह्मा के मुख से, क्षत्रिय हुआ बाहों से, जांघ से पैदा हुआ वैश्य। शूद्र पैदा हुआ पैरों से। पैरों से। जय मनुदेव—जय मनुदेव।

राजा : और तुमने मनुस्मृति पढ़ी। हरामखोर। पुरोहितजी इसे सजा कहिए।

पुरोहित : शूद्र को शिक्षाधिकार नहीं। यदि शूद्र ने ऐसा किया तो उसके कानों में गर्म तेल उंडेलना चाहिए अथवा जबान काटना चाहिए अन्यथा कोड़े बरसाना चाहिए।

राजा : कोड़े बरसाओ। पुरोहितजी इसे मनु देवता का प्रसाद दो।

पुरोहित : जैसी आज्ञा महाराज। कोड़े बरसाओ।
[सेवक उसे कोड़े मारता है।]

राजा : पुरोहितजी, इस शूद्र की जबान काटो।

पुरोहित : जैसी आज्ञा महाराज। जबान काट दी।
[शूद्र की जबान काटी जाती है। वह तड़फड़ाता है।]

राजा : पुरोहितजी ! अब यह बोलेगा नहीं। यहाँ जो घटित हुआ, यह कह नहीं सकेगा।

पुरोहित : पर महाराज यह लिख सकेगा।

राजा : ओह ! लेखक है क्या ? फिर इसका अंगूठा तोड़ना बहुत जरूरी है। दिखाओ तुम्हारा अंगूठा। [उसका नकार]

इसका अंगूठा तोडना बहुत जरूरी है। अन्यथा यह इतिहास लिखेगा और बाद में हमारे पवित्र राज्य की बदनामी होगी। जनता हमें ईश्वर समझती है। हम अपने राज्य में किसी भी शूद्र को विद्वान् नही होने देंगे।

[उसका अंगूठा तोड़ा जाता है। इतने में इतिहासकार आता है।]

राजा : आइए, इतिहासकार, देख रहे हो इस शूद्र को, इसके जैसा विद्वान हमारे राज्य में दूसरा नही। इसलिए इसकी जबान काटी है। अंगूठा तोड़ा है। अब इस घटना को, तुम इतिहास के पन्ने पर हम कहते हैं, वैसा ही अंकित करो।

इतिहासकार : बोलिए महाराज। [लिखने लगता है।]

राजा : महाराज यज्ञ को बैठे थे। पर यज्ञ पूरा नहीं हो रहा था। देवी-देवता प्रसन्न नही हो रहे थे। गौमाता से स्त्री-माता तक सभी कुछ समर्पित किया गया। पर यज्ञ सफल नहीं हो रहा था। इसलिए किसी ने महाराज को अवगत कराया कि दूर पर्वत की चोटी पर कोई शूद्र तपश्चर्या कर रहा है। इसलिए यज्ञ पूरा नहीं हो रहा है। यज्ञ की सफलता के लिए और देवी-देवताओं को प्रसन्न करने हेतु महाराज ने धनुष उठाया और तीर शूद्र की दिशा में छोड़ा। [तीर छोडता है और शूद्र लड़खडाता हुआ जमीन पर गिर जाता है।]

यज्ञ सम्पन्न हुआ। सम्पन्न हुआ। आगे ऐसा भी लिखो! शूद्र की यह हत्या नहीं है अपितु वह सदेह स्वर्ग गया है।

[जमीन पर मरा पड़ा शूद्र अकेला, अन्य सभी चले जाते हैं। शूद्र ही मनोहर। मनोहर का घर, वह सोया हुआ है।]

शंकर : मनोहर-मनोहर यार, तुमने कमाल कर दिया। अब तक सोते रहे। यह देखो तुम्हारा पत्र।

मनोहर : [आँखे मलते हुए] सूरज काफी ऊपर आया है। दिखाइए पत्र। शकर यार मेरी अपॉइंटमेंट हुई क्लर्क के पद पर। मुझे नौकरी मिली। कल की गाड़ी से मुझे निकलना है। जाना होगा नौकरी हेतु।

शंकर : जाओ यार, तुम जाओ, भूलना नहीं हमें।

[और शून्यावस्था मे मनोहर गाड़ी में बैठा है। उतरकर कमरे की खोज मे।]

मनोहर : नमस्कार।

घरमालिक : नमस्कार।

मनोहर : कोई कमरा खाली है क्या ?

घरमालिक : हाँ, पर आपकी जाति कौन ?

मनोहर : महार।

घरमालिक : छी: छी:। निकलो बाहर।

[दूसरे घरमालिक के पास]

मनोहर : नमस्कार।

घरमालिक। नमस्कार।

मनोहर : आपके पास कमरा है क्या ? रहने के लिए ?

घरमालिक : आप किस समाज के ?

मनोहर : मराठा।

घरमालिक : नहीं।

[तीसरे घरमालिक की ओर]

मनोहर : नमस्कार।

घरमालिक : नमस्कार।

मनोहर : मुझे रहने के लिए कमरा चाहिए। मैं रेल क्लर्क हूं, इसी गांव में।

घरमालिक : यह सब सही पर पहले ही कह देना अच्छा। यह ब्राह्मणों की बस्ती है।

मनोहर : हर्ज नहीं। मुझे अपना ही समझो।

घरमालिक : फिर आइए तो यह कमरा....
[लाठियां लेकर लोगों का मोर्चा]

१. : पांडे दरवाजा खोलो।

सभी : खोलो पांडे दरवाजा, अबे साले, बस्ती भ्रष्ट करता है क्या?
[कोलाहल]

पांडे : क्या हुआ?

१. : धर्म से बेईमानी करता है साला। बगल के कमरे में कौन रहता है?

पांडे : मेरा किरायेदार।

२. : कौन-से समाज का है?

पांडे : हमारे अपने ही। महाराष्ट्रियन।

३. : झूठ। महार है वह। निकालो बाहर उसे।
[कोलाहल]
—ठहरो, मैं निकालता हूं उसे।
[मनोहर को खींचकर बाहर ले आते हैं।]

४. : साले ढेड़—झूठ बोलता है।
[सभी उसे मारते है। वह बहुत जोर से चिल्लाता है, सभी भाग जाते हैं।]

मनोहर : [धीरे-धीरे, उठते हुए] कहाँ है, कहाँ है मेरी आजादी ? मरते दम तक पीटने पर भी मरता नहीं हूँ मैं। सिर्फ नींद आती है। जाग उठता हूँ तो कहीं कुछ खोया-सा लगता है। मेरी आजादी खोई हुई है। और दूर तक खोजता हूँ सात समंदर के पार। सब-कुछ मिलता है। यहाँ तक कि गुलबकावली का फूल भी। पर मेरी आजादी नहीं मिलती। मैं आज फिर निकला हूँ आजादी की खोज मे।

१. : जिस दुनिया में हमारी आजादी लूटी गई है, हमारे अस्तित्व पर खुले आम बलात्कार किया जाता है, ऐसी नीच दुनिया को बदले बिना जीयेंगे नही हम।

सभी : उसे बदले बिना जीयेंगे नही हम।

अनुवाद : डॉ. माधव सोनटक्के
मत्सोधरी महाविद्यालय
अंबड जि. जालना

सम्पादकों का परिचय

डॉ. कमलाकर गंगावणे

जन्म : मार्च १९४४ पुलंवरी [औरंगाबाद]
मराठवाड़ा, महाराष्ट्र

शिक्षा : एम. ए., बी एड., पीएच. डी.
[मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद]

प्रकाशित ग्रन्थ : कथाकार रांगेय राघव [शोध प्रबंध]

सहयोगी संपादित ग्रंथ : दलित कहानियाँ
[डॉ. रणसुभे के साथ]
"एलोरा समाचार", "गवाह", "महाराष्ट्र मानस" तथा "संचेतना" आदि में लेख....

१. दलित थिएटर [औरंगाबाद] में सक्रिय सहभाग।

२. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्गत आयोजित मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग द्वारा "नाट्य-रंगमंच" संगोष्ठी में आलेख-लेखन एवं संचालन।

प्रा. त्र्यम्बक महाजन

जन्म : नवंबर १९३६, सतारा [औरंगाबाद]
मराठवाड़ा, महाराष्ट्र

शिक्षा : एम. ए., [मराठी] एम. ए. [हिन्दी]
बी. डी. [नाट्यशास्त्र]
मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

प्रकाशित ग्रन्थ : मराठी

नाटक : १. झूलते मनोरे
२. दीपस्तम्भ
३. वासुकाका
४. जावाई बाबू
५. कॅक्टसची सावली

हिन्दी अनुवाद : १. म्यूलॅटो—नीग्रो नाट्य रुपान्तर—हिन्दी
२. लहरीचे राजहंस [हिन्दी से मराठी]
३. रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एकांकी हिन्दी और मराठी

प्रा. त्र्यम्बक महाजन

१. दलित थिएटर, औरंगाबाद के नाट्य मंचन में सक्रिय सहभाग।
२. श्रीराम सेंटर, दिल्ली द्वारा आयोजित नाट्य प्रदर्शन में प्रस्तुत किये गए मराठी नाटक "थांबा। रामराज्य येतय" की निर्मिति।
३. अखिल भारतीय मराठी नाट्य सम्मेलन, अकोला तथा कोल्हापुर में पहली बार दलित नाट्य पर अभिभाषण।
४. नाट्यशास्त्र विभाग, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, में निर्मिति एवं दिग्दर्शन तथा नाट्य, साहित्य एवं रंगमंच का इतिहास—इस विषय का विगत एक तप से अधिक अध्यापन अनुभव....।
५. "अंधायुग" तथा रामगणेश गडकरी जन्म शताब्दी निमित्त महाराष्ट्र के नौ आकाशवाणी केन्द्रों से प्रक्षेपित किये गये "गडकरी दर्शन" का दिग्दर्शन।
६. मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्गत आयोजित नाट्य संगोष्ठी में लोकनाट्य सत्र की अध्यक्षता।
७. "सोनेरी टोपाचा गागा" बाल चलचित्र का संवाद लेखन।